प्रकाशन विभाग

रऊफ चाचा का गदहा

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण : आषाढ़ 1887 (जून 1965)
द्वितीय संस्करण : पौष 1894 (जनवरी 1973)
तृतीय संस्करण : अग्रहायण 1902 (दिसम्बर 1980)
चतुर्थ संस्करण : माघ 1910 (फरवरी 1989)

© प्रकाशन विभाग

मूल्य : 14.00

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार,
पटियाला हाऊस, नई दिल्ली-110 001 द्वारा प्रकाशित ।

विक्रय केन्द्र ● प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110 001
- कामर्स हाउस, करीम भाई रोड, बालार्ड पायर, बम्बई-400 038
- 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700 069
- एल० एल० आडीटोरियम, 736 अन्नासलै, मद्रास-600 002
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800 004
- निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम-695001
- 10 बी, स्टेशन रोड, लखनऊ-226 019
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग,पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500 004

मुद्रक
दी सैण्ट्रल इलैक्ट्रिक प्रेस,
ए-12/1 नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज 1, नई दिल्ली-110 028

भूमिका

हिन्दी में हास्य-रस प्रधान कहानियों का प्रायः अभाव सा-ही है। ऐसी शिष्ट हास्य-पूर्ण रचनाएं—जिनमें विनोद, व्यंग्य और शिक्षा तीनों का समावेश हो, कम ही पढ़ने को मिलती हैं। इसी कमी को पूरा करने के लिए यह संग्रह निकाला गया था। इसमें चुनी हुई 21 सुन्दर सचित्र कहानियां हैं। कुछ कहानियां लोक-कथाओं के रूप में प्रचलित हैं। कहानियों की भाषा सरल और मुहावरेदार रखी गई हैं, ताकि कथोपकथन का रस बना रहे, क्योंकि बोझिल भाषा कथा के सौन्दर्य को कम कर देती है।

इस संग्रह की कुछ कहानियां हमारे बाल-लेखकों द्वारा भी लिखी गई हैं। बच्चों के लिए केवल मनोरंजक साहित्य तैयार करना ही हमारा ध्येय नहीं रहा—अपितु बाल तथा अहिन्दी भाषी लेखकों को प्रोत्साहन देने की भी, हम भरसक चेष्टा करते रहे हैं।

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि बच्चों को यदि कोई बात सरल और दिलचस्प ढंग से सिखाई जाए तो वह जल्दी ही असर करती है। दूसरी बात यह है कि बच्चों और प्रौढ़ों की पढ़ने में रुचि जाग्रत करने के लिए यह बहुत जरूरी है कि हम उन्हें ऐसा साहित्य पढ़ने को दें जो उनकी जानकारी बढ़ाने के अतिरिक्त उनका मनोरंजन भी करे। आशा है कि यह संग्रह अपने इस ध्येय को पूरा करने में सफल होगा।

विषय सूची

रऊफ चाचा का गदहा	नारायण प्रसाद	1
बुढ़िया का दूल्हा	शैलेश मटियानी	3
नाई की शेरवानी	याकूब अली	10
उधार की वसूली	हरीश तिवारी	14
बुवा की बुवाई	राजेश कुमार	21
लाला खींच	बसंतलाल परमार	23
चतुर बुढ़िया	मुबारक अली	26
शिक्षित मूर्ख	गिरिजेश	29
दूध का जला	हंसराज रहबर	34
अरे, मैं लम्बा हो गया !	हरीश तिवारी	38
परभाते भुंजी धाणी	सुन्दरलाल बोहरा	43
बहरा जमाई	रमेशचन्द्र चतुर्वेदी	47
झबरा की मुसीबत	विश्वनाथ मुखर्जी	49
कलमुंही मुंगरी	द्रोणवीर कोहली	56
नींबू-निचोड़	मोतीलाल	61
मुहावरापुरी	रामपाली भाटी	64
लड़की की सगाई	शिवनारायण उपाध्याय	69
मुंशीजी की चालाकी	रमेश अग्रवाल	72
हाय रे, रसगुल्ला !	अखिल नियोगी	74
तीन मोटे	अमृत अग्रवाल	78
जाट का खेत	अनन्त	80
अमुक-संग	शैलेश मटियानी	82
बुरे फंसे	हरीश तिवारी	85
एक से एक बढ़ कर	विपिन दत्ता	90
चोर से मुठभेड़	विद्याधर शुक्ल	93
लेने के देने पड़े	जीवन शुक्ल	98
जती की चरड़ चप्प !	सुन्दरलाल बोहरा	102
कल्लू चाचा जागे	कुन्दनलाल	105
कल्लू चाचा ने सिनेमा देखा	हुस्न जमाल छीपा	110

रऊफ चाचा का गदहा

बहुत दिन की बात है। किसी गांव में एक धोबी रहता था। उसका नाम था रऊफ। लोग उसे रऊफ चाचा कहकर पुकारते थे। उसका एक गदहा था। अल्लाह मियां ने क्या जोड़ी बख्शी थी—दोनों एक आंख के काने। जैसे गांव में लोगों को हंसाने

अपनी बहादुरी के ऐसे किस्से हांकते कि लोगों की आंखें फटी-की-फटी रह जाती थीं।

के लिए ही दोनों ऊपर से टपक पड़े थे। रऊफ चाचा अपने समय के बड़े बहादुर और दिलदार आदमी थे। अपनी बहादुरी के कई किस्से ऐसे हांकते कि लोगों की आंखें फटी-की-फटी रह जाती थीं।

एक रात उनका गदहा कहीं चला गया। रात अन्धेरी थी, तिस पर टिप-टिप बूंदाबांदी। आदमी को आदमी न सूझता था। रऊफ चाचा बड़े परेशान हुए, क्या करें, क्या न करें? सोच-समझ कर घर से एक मोटा-सा डंडा लेकर निकल पड़े।

खोजते-खोजते वह एक बगीचे में पहुंचे। वहां अन्धेरे में उन्हें गदहा घूमता हुआ नजर आया। उन्होंने आव देखा न ताव, चट उस पर चढ़ गए। ठीक तरह से बैठकर बोले—कमबख्त ने मेरी जान ले ली, ठहर तेरी खबर लेता हूं। इतना कहना था कि चौपाये की पीठ पर धड़ाधड़ डडे पड़ने लगे। चौपाया, जो कि असल में एक बाघ था, डंडे की चोट खाकर जंगल की तरफ भागा। रऊफ चाचा उसे डंडे से गांव की ओर हांक रहे थे, लेकिन वह जंगल की तरफ भाग रहा था। चाचा इस हरकत से घबड़ाए कि शायद यह कोई जंगली जानवर है। उन्हें एक उपाय सूझा और वह जब एक वृक्ष के नीचे से गुजर रहा था, तब उन्होंने झपट कर बरोह पकड़ लिया और ऊपर चढ़कर एक खोह में छिप गए।

शिकार के अचानक छिप जाने से बाघ भौचक्का हो गया। वह अभी ऊपर देख ही रहा था कि एक सियार आता दिखाई दिया। सियार को देखकर बाघ बोला—भाई सियार, एक शिकार इसी पेड़ की एक खोह में छिपा है। तुम आगे बढ़कर उसे देखो, उससे हम दोनों की क्षुधा शान्त होगी।

सियार ऊपर जाकर खोह में पूंछ डालकर टोह लेने लगा। तब तक रऊफ चाचा ने उसकी पूंछ पकड़ ली और खींचने लगे। इसी खींचा-तानी में पूंछ उखड़ गई और सियार बेल की तरह धप्प से धरती पर आ गिरा।

सियार शरीर सीधा करके भागता जा रहा था और पीछे-पीछे बाघ पूछ रहा था—भाई शिकार का क्या हुआ? सियार बोला—अरे भाग, वह तेरा शिकार नहीं। वह मौत है—पुंछिया उखाड़।

बला टल जाने पर रऊफ चाचा पेड़ से उतरे और सीधे घर पहुंचे। उनका गदहा भी आ गया था। दूसरे ही दिन वह अपनी बहादुरी का ढोल अपने गले में डाल कर लोगों के सामने पीट रहे थे।

चुहिया का दूल्हा

बहुत पुरानी सतयुग की एक कथा है कि उन दिनों एक पुण्यात्मा चूहा भगवान शंकर की सेवा में रहा करता था। जब-जब भगवान शंकर समाधि में बैठते थे, तब-तब वह चूहा उनके शरीर पर जमने वाली धूल-मिट्टी की तह को कुतर-कुतर कर, झाड़ता रहता था। देवी पार्वती ने तो उस चूहे का नाम शंकरिया ही रख दिया था कि ऐसी अटूट सेवा तो मैं भी नहीं कर पाती हूं।

शंकरिया चूहा निःसंतान था, सो वह यह सोचकर भगवान शंकर की सेवा में ही चित्त लगाए रहता था, कि पूर्व जन्म में ईश्वर भक्ति से विमुख रहा था, तो इस जन्म में सन्तान का मुख देखने का सुख नहीं मिला, मगर इस जन्म में भगवान शंकर की सेवा में चित्त लगाऊंगा तो अगला जन्म सुखी होगा, सन्तान मिलेगी।

यों ही दिन जाते, मास लगते, मास बीतते, वर्ष लगते चले गए और शंकरिया चूहा भगवान शंकर की सेवा करते-करते बूढ़ा हो गया। तब एक दिन पार्वती शंकर भगवान से बोलीं—प्रभो, अपने और दूसरे भक्तों को तो आप बहुत जल्दी-जल्दी वरदान दिया करते हैं, मगर शंकरिया आपकी सेवा करते-करते बूढ़ा हो गया, आपने इसे कभी कुछ नहीं दिया। अब इसके जीवन के अन्तिम दिन ही शेष रह गए हैं और यों ही सेवा करते-करते यदि एक दिन यह मर गया तो आप पर इसकी सेवाओं का ऋण बाकी रह जाएगा।

देवी पार्वती के वचन सुनकर भगवान शंकर सोचने लगे कि सचमुच इस शंकरिया को कुछ वरदान देने का तो मुझे कभी ध्यान ही नहीं आया। मैंने यह तो कभी सोचा ही नहीं कि इसकी भी कोई इच्छा हो सकती है।

तब भगवान शंकर ने अपना वरद हस्त ऊपर उठाया और बोले—शंकरिया रे, तेरी निःस्वार्थ सेवाओं से मैं बहुत प्रसन्न हूं। बोल, क्या वरदान दूं तुझे ?

शंकरिया हर्ष से गद्‌गद हो गया। पूंछ को ऊपर उठाये, सिर को भगवान शंकर के चरणों पर झुकाते हुए बोला—प्रभो, यों तो आपकी सेवा ही मेरे लिए सबसे बड़ा वरदान है, मगर आप मुझ अभागे को वरदान दे रहे हैं, तो ना कैसे करूं ? ···स्वामी, भोग लगाने को आपके यहां मुझे फल-मोदकों की ढेरी मिलती है, मगर मन लगाने को कोई संतान नहीं है। सोचता हूं कि सन्तानहीन ही मर गया, तो नरक में ही ठौर मिलेगी मुझे··· ।

भगवान शंकर मुस्करा उठे—तो तुझे सन्तान चाहिए, शंकरिया?
देवी पार्वती भी हौले-हौले हंसने लगीं—तो सन्तान ही मांग ले, शंकरिया !

**भगवान शंकर बोले—शंकरिया रे,
तेरी निःस्वार्थ सेवाओं से मैं बहुत ही प्रसन्न हूं। बोल, क्या वरदान दूं तुझे?**

शंकरिया एकदम प्रफुल्ल होकर, शीश नवाते हुए बोला—तो प्रभो ! छोटे मुंह बड़ी भीख मांगता हूं आपसे। · · · मुझे माता पार्वती जैसी गुणवती एक कन्या दे दीजिए।

भगवान शंकर बोले—तुझे ऐसी ही गुणवती कन्या मिलेगी, शंकरिया !

भगवान शंकर से वरदान लेकर, शंकरिया हर्ष से बौराया-बौराया अपनी चुहिया के पास दौड़ा गया। वरदान की बात से चुहिया भी बहुत प्रसन्न हुई।

कुछ समय बीतते ही चुहिया ने एक छोटी-सी चुहिया जो जन्म दिया।

शंकरिया ने उसे देखा तो उस छोटी-सी कन्या को पकड़कर क्रोध से कांपता-कांपता भगवान शंकर के पास पहुंचा। चीखकर बोला—झूठी भीख देने को एक शंकरिया ही रह गया था, प्रभो ? जीवन भर आपकी सेवा करने का अच्छा फल मिला मुझको !

इतना कहकर, शंकरिया ने अपनी कन्या को भगवान शंकर के सामने पटक दिया---मैंने माता पार्वती जैसी कन्या मांगी थी, आपने यह छोटी-सी चुहिया ही पकड़ा दी मुझे !

भगवान शंकर हंसते हुए बोले---अरे, बावले शंकरिया! तूने देवी पार्वती जैसी गुणवती कन्या ही तो मांगी थी ? रूप-स्वरूप में भी देवी पार्वती जैसी ही हो, ऐसा तो तूने कहा ही नहीं था? खैर, अब जो होना था, हो गया। गुणों में तेरी यह कन्या देवी पार्वती जैसी ही होगी और अपने पति की खूब सेवा करेगी। इस कन्या का विवाह हम बड़ी धूमधाम से इस कैलाश पर्वत पर ही करेंगे। सारे देवता बाराती होंगे और ···। बात काटकर शंकरिया बोला---प्रभो, कन्या तो जैसी देनी थी, दे ही दी आपने ···मगर, अब इस कन्या के लिए वर मेरी ही पसन्द का होना चाहिए।

भगवान शंकर बोले---ऐसा ही होगा, शंकरिया! बोल, तू किसके साथ अपनी कन्या का विवाह करना चाहेगा ? तू चाहता है, तो हम श्री गणेश के प्यारे मूषक के साथ ही तेरी कन्या का विवाह कर दें ?

मगर शंकरिया नहीं माना। बोला---मैं तो अपनी कन्या का विवाह उसी से करना चाहता हूं, जो सारे ब्रह्मांड में सबसे अधिक शक्तिशाली और योग्य हो।

भगवान शंकर बोले---तो मैं तुझे एक पत्री लिखकर दे देता हूं। तू इस पत्री को लेकर

शंकरिया पत्री को पूंछ में बांध कर सारे ब्रह्मांड का चक्कर लगाने चल पड़ा।

सारे ब्रह्मांड में घूम और जो पसन्द आ जाये, उसी को यह पत्री देकर कहना कि महादेवजी ने, जिसे मैं पसन्द करूं, उसी के साथ मेरी कन्या का विवाह करने का वचन दिया है।

शंकरिया चूहा, शंकर भगवान की दी हुई पत्री को पूंछ में बांधे-बांधे, सारे ब्रह्मांड का चक्कर लगाने के लिये चल पड़ा, कि अब मेरी इच्छा पूरी होगी। आज तक चूहों की वंशपरम्परा में जो कार्य कोई नहीं कर पाया, वह मैं करूंगा। मैं अपनी कन्या का विवाह सारे ब्रह्मांड के स्वामी ब्रह्माजी के साथ ही करूंगा। ···ब्रह्माजी, महादेवजी का वचन टाल तो सकते नहीं!

बड़े-बड़े मनसूबे बांधता, शंकरिया चूहा सीधे ब्रह्मलोक में पहुंचा और ब्रह्माजी को प्रणाम करने के बाद बोला—प्रभो, मैं अपनी कन्या का विवाह सबसे शक्तिशाली और योग्य वर के साथ करना चाहता हूं। ···और भला इस सारी सृष्टि के स्वामी ही जब आप हैं, तो आपसे अधिक योग्य और शक्तिशाली और कौन हो सकता है?

ब्रह्माजी को क्रोध आ गया कि कैसा घमण्डी और मूर्ख चूहा है। शंकरिया को लात मारकर बाहर फेंकना ही चाहते थे कि शंकरिया ने उन्हें महादेवजी की पत्री खोलकर दिखलाई। अब तो ब्रह्माजी बहुत असमंजस में पड़ गये कि महादेवजी का वचन कैसे टालूं? अब इस बुढ़ापे में मुझे चुहिया के साथ विवाह करना पड़ेगा। सारे देवतागण मेरा मजाक उड़ाएंगे। मैं कैसे किसी को अपना मुंह दिखलाऊंगा?

शंकरिया बोला—प्रभो, सोच विचार क्या हो रहा है अब? अब तो आप बारात न्यौतने का प्रबन्ध करें।

तभी हंसते हुए ब्रह्माजी बोले—खैर, बारात न्यौतने का प्रबन्ध तो मुझे करना ही पड़ेगा···। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि इस बुढ़ापे में मुझे एक योग्य कन्या मिल रही है। मगर इतना तुम्हें बता दूं कि मेरी ब्राह्मणी जितनी ही बुढ़िया है, उतनी ही दुष्टा भी है! अपने ही जैसी एक खूंखवार बिल्ली भी उसने पाल रखी है। ···सो तुम्हारी कन्या के लिए यहां ज़रा कष्ट रहेगा। ···खैर, जीवन-मरण तो लगा ही रहता है। स्वयं मुझे ही अब एकाध साल से अधिक बचना नहीं है। ···अच्छा, तुम कैलाश वापस जाकर, बारात की अगवानी की तैयारी करो। मैं बारात लेकर पहुंचता हूं।

मगर शंकरिया अब घबराया कि जीवन-भर भगवान की सेवा करके तो एक कन्या पाई है, उसे भी बूढ़ी सौत, खूंखवार बिल्ली वाले घर में एकदम बूढ़े वर को कैसे सौंप दूं?

बस, शंकरिया चूहा वहां से, सीधा विष्णुलोक को खिसका कि अरे विधाता जी! अभी तो आपसे बढ़ कर कैसे-कैसे जवान और शक्तिशाली वर वहां मौजूद हैं।

विष्णुलोक में पहुंचकर, विष्णु भगवान से भी शंकरिया ने यही कहा कि--प्रभो, मैं आपके साथ अपनी कन्या का विवाह करना चाहता हूं। आपसे अधिक योग्य और शक्तिशाली वर मुझे और कौन मिलेगा ?

उन्हें भी शंकरिया ने महादेवजी की लिखी पत्री दिखाई।

कुछ देर विचार-मग्न रहकर, विष्णु भगवान बोले--शंकरियाजी, जब महादेवजी की आज्ञा है, तो मैं तुम्हारी कन्या के साथ विवाह करने को प्रस्तुत हूं। मगर अपनी कन्या का सुख-दुख तुम्हीं सोच लेना। एक तो मेरी शैय्या पर शेषनागजी का पहरा है और सांप-चूहों के वैर की बात तुम जानते ही हो। दूसरे, मेरे यहां तो किसी बिल में घुसने की भी ठौर नहीं है। चारों ओर समुद्र फैला हुआ है।

—प्रभो, मैं आपके साथ अपनी कन्या का विवाह करना चाहता हूं।
आप से अधिक योग्य और शक्तिशाली वर मुझे और कौन मिलेगा ?

शंकरिया वहां से भी खिसका कि अरे, ऐसी खतरनाक जगह कैसे मैं अपनी कन्या को भेज सकता हूं।

इसके बाद शंकरिया सूरज देवता के पास गया, तो उन्होंने भी यह कह कर उसे चन्द्रमा के पास भेज दिया कि शंकरियाजी, विवाह करने को तो मैं तैयार हूं। मगर एक तो मैं रात-दिन चलता ही रहता हूं, सो तुम्हारी बेटी को सुसराल का सुख क्या मिलेगा? दूसरे, मेरी तपन इतनी तेज है कि वह गर्मी से झुलस-झुलस कर समाप्त हो जायेगी। मेरे भाई चन्द्रमा तुम्हारी कन्या के योग्य वर हैं। उनमें शीतलता भी है और एक पखवारे घर पर ही रहते हैं।

चन्द्रमा के पास शंकरिया गया, तो उन्होंने कहा--शंकरियाजी, मैं तो विवाह करने को तैयार हूं, मगर तुम ज़रा सोच-विचार कर लो। कन्या को कहीं सौंपने से पहले जात-

पांत, ऊंच-नीच देख लेना पिता का धर्म होता है। मेरे माथे पर तो वैसे ही कलंक का टीका लगा हुआ है, सो तुम्हारी कन्या भी सदैव कलंकिनी ही कहलाएगी। आगे जो तुम्हारी इच्छा।...

शंकरिया वहां से भी खिसका, बादल के पास आया। बादल ने यह कहकर टाला कि मुझ से भी अधिक शक्तिशाली तो पवन है। पवन के एक ही थपेड़े से मेरा सारा अस्थि-पिंजर ही टूट जाता है।

शंकरिया चूहा वहां से पवन के पास दौड़ा, तो पवन बोले--शंकरियाजी, मुझ से भी शक्तिशाली तो पर्वत हैं, मैं पूरी शक्ति लगाकर भी उनको ज़रा-सा हिला तक नहीं सकता। दूसरे, पर्वत सच्चे सद्गृहस्थ भी हैं, एक ही ठौर रहते हैं। मैं तो ठहरा आवारा! ठौर-ठौर, भटकता रहता हूं, फिर मेरी चंचलता तो जगत प्रसिद्ध है।

तब शंकरिया दौड़ा-दौड़ा पर्वतराज के पास गया और बोला—हे पर्वतराज, इस पृथ्वी पर आपसे अधिक शक्तिशाली और सद्गृहस्थ दूसरा कोई नहीं है सो मैं अपनी कन्या का विवाह आपसे ही करना चाहता हूं। सारे ब्रह्माण्ड का चक्कर काट आया हूं, मगर मुझे अभी तक आप जैसा योग्य वर नहीं मिल सका।

शीश नवाकर बोला—प्रभो, सारे ब्रह्मांड का चक्कर काट आया हूं, मगर अब मैं अपनी कन्या का विवाह भी गणेशजी के मूषक के साथ ही करना चाहता हूं।

वास्तव में शंकरिया अब चक्कर काटते-काटते थक चुका था और चाहता था कि कहीं जल्दी से कन्या के विवाह का मामला निबट जाए, तो जरा सुख की सांस ले।

पर्वतराज बोले—मुझे तो महादेवजी, की आज्ञा शिरोधार्य है, शंकरियाजी! मगर, मुझ से भी शक्तिशाली तो चूहा ही होता है जो कुतर-कुतर कर, मुझे भी एकदम खोखला बना सकता है, मगर मैं उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मेरी बात मानिये, शंकरियाजी! आपको इस सारे ब्रह्मांड में चूहे से ज्यादा योग्य और शक्तिशाली वर कन्या के लिए और कोई नहीं मिलेगा।

और तब शंकरिया भगवान शंकर के पास ही लौट आया। शीश नवाकर बोला—प्रभो, सारे ब्रह्मांड का चक्कर काट आया हूं, मगर अब मैं अपनी कन्या का विवाह श्री गणेश जी के मूषक के साथ ही करना चाहता हूं। और उसी दिन बड़ी धूमधाम से शंकरिया की कन्या का विवाह श्री गणेशजी के मूषक के साथ सम्पन्न हो गया। उस दिन से अब तक चूहे अपनी बिरादरी से बाहर अपनी कन्याओं का विवाह नहीं करते हैं।

नाई की शेरवानी

कल्लूबेग जी डाक महकमे में मुलाजिम थे। सन् 1943 में उनकी पेंशन हुई। उस जमाने में वेतन अधिक न होने के कारण उनको केवल 9 रु० मासिक पेंशन मिलती थी। आय का दूसरा और कोई आधार न होने के कारण गुजर-बसर में बड़ी कठिनाई होती थी। कुटुम्ब में वह स्वयं, उनकी पत्नी, एक पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्री की आयु अभी 11 वर्ष की थी, परन्तु पुत्र की आयु 22 वर्ष की हो चुकी थी। पुत्र का नाम था रहमतबेग। पुत्र की अवस्था 22 वर्ष की हो जाने से कल्लूबेग को उसकी शादी की चिन्ता लगी हुई थी। आमदनी कम थी, परन्तु कल्लूबेग ने अपनी बाहरी शान ऐसी बना रखी थी कि उनके चेहरे से कभी गरीबी नहीं टपकती थी। उन्होंने पड़ोस के गांव की एक लड़की से रहमतबेग की शादी तय की और धीरे-धीरे सामान की तैयारी में लगे। कुछ तो उनके पास पुराना जेवर-कपड़ा था और कुछ उन्होंने नया भी तैयार करवाया।

एक दिन की बात है कि कल्लूबेग हजामत बनवा रहे थे। हजामत बनाने वाला नाई उनका खानदानी हज्जाम था, जो वर्षों से उनके यहां आता-जाता था। हजामत बनाते समय नाई कभी-कभी घर की दुख-सुख की बातें भी कर लिया करता था। हजामत के दौरान नाई ने कल्लूबेग से पूछा—कहिए, साहबजादे की शादी कब हो रही है?

कल्लूबेग ने उत्तर दिया—जल्द करने का इरादा है। सामान की तैयारी चल रही है।

नाई ने बात जारी रखते हुए कहा—सामान की तैयारी तो एक मुद्दत से चल रही है, अभी कोई कमी रह गई है क्या?

कल्लूबेग ने हजामत में गरदन झुकाए हुए उत्तर दिया—हां, लड़के की शेरवानी बनवानी है। जरा हाथ तंग है, कुछ रकम आ जाए, तो बनवा लूं।

नाई ने बड़ी सरलता से यह कहकर हजामत खत्म कर दी—इसका जिम्मा मेरे सिर रहा, आप नाहक पैसा क्यों खरचते हैं? बचेगा तो कहीं और काम आ जाएगा। आखिरकार, जरी की शेरवानी बाद में तो कोई पहनता नहीं!

दूसरे दिन सुबह नाई कागज की तह में लिपटी हुई शेरवानी लेकर कल्लूबेग के घर आया और कहा—लो अभी तो अपना काम चलाओ, आइंदा खुदा हाफिज है।

—इसका जिम्मा मेरे सिर पर रहा, आप नाहक पैसा क्यों खरचते हैं?

शेरवानी पुराने किस्म के गुलाबी रंग के कपड़े की थी। उस पर धूप-छांव के बड़े-बड़े हरे रंग के बूटे चमक रहे थे। शेरवानी थी तो पुरानी, परन्तु धुली हुई और इस्तरी की हुई होने से शादी में पहनने के काबिल थी। उसी चाँद की 7 तारीख को बुधवार के दिन बारात गांव से रवाना हुई। नाई भी बारात में शामिल था। दूल्हा के शरीर पर उसकी शेरवानी चमक रही थी और नाई अभिमान से फूल रहा था। बारात, गांव से कोई आठ मील दूरी पर जाकर रास्ते में ठहरी। एक मनचले ने बारातियों से पूछा—अरे, सब बाराती ही बाराती हो कि कोई दूल्हा भी है?

नाई ने उंगली का इशारा करके कहा—वह सामने देखो, मेरी गुलाबी शेरवानी पहन कर दूल्हा मियां बैठे हैं।

नाई की इस हरकत से कल्लूबेग सख्त नाराज हुए और उन्होंने नाई को एक तरफ बुलाकर कहा—खलीफाजी, आपने बारातियों के सामने शेरवानी अपनी बता दी। आपको मेरी इज्जत का कोई ख्याल नहीं है?

नाई ने अपना कान पकड़कर कल्लूबेग से माफी मांग ली। बारात आगे बढ़ी। थोड़ी दूर पर फिर ऐसा ही मौका आया। एक राहगीर पूछ बैठा—क्यों जी, बारात में दूल्हा कौन है?

नाई चट से बोल पड़ा—देखो, वह हरे बूटे की गुलाबी शेरवानी पहने बैठा है, वही दूल्हा है और वह शेरवानी मेरी नहीं है, बल्कि उसी की है।

कल्लूबेग को काटो तो खून नहीं। दिल में कहने लगे—नाई की शेरवानी लेकर बड़ी गलती की। उन्होंने एक बार फिर नाई को समझाया। नाई ने उत्तर दिया—मैंने तो इस बार साफ कहा कि शेरवानी मेरी नहीं है, बल्कि दूल्हा मियां की खुद की है?

कल्लूबेग ने कहा–आपको ऐसा भी नहीं कहना चाहिए। शेरवानी किसकी है, इसके बारे में कुछ मत कहिए।

नाई ने तोबा कर ली और कहा—अब मैं, शेरवानी किसकी है, इसके बारे में कुछ भी नहीं कहूंगा।

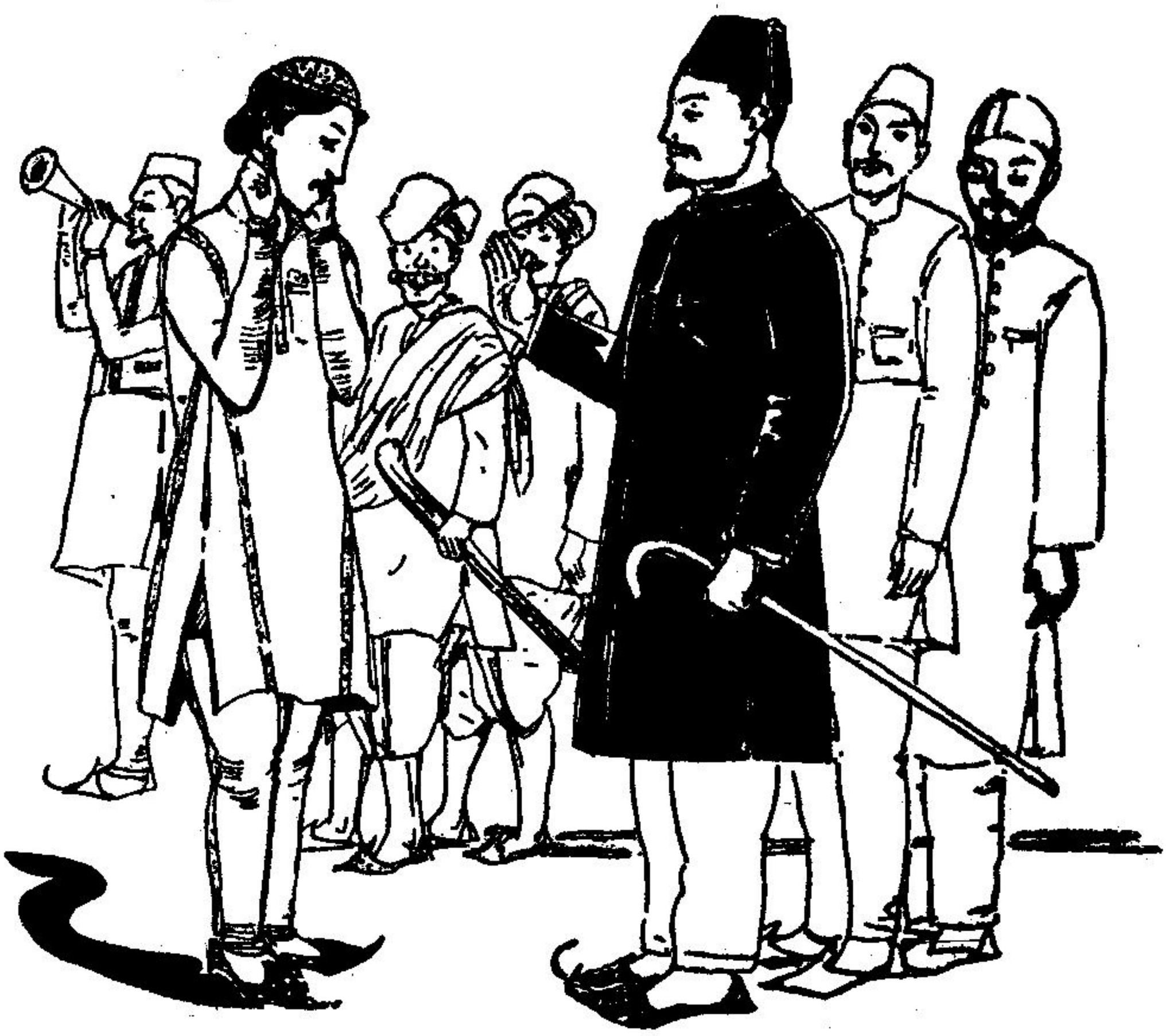

नाई ने म्रपना काम पकड़कर कल्लूबेग से माफी मांग ली।

गांव के करीब बारात पहुँची ही थी कि गांव के कुछ किसान खेतों पर जाते हुए रास्ते में ठहर गए और मजाकी लहजे में एक साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए बाराती को देखकर बोले—कहो जी ! दूल्हा मियां यही हैं क्या ?

नाई फौरन आगे बढ़ा और बोला—दूल्हा यह नहीं है, बल्कि हरे बूटे की गुलाबी शेरवानी पहने हुए वह लड़का दूल्हा है। उसने जो शेरवानी पहन रखी है, वह किसकी है, इस बारे में मैं कुछ नहीं कहूंगा।

कल्लूबेग को नाई पर गुस्सा तो जरूर आया, परन्तु उन्होंने अब नाई को अधिक छेड़ना उचित नहीं समझा और खामोश हो गए। वह समझ गए, आदमी आदत से मजबूर होता है। उन्हें रह-रहकर पछतावा हो रहा था कि नाहक ही नाई की शेरवानी ली।

उधार की वसूली

कज्जन बाबू की आदत थी, जिस शहर से वे एक बार जाते, फिर दुबारा लौटकर पैर नहीं धरते। इसका कारण था, उनका उधार-खाऊ स्वभाव। पान वाले से लेकर हलवाई तक, नाई से लेकर धोबी तक, सबको उनकी उधार-खाऊ आदत का शिकार बनना पड़ता और फलां दिन, फलां तारीख को उधार लौटाने का वायदा कर वे शहर से तिड़ी हो जाते। लोग उनकी इस चालाकी पर सिर पीटकर रह जाते।

मजे की बात यह थी कि उनके बोलने का ढंग इतना मीठा था कि "उधार प्रेम की कैंची है" चमचमाता साइनबोर्ड लगानेवाला हलवाई भी उनकी लच्छेदार बातों में इस तरह फंस जाता कि समझता उधार नहीं, बल्कि उधार न देना प्रेम की कैंची है। और जब खूब डटकर कज्जन बाबू दूध-जलेबी उड़ाकर जाने लगते, तो वह कहने के लिए मजबूर हो जाता—अरे बाबूजी, आप ही की दुकान है, पैसे की कौन-सी बात, आज नहीं तो कल मिल ही जाएंगे।

एक लम्बी-सी डकार लेकर कज्जन बाबू अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए बड़े दार्शनिक भाव से कहते—भैया, दुनिया में पैसा ही सब कुछ नहीं होता। आज मेरे पास है तो कल तुम्हारे पास। फिर भी ज़रा-ज़रा-सी लेन-देन में न जाने क्यों लोग सिर-फुटौवल पर उतारू रहते हैं, समझ में नहीं आता। फिर सामने रखे रबड़ी के थाल को ललचाई आंखों से देखते हुए कहते—अमां, महक तो बड़ी प्यारी लग रही है, चलते-चलते चख जाऊं एक-आध छटांक ..... और ज़रा कापी भी दे देना हिसाब लिखने की .....।

जब हलवाई एक की जगह दो छटांक रबड़ी तोलकर उनके हाथों में थमा देता और फिर हिसाब लिखने की कापी आगे बढ़ाता, तो वे कहते—अमां, इस महीने पूरे बीस रुपये हो गए। खैर, पहली की शाम को सब हिसाब निबटा दूंगा.....तब तक बीस के तीस रुपये हो ही जाएंगे।

पहली तारीख भी आती, बीस के तीस भी हो जाते, पर कज्जन बाबू नहीं आते। हलवाई से पनवाड़ी तक, सब उनके दर्शनों के लिए सिर पीटकर रह जाते और जब तक उधार वसूलने वालों की फौज उनका मकान घेरती, तब तक वे किसी दूसरे शहर में पहुंच जाते।

उधार खाने में कज्जन बाबू की बदनामी चारों तरफ फैल गई। कभी-कभी जब यह अफवाह फैल जाती कि कज्जन बाबू फलां शहर में पहुंच गए, तो शहर का हर हलवाई सावधान हो जाता।

—अमां महक तो बड़ी प्यारी लग रही है, चलते-चलते चख जाऊं एक-आध छटांक।

मछली मोहल्ला की गली में लल्लन हलवाई की दुकान पर दो-चार लोग कज्जन बाबू पर बहस कर रहे थे। लल्लन हलवाई बड़ी गौर से उनकी बातें सुन रहा था। क्योंकि अभी-अभी बाबू बनवारी लाल लल्लन से कह गए थे—कज्जन बाबू रबड़ी का नम्बर एक शौकीन है। देख लेना, किसी-न-किसी दिन सूंघता हुआ जरूर आ पहुंचेगा यहां! इसलिए लल्लन बेचारा बहुत घबड़ाया हुआ था।

—सुनते हैं उसकी जेब में एक सुंघनी का डिब्बा रहता है—एक व्यक्ति ने कहना शुरू किया—जिसे वह चुपके से हलवाई की नाक की ओर उड़ा देता है, जिससे ठगा-सा हलवाई उसके कहने पर, जो मिठाई वह चाहे, तोलता जाता है और जितना चाहे, उधार देता जाता है। लल्लन हलवाई चुप न रह सका। अपनी लम्बी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ बोला—अजी बाबूजी, मेरे पल्ले नहीं पड़ा वह दुष्ट उधार-खाऊ। सच कहता हूं, अगर एक बार भी बच्चू फंस गए, तो आज तक बेटे ने जितने हलवाइयों का दूध पिया है, एक साथ ही भुला दूंगा।

—लालाजी, कहते तो ठीक हो—हां-में-हां मिलाता हुआ एक आदमी बोला—कज्जन चाहे दुनिया भर को बेवकूफ बना दे, पर तुमको हर्गिज नहीं बना सकता। तुम्हारी दाढ़ी देखकर तो दुकान में घुसते ही उसकी छकड़ी गुम हो जाएगी, उधार माल उड़ाना तो दूर की बात रही।

लल्लन हलवाई की एक कमजोरी थी। अगर जरा भी कोई उसकी लम्बी दाढ़ी की तारीफ उसके सामने कर दे, तो वह फूला न समाता। अतः वह अपनी दाढ़ी की प्रशंसा सुन बड़े गर्व से उस पर हाथ फिराता हुआ बोला—अरे बाबूजी, इसी दाढ़ी के बल पर तो आज तक मैंने कैसे-कैसे उधार-खाऊओं से पैसा वसूल लिया। सच कहता हूं, कज्जन बाबू एक बार इधर फटक भर जाएं, तब देखना मेरी दाढ़ी का कमाल।

अपनी लम्बी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ हलवाई बोला—अजी बाबूजी, मेरे पल्ले नहीं पड़ा वह दुष्ट उधार-खाऊ।

—अमां, कहते तो ठीक हो—वही व्यक्ति बोला—सचमुच, तुम्हारे जैसा हलवाई सारे हिन्दुस्तान में नहीं मिलेगा। जब मैं दिल्ली में था, तब तुम्हारी रबड़ी की तारीफ एक आदमी के मुख से सुनी थी, सो यहां चला आया।.....

दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ, पुलकित होता हुआ लल्लन बोला—बाबू, यकीन तो मेरी बात का रबड़ी खाकर ही करोगे—फिर कुछ सोचता हुआ बोला—वैसे अपने मुंह मियां

मिट्ठू बनना मुझे पसन्द नहीं, पर जैसी असली रबड़ी मेरे यहां घुटती है, वैसी आपको दुनिया के किसी कोने में नहीं मिलेगी।

—अमां वाह, उछलता हुआ वह आदमी बोला—मुझे तो ऐसे आदमी की जरूरत ही थी, जो आला दर्जे की रबड़ी घोट सके।

—मैं आपका मतलब नहीं समझा—लल्लन उत्सुकतापूर्वक बोला।

—समझाता हूं, पहले छटांक भर रबड़ी तो इधर बढ़ाना—वह बोला—पहले ज़रा चखकर तो देख लूं, तब आगे बात बढ़ाऊंगा।

लल्लन ने फौरन छटांक भर रबड़ी उसके आगे धर दी। रबड़ी मुंह में रखते ही वह उछल पड़ा और जीभ से चटखारें मारता हुआ बोला—वाह-वाह, वाकई मैंने आज तक ऐसी रबड़ी नहीं चखी थी। वाह-वाह, अब समझ लो तुम्हारा नाम अखबारों के जरिए हिन्दुस्तान के एक-एक कोने, एक-एक गली में फैल जाएगा।

—वह कैसे ?—मारे खुशी के लल्लन हलवाई ने पाव भर रबड़ी का कुल्हड़ उसके सामने रखते हुए पूछा।

—अमां मैं अखबारनवीस हूं, समझ, अंग्रेजी में चाहो तो 'प्रेस रिपोर्टर' कह सकते हो मुझे। चाहूं तो तुम्हारी फोटो सारी दुनिया में घुमा दूं। ऐसा प्रोपेगण्डा करूं कि तुम्हारी रबड़ी अमरीका के लोग तक खरीदने लगें—रबड़ी का कुल्हड़ मुंह में लगाते हुए वह बोला।

—क्या कहा ? अखबारनवीस ! —लल्लन हलवाई मारे खुशी के चीखता हुआ बोला —क्या मेरा फोटू अखबारों में निकल सकता है ?

—सकता नहीं, निकलेगा। —चटखारे मारता हुआ वह बोला—पेठा ताजा है क्या ? पेठा निकालने के लिए उठता हुआ लल्लन उत्सुकता से बोला—बिल्कुल ताजा है, बाबूजी ..... हां तो.....

—ख्रुश्चेव आनेवाला है अबकी। पेठे का समुचा टुकड़ा निगलता हुआ वह बोला।

—कुरुक्षेत्र होनेवाला है ?—लल्लन दालमोठ की प्लेट आगे खिसकाता हुआ आश्चर्य भरे स्वर में बोला—तो क्या फिर लड़ाई छिड़ने वाली है बाबूजी ?.....

—अरे कुरुक्षेत्र नहीं, ख्रुश्चेव—रूस का प्राइम-मिनिस्टर, जैसे भारत के पंडित जवाहर लाल नेहरू हैं, समझे ! दालमोठ पर हाथ साफ करता हुआ बोला—अब की उसकी एक बहुत बड़ी दावत होने वाली है नेहरू जी के यहां, सो तुम्हारे यहां की रबड़ी खरीदी जाएगी। मैं अखबारों में निकाल दूंगा तुम्हारी रबड़ी की तारीफ। बस फिर देखो हवाई जहाज से तुम्हारी रबड़ी दिल्ली जाएगी और तुम्हारा नाम हिन्दुस्तान में ही नहीं, रूस, में भी फैल जाएगा ..... यह दालमोठ कब बनी है ?

—अजी बाबूजी—लल्लन हलवाई की दोनों आंखें बाहर निकलने को हो गईं—यह मूंग का लड्डू बिल्कुल ताजा है जरा चखकर तो देखिए, फिर दालमीठ लीजिएगा।

—अमां चखता हूं, ज़रा आधा सेर दूध तो बनाना—वह बोला, फिर लल्लन की तरफ देखता हुआ कहने लगा—अब एक काम करना, कल दोपहर को ज़रा अच्छे कपड़े पहनकर दुकान पर बैठे रहना। मैं तुम्हारी फोटू लूंगा अखबारों में छपाने के लिए। ज़रा दाढ़ी-वाढ़ी ठीक से बना कर रखना, समझे ?

—अजी बाबूजी—कढ़ाहे से दूध निकालता हुआ लल्लन बोला—कल मैं फोटू खिंचाने के लिए सुबह से ही तैयार हो जाऊंगा।—फिर दूध का कुल्हड़ सामने रखता हुआ बोला—दाढ़ी में तो मेरा फोटू सचमुच ऐसा निकलेगा कि देखने वाला देखता रह जाए।......

—तो ठीक है—दूध का कुल्हड़ मुख से लगाता हुआ वह बोला—अच्छा पैसे बताओ, कितने हुए, ? पर याद रखना, कल जब मैं आऊं तो बिल्कुल तैयार मिलना।

—अजी बाबूजी मैं सुबह से ही तैयार रहूंगा—लल्लन खुश होता हुआ बोला—पैसों की क्या बात है बाबूजी, वैसे पांच रुपये बारह आने का माल था। कल तो आएंगे ही फोटू उतारने, सो पैसे कहीं भागे थोडे ही जा रहे हैं।

—वैसे पैसे मैं किसी के ऊपर नहीं रखता—वह बोला—खैर अब कल आऊंगा ही—फिर हाथ जोड़कर बोला—अच्छा, अब चलता हूं।

—नमस्ते बाबूजी—लल्लन आधा उठते हुए बोला—

—नमस्ते—तेजी से वह आगे बढ़ गया।

दूसरे दिन नहा-धोकर लल्लन हलवाई ने दाढ़ी में कंघा फेरा। अपनी बीस दिन में एक दिन धुलनेवाली धोती, जिसका रंग काला पड़ गया था, उतारकर नई सफेद धोती पहन ली, फिर गाढ़े का सफेद कुर्ता और सिर पर गुलाबी पगड़ी बांधे वह सज-धज कर दुकान पर बैठ गया। उसे इस तरह सजा-बजा देखकर लोगों को आश्चर्य हो रहा था कि बीस साल से एक ही पोशाक में रहने वाले लल्लन हलवाई ने आखिर अचानक आज सांप की तरह केंचुली क्यों बदल ली ?

दोपहर हो गई, पर फोटो लेनेवाला आदमी न आया। लल्लन मन-ही-मन आस लगाए रहा कि अब आता होगा, पर सुबह से शाम हो गई। अब लल्लन समझ गया, जरूर वह कोई चार सौ बीस था, जो मुफ्त में तर माल उड़ाकर उसे झांसे में डाल गया। एक-दो को जब उसने यह बात बताई, तो लल्लन का मजाक उड़ाते हुए वे बोले—वह जरूर कज्जन बाबू होंगे....... ।

वाकई में लल्लन को समझते देर न लगी कि जरूर वह कज्जन बाबू थ, जो बिना उस्तर के सिर मूंड कर रफूचक्कर हो गए। दु:ख और क्रोध के मारे उस दिन लल्लन हलवाई से दुकान पर बिल्कुल न बैठा गया।

कज्जन बाबू लल्लन को झांसा तो दे आए, पर उसके यहां की रबड़ी की मिठास न भूल सके। अब वे इसी चिन्ता में रहने लगे कि कैसे एक बार फिर रबड़ी का मजा लिया जाए।

उधार की वसूली

—अजी बाबूजी, मरेंगे मेरे दुश्मन, अभी तो मेरा बाप ही मरा है।

वाकई में रबड़ी की खुशबू अभी तक उनकी नाक में बसी हुई थी । दो-तीन महीनों बाद एक दिन छिपते-दुबकते उन्होंने दूर से लल्लन हलवाई की दुकान पर नजर डाली, तो देखा, उसकी दुकान पर कोई दूसरा ही बैठा था । पहले तो उन्होंने सोचा कि लल्लन कहीं गया होगा, पर लगातार दो-तीन दिन तक जब लल्लन न दिखाई दिया तो हिम्मत करके वे आगे बढ़े । नजदीक से देखा तो लल्लन की जगह एक घुटी चांदवाला आदमी बैठा आग पर रखे कढ़ाव में करछुल घुमा रहा था, अतः बेफिक्र होकर कज्जन बाबू दुकान में घुस गए ।

—जै रामजी की लाला जी—कज्जन बाबू बड़ी विनम्रता से दोनों हाथ जोड़कर बेंच पर बैठ गए ।

—जै रामजी की—बिना उनकी ओर देखे, सिर नीचे झुकाए, रबड़ी घोटते हुए, हलवाई ने जवाब दिया । बैठे-बैठे कज्जन बाबू ने सोचा, शायद लल्लन हलवाई इस दुनिया से कूच कर गया । क्योंकि सिर-घुटा आदमी उसका बेटा जैसा दिखाई दे रहा था । यह बात सोचते ही वे अपने भीतर की उमड़ती खुशी को न रोक सके, अतः फौरन ही बोले—क्यों भाई, लल्लन हलवाई मर गए क्या ?

उनका यह कहना था कि रबड़ी घोटता हुआ वह आदमी मेंढक की तरह उछल पड़ा। इससे पहले कि कज्जन बाबू कुछ संभलते, लपककर उसने कज्जन बाबू की गर्दन पकड़ ली और बोला—अजी बाबूजी, मरेंगे मेरे दुश्मन, अभी तो मेरा बाप ही मरा है।

कज्जन बाबू की ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। देखा, वाकई में वह लल्लन हलवाई था, जो दाढ़ी और सिर घुटवा कर उनकी पहचान में न आ सका।

हंसता हुआ लल्लन कह रहा था—देखी मेरी दाढ़ी की करामात?—फिर नौकर को आवाज देकर क्रोधपूर्ण स्वर में बोला—अबे घसीटा, ज़रा लाना तो मेरा तेल पिलाया हुआ डंडा। पूरे पांच रुपये बारह आने वसूलने हैं।

उसके बाद कज्जन बाबू के साथ क्या गुजरी इसकी कल्पना पाठक खुद कर लें।

खुदा की खुदाई

किसी गांव में एक जाट और एक मुल्ला के घर पास-पास थे। सामने बने चबूतरे पर बैठ कर वे दोनों प्रायः बातें किया करते थे। एक दिन मुल्लाजी अपनी लम्बी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए घर से निकले और चबूतरे पर पड़ी चारपाई पर बैठते हुए बोले—या खुदा, तेरी खुदाई को कोई नहीं जानता।

जाट पहले से ही मुल्ला की प्रतीक्षा में बैठा हुक्का पी रहा था, तपाक से बोला—हम जानते हैं, हम।

जाट हंसता हुआ बोला—यदि आपको मेरी बात पर विश्वास न हो, तो परीक्षा लेकर देख लीजिए। मैंने जो कहा है, वह सत्य ही कहा है। अगर मैं आपकी बात का उत्तर न दे सकूं, तो आपके कहने के अनुसार दंड भरने को तैयार हूं।

इसके उपरान्त दोनों ने तय किया कि मुल्ला की बात का ठीक उत्तर मिल गया तो जाट को सौ रुपये पुरस्कार मिलेंगे नहीं तो जाट को सौ रुपये दंड देने होंगे।

जाट की इतनी दृढ़ता देखकर मुल्ला की उत्सुकता बढ़ने लगी और वह जाट से शीघ्र ही खुदा की खुदाई बताने के लिए कहने लगा। जाट बोला—नहीं मुल्लाजी, यह बात आपको यहां नहीं बताई जा सकती। यदि आपको खुदा की खुदाई देखनी है तो मेरे साथ अकबर बादशाह के दरबार में चलना होगा।

जाट की बात पर मुल्ला राजी हो गया और उन दोनों ने आगरा की तरफ प्रस्थान किया। अकबर बादशाह के दरबार में पहुंचकर मुल्ला ने सारा हाल कह सुनाया। बादशाह को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने जाट से पूछा—क्या तुम खुदा की खुदाई को बता सकते हो?

जाट ने उत्तर दिया—हुजूर, मैं बता ही नहीं सकता, बल्कि दिखा भी सकता हूं, परन्तु इसके लिए आपको थोड़ा कष्ट करना पड़ेगा।

बादशाह ने पूछा—वह क्या?

—जहांपनाह, इसको जानने के लिए आपको यमुना के किनारे चलना होगा।

जाट ने बादशाह से पूछा—तो आप पहले यह बताइए कि इसको खुदाने वाला कौन था ?

बादशाह ने जाट की बात को मंजूर कर अपना हाथी सजवाया और जाट और मुल्ला को साथ लेकर लाव-लश्कर के साथ वह यमुना के किनारे पहुंच गया । वहां जाकर उसने जाट से कहा—अब तुम जल्दी से खुदा की खुदाई बताओ ।

जाट ने यमुना की ओर इशारा करके पूछा—हुजूर, क्या यह आपन खुदाई थी ?

बादशाह ने कहा—नहीं ।

—तो क्या फिर यह आपके दादा ने खुदाई थी ?

बादशाह ने कहा—नहीं ।

जाट ने बादशाह से पूछा—तो आप पहले यह बताइए कि इसको खुदाने वाला कौन था ?

बादशाह ने उत्तर दिया—खुदा ।

जाट चट बोल उठा—हुजूर, मैं भी यही कहता हूं, कि यह खुदा की खुदाई है ।

जाट की बात को सुनकर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने तुरन्त वायदे के अनुसार मुल्ला से जाट को सौ रुपये दिलवा दिए ।

लाला खींच

मोहनदास पटेल अपने ससुर के घर जा रहे थे। रास्ते में उनका एक मित्र लाला नाई मिल गया। पटेल ने उसको भी आग्रह करके साथ ले लिया। दोनों दोस्त चलते-चलते शाम को ससुराल में पहुंचे। मोहनदास के ससुर ने दोनों का अच्छा स्वागत किया।

जब रात को खाने के लिए बैठे तो मोहनदास केवल दो-चार कौर खाकर हाथ धोने लगे, शिष्टाचार के अनुसार सेर-डेढ़ सेर अन्न की भूख वाले नाई को भी उसके साथ ही हाथ धोने पड़े।

इसके बाद दोनों चौबारे पर जाकर सो गए।

जब आधी रात हुई तो नाई के पेट में चूहे दौड़ने लगे।

मोहनदास को उठाकर वह कहने लगा—भाई, मुझे तो बहुत भूख लगी है। कुछ खाने को दिलवाओ।

मोहनदास ने कहा—थोड़ी देर धीरज धरो, सवेरा होने दो, खाना जरूर ही मिल जाएगा। अब तो आराम से सोते रहो।

मोहनदास के उपदेश का लाला नाई पर कुछ असर न हुआ। वह भूख सहन न कर सका।

वह रसोईघर के छप्पर में छेद करके मोहनदास से कहने लगा—लो, तुम अब मुझे नीचे लटका दो और जब मैं 'खींचो' बोलूं तब मुझे ऊपर खींच लेना।

मोहनदास को भी भूख लगी थी, वह भी उसकी बात मान गए।

जब लाला नाई खूब खा-पी चुका, तो मोहनदास से बोला—खींचो। मोहनदास ने झट उस ऊपर खींच लिया।

मोहनदास को भी यह तरकीब अच्छी लगी। थोड़ी देर सोचकर वह भी नाई को ऊपर खींचने के लिए कहकर खुद नीचे उतर पड़े।

लाला नाई का पेट खूब खाने से भर गया था। इसलिए वह जाकर आराम से सो रहा। थोड़ी देर में वह खर्राटे भरने लगा।

जब मोहनदास खा-पी चुके तब उन्होंने ऊपर आने के लिए पुकारा—लाला, खींच।

परन्तु नाई महाशय को खींचने का होश कहां था, जो उन्हें खींचे।

पटेल ने दो-तीन बार पुकारा—लाला खींच, लाला खींच ।

यह आवाज सुनकर मोहनदास की सास जाग उठी ।

सास को अपनी ओर आते देखते ही मोहनदास की पैर तले की जमीन खिसकने लगी । उसने जोर से कहा—लाला, खींच !

यह सुनते ही सास डर से उलटे पांव अपनी जान लेकर भागी । उसने सब बातें अपने पति को बताकर डरते हुए कहा—घर में 'लाला खींच' घुस आई है, उसे किसी तरह निकालना चाहिए ।

अब पति भी उसी कमरे की ओर तलाश करने आया ।

इतने में मोहनदास ने फिर पुकारा—लाला खींच !

यह सुनकर वह भी डर के मारे पीछे हटने लगा और पास-पड़ोस के आदमियों को बुला लाया ।

इस हो-हल्ले से लाला नाई की आंख खुल गई । उसने तुरन्त ही मोहनदास को ऊपर खींच लिया ।

और फिर नीचे जाकर पूछने लगा—क्या हुआ ? क्या हुआ ?

घरवालों ने कहा—हमारे घर में 'लाला खींच' घुस आई है ।

नाई महाशय ने अन्दर जाकर मिट्टी के सब बर्तन तोड़-फोड़ डाले ।

नाई ने कहा---बस यही बात है। इसमें क्या हुआ ? मुझे एक अच्छी लाठी दे दो। 'लाला खींच' को अभी भगा देता हूं ।

उन्होंने उसे एक लाठी दे दी।

नाई महाशय ने अन्दर जाकर मिट्टी के सब वर्तन तोड़-फोड़ डाले।

थोड़ी देर बाद बाहर निकल कर कहने लगा---मैंने तो द्वार वन्द करके उसे खूब पीटा। मगर वह छत और घर के सब बर्तन फोड़ कर निकल भागी।

घरवालों ने कहा---बर्तनों की तो कुछ चिंता नहीं। 'लाला खींच' को निकाल कर तुमने हमारी जान बचाई, यह बड़ी कृपा हुई।

यह 'लाला खींच' का भेद मोहनदास और लाला नाई के सिवाय दूसरा कोई न समझा।

तब से उत्तर गुजरात में यह 'लाला खींच' की कहावत चल पड़ी।

चतुर बुढ़िया

एक बूढ़ा जंगल में बैठा-बैठा हल बना रहा था। वह हाथ में कुल्हाड़ी लिए था और उससे हल की लकड़ी छील रहा था। थोड़ी देर बाद बूढ़े को रुखानी की जरूरत पड़ी और वह उसे इधर-उधर खोजने लगा। रुखानी रखी तो पास ही थी, परन्तु बूढ़ा उसे देर में ढूंढ सका। बस, वह अपनी आंखों पर क्रोधित हो उठा और बोला—अंधी हो अंधी। अच्छा होता, यदि तुम्हें बाघ खा लेता।

बूढ़े ने इतना कहा ही था कि जंगल स बाघ निकल आया और बोला—क्यों दुखी होते हो, भाई? मैं तुम्हें खाने के लिए तैयार हूं।

बाघ पर दृष्टि पड़ते ही बूढ़े की जान सूख गई। वह मारे भय के थर-थर कांपने लगा और मुंह से बोल भी न सका। यह देखकर बाघ ने कहा—चुप क्यों हो गए? बोलते क्यों नहीं? मैं तैयार तो हूं तुम्हें खाने के लिए!

इस बार बूढ़े ने हिम्मत बांधकर उत्तर दिया—नहीं भाई, आज यह कृपा रहने दो। मुझे अपने बाल-बच्चे तो देख लेने दो। मैं तीन दिन बाद यहीं आ जाऊंगा बस, तुम मजे से मुझे खा लेना।

बाघ बोला—अच्छी बात है। मैं तुम पर विश्वास करता हूं। जाओ, अपने बाल-बच्चों से मिल लो। परन्तु तीन दिन बाद यहीं लौट आना। कहीं ऐसा न हो कि वहीं पड़े रहो और मैं यहां तुम्हारी राह देखा करूं। समझे!

बूढ़ा घर लौट आया और उसने उदास होकर अपनी बुढ़िया पत्नी को सब हाल सुनाया। बुढ़िया हंसकर बोली—तुम तो पागल हो। भला इसमें चिन्ता करने की कौन-सी बात है? मजे से नहाओ-धोओ, खाओ और आराम करो। मैं तीन दिन बाद तुम्हें बाघ से बचाऊंगी ही नहीं, बल्कि हम उसे मार भी डालेंगे। बस, कह दिया, छोड़ो यह चिन्ता।

जब तीन दिन बीत गए तब बुढ़िया की राय के अनुसार बूढ़ा उसी जंगल में पहुंचा और कुल्हाड़ी लेकर हल बनाने बैठ गया। बुढ़िया भी शिकारी का भेष बनाकर और एक अच्छी-सी तलवार संभालकर बूढ़े के पीछे-पीछे चली तथा उससे थोड़ी दूरी पर खड़ी हो गई।

—यहां कहीं बाघ तो नहीं छिपा है? हम शिकारी हैं, अभी उसका शिकार करेंगे।

ज्यों ही खट-खट की आवाज बाघ के कानों में पहुंची, त्यों ही वह जंगल से बाहर निकला, जीभ स मुंह चाटता हुआ बूढ़े के पास आया और प्रसन्न होकर उससे बोला--बड़े सच्चे निकले तुम ! कहो, अब तो खाऊं तुम्हें ?

बाघ को देखते ही बुढ़िया ने बूढ़े से कहा—यहां कहीं बाघ-वाघ तो नहीं छिपा है ? हम शिकारी हैं, अभी उसका शिकार करेंगे ।

अब तो बाघ की सारी हिम्मत हवा हो गई । उसने मन में सोचा–यह शिकारी कहां से आमरा । अब तो मेरा ही बचना मुश्किल है । बस वह चुपके से बूढ़े के पीछे दुबका रहा और उससे बोला—कह दो भाई कि यहां कोई भी बाघ नहीं छिपा है । मैं तुम्हारा उपकार मानूंगा ।

बूढ़े ने बाघ की बात मान ली और बुढ़िया को उत्तर दिया—नहीं शिकारी जी, भला यहां बाघ क्यों आने लगा ?

शिकारी ने कहा—क्यों झूठ बोलते हो । तुम्हारे पीछे वह बाघ के समान क्या दुबका दिखाई देता है ? जल्दी बताओ ।

बाघ के सिखाने पर बूढ़ा बोला—शिकारी जी, यहां कोई नहीं दुबका है, यह तो एक पुराने सड़े-गले पेड़ का ठूंठ है ।

शिकारी ने कहा—माना कि वह पुराने और सड़े-गले पेड़ का ठूंठ है, परन्तु उसके ऊपर वे दो कान जैसे क्या दिखाई देते हैं ?

बाघ के सिखाने पर बूढ़ा बोला—कैसी बातें करते हो शिकारी जी ! भला ठूंठ पर कान-वान क्यों होंगे ? वे ठूंठ के पीछे लगे हुए एक पौधे के पत्ते हैं ।

शिकारी ने कहा—मान ली हमने तुम्हारी बात । अच्छा, अब एक काम करो । ठूंठ पर अपनी कुल्हाड़ी तो मारो, देखें ! उससे कैसी आवाज निकलती है ।

बाघ फुसफुसाकर बूढ़े से बोला—देखो भाई, मेरी पीठ पर कुल्हाड़ी तो मारो परन्तु बहुत धीरे से । कहीं ऐसा न हो कि मुझे चोट-वोट लग जाए । मैं तुम्हारा बहुत उपकार मानूंगा ।

बूढ़े ने धीरे से बाघ की पीठ पर कुल्हाड़ी मारी । बुढ़िया बड़ी चतुर थी, उसने बूढ़े को समझाने के लिए कहा—अजी, कुल्हाड़ी चलाते हो, या खेल करते हो ? मुझे तो कुछ आवाज सुनाई नहीं देती । जरा इस तरह कुल्हाड़ी चलाओ कि ठूंठ से कुछ आवाज निकले ।

बुढ़िया की चतुराई बूढ़े की समझ में आ गई । उसने बाघ को मारने के लिए कुल्हाड़ी उठाई । बाघ उसी तरह फुसफुसाकर बोला—बिलकुल धीरे से भाई ! मैं तुम्हारा उपकार न भूलूंगा ।

परन्तु इस बार बूढ़े ने पूरे जोर से बाघ के सिर पर कुल्हाड़ी दे मारी, बाघ का सिर फट गया । वह जोरों से दहाड़ मारकर धरती पर गिर पड़ा, इधर-उधर छटपटाने लगा और थोड़ी ही देर में मर गया । बुढ़िया दौड़कर बूढ़े के पास पहुंची और हंसते-हंसते बोली—कहो, मैंने किस तरह शिकारी बनकर तुम्हें बाघ से बचाया ? बस, अब इसे उठाकर घर ले चलो । इसका चमड़ा साफ करके मुझे दो, मैं उस पर बैठकर पूजा किया करूंगी ।

बुढ़िया की सहायता से बूढ़ा वह मरा हुआ बाघ अपने घर ले आया । उसने अपनी जाति के लोगों को निमन्त्रण दे दिया । अब क्या था, बिरादरी के सभी लोग उस बूढ़े के घर पहुंचे । उन्होंने बड़े आनन्द से बाघ के मारने का उत्सव मनाया । इसके बाद वे रात-भर नाचते गाते रहे ।

शिक्षित मूर्ख

रामा नाम का एक लड़का था। उसके पिता जी ने उसे एक गुरु के पास पढ़ने के लिए भेज दिया। रट्टू तोते की तरह उसने श्लोक और सूत्र याद तो कर लिए परन्तु उनका व्यावहारिक अर्थ नहीं समझ सका।

पढ़-लिख कर जब वह घर आया तो एक दिन उसकी माता ने उससे कहा—बेटा रामलाल, अपनी ससुराल जाकर अपनी बहू को विदा करा लाओ।

अपने जमाई को देखकर ससुराल वालों ने उसका खूब आदर-सत्कार किया। ससुर साहब ने तुरन्त ही एक चटाई बिछाई और उस पर नया कालीन बिछाकर कहा—बेटा, यहां बिराजो।

पंडित रामलाल सोचने लगा—मैं इनके यहां का वर (दूल्हा) हूं। वर को प्रजापति, राजा और अवतंश अर्थात सूर्य, आभूषण, श्रेष्ठ आदि कई सुन्दर नामों से पुकारा जाता है। मैं भी वर हूं। इसलिए मुझे भी एक श्रेष्ठ व्यक्ति की तरह ऊंचे आसन पर ही बैठना चाहिए। वह यह सोच ही रहा था कि उसे याद आया —

उच्चैः स्थानेषु पूज्यन्ते !

(उच्च स्थान पर रहने वाला पूज्य होता है।)

वह बड़ी देर तक इसी प्रकार से तर्क-वितर्क करता रहा। ससुर साहब ने कालीन पर बैठने को बहुत कहा, परन्तु वह नहीं बैठा। अन्त में उसने कमरे में इधर-उधर नजर दौड़ाई तो एक कोने में अनाज के 5-6 बोरे आड़े करके एक के ऊपर एक रखे हुए थे। वह मन-ही-मन प्रसन्न होकर उन बोरों पर जा बैठा और बोला—श्वसुर महोदय, वर के लिए यह उच्च आसन अति श्रेष्ठ है।

ससुर महोदय बेचारे क्या करते, केवल 'हूं' करके एक तरफ बैठ गए। कुछ देर बाद ससुर महोदय ने पूछा—कुंवर साहब, घर पर सब प्रसन्न तो हैं, ना ?

रामलाल उनका यह वाक्य पूरा होते-होते चिढ़ गया और बोला—श्वसुर महोदय, गाली मत दीजिए। मैं वर हूं। श्रेष्ठ हूं, फिर 'अतिथि देवो भव' के अनुसार आपके लिए देवता के समान पूजनीय हूं। आप मुझे 'सुवर' के बदले 'कुवर' कह कर मेरा अपमान कर रहे हैं।

यदि मैं कुंवर (बुरा दूल्हा) था तो फिर आपने अपनी लड़की का विवाह मेरे साथ किया ही क्यों ?

—बेटा ! मैंने कुवर नहीं, कुंवर कहा है। यह बड़ा ही प्रिय शब्द है। इस प्रकार बड़े लड़के, युवराज या प्रिय बालक को सम्बोधन किया जाता है। ससुर ने कहा।

यह सुनकर रामलाल को गुस्सा आ गया। वह चिढ़कर बोला—ससुर साहब, यह सब थोथी बातें हैं। 'कुंवर' शब्द 'कुवर' का ही बिगड़ा हुआ रूप होगा। आप मुझे 'सुवर' कहा कीजिए, जिसका मतलब है होता—श्रेष्ठ वर, सुन्दर वर।

इतने में ही ससुर बोले–वत्स !

रामलाल ने तभी बात को बीच में ही काट कर कहा—श्वसुर महोदय, 'वत्स' बछड़े को भी कहते हैं। आप जरा सोच-समझ कर ही मुझसे बातचीत कीजिए। कहीं बाहर कोई सुनेगा तो समझेगा कि आप किसी गाय या भैंस के बछड़े को पुकार रहे हैं। इसलिए आप मुझे सीधे-सीधे विद्यावारिधि, विद्या महोदधि, पंडितराज या शास्त्री जी आदि सुन्दर शब्दों से बुलाने का कष्ट करिए। किसी विद्वान पंडित का अनादर करना शास्त्र-विरुद्ध है, महान पाप है।

उसने आव देखा न ताव और एक लकड़ी लेकर उसकी एक आंख फोड़ दी।

इतना कहने के पश्चात रामलाल ने फिर कहा—श्वसुर महोदय, भवदीया जामा कहां है ?

—दामाद जी, हम जामा, पजामा नहीं पहनते हैं। हम तो सीधे-सादे आदमी ठहरे, धोती पहनते हैं। ससुर ने रामलाल की तरफ देखते हुए कहा।

रामलाल को गुस्सा आ गया। वह बोला—अरे भगवान ! यह क्या हुआ, एक धुरन्धर विद्वान का विवाह कैसे अंगूठा छाप परिवार में हुआ। श्वसुर महोदय, आप भी किस नींद में हैं, जामा लड़की को कहते हैं, लड़की को। मेरा मतलब यह था कि आप की लड़की, और अपनी भार्या यानी पत्नी से मैं मिलना चाहता हूं।

—यह बात है बेटा, तो मैं अभी जाकर उसे भेजता हूं—इतना कहकर उसने अन्दर जाकर रामलाल की पत्नी को भेज दिया। उसे देखकर रामलाल बोला—आओ, आओ माताजी मैं आपको शास्त्रीय विधि से साष्टांग दंडवत करता हूं।

वह लड़की शरम के मारे कुछ नहीं बोली। तब रामलाल ने फिर कहा—तुम शपथ खाकर कहो देवी कि तुम किसकी भार्या हो, यानी धर्मपत्नी हो। मैं तुम्हें पहचानता नहीं हूं इसलिए बिना जाने पहचाने पराई स्त्री से बातचीत करने का पाप मैं नहीं करूंगा। शास्त्रों में लिखा है—'मातृवत् परदारेषु (पराई स्त्री को माता के समान मानना चाहिए)।

लड़की ने बड़े ही संकोच से कहा—स्वामी, मैं आपकी ही पत्नी हूं, यह शपथ खाकर कहती हूं।

—अच्छा यहां बैठ जाओ। लड़की बैठ गई। वह बड़ी रूपवती थी। रामलाल को उसी समय—'भार्या रूपवती शत्रु' (रूपवती पत्नी शत्रु होती है) यह बात याद आ गई। इसलिए उसने आव देखा न ताव, और एक लकड़ी लेकर उसकी एक आंख फोड़ दी। लड़की उसी समय दर्द के मारे चिल्ला पड़ी। इधर रामलाल सोच रहा था, अब वह कुरूप हो गई है इसलिए सारा दोष समाप्त हो गया है। थोड़ी देर ही में संस्कृत के इन जीते-जागते पुस्तकालय पंडितजी को एक सुभाषित याद आ गया—'एकाक्षी कुलनाशिनी' (कानी स्त्री कुल का नाश करने वाली होती है)। अब रामलाल बड़े सोच में पड़ गया। इधर कुल की चिन्ता उसे सताने लगी। उसने कुछ सोचकर पत्नी की दूसरी आंख भी फोड़ दी।

लड़की दर्द के मारे जोर-जोर से रोने लगी। उसके रोने की आवाज सुनकर पूरा परिवार इकट्ठा हो गया और लड़की की आंखों से खून बहता देख कर रामलाल को पीटने लग गए। अपने पर डंडे बरसते देखकर रामलाल चिल्लाया—अरे मूर्खो ! यह क्या कर रहे हो ? पंडित का अनादर करोगे तो पाप कमाओगे। मैंने तो तुम्हारी कुलक्षणा कन्या को सुलक्षणा

बना दिया है। फिर भी तुम लोग मेरा अनादर क्यों कर रहे हो ? तुम्हें तो मेरा आदर कर चाहिए था, आदर !

उसके ससुर ने तुरन्त ही एक रस्सी लाकर घर के आंगन में लगे हुए नीम के पेड़ से दामाद को बांध दिया और बोले — कसाई के बच्चे ! हम तुझे अभी पुलिस के हवाले कर देते हैं, फिर अपनी पंडिताई उनके सामने छांटना ।

पुलिस का नाम सुनते ही रामलाल की सारी पंडिताई ठिकाने लग गई । वह डर के मारे कांप उठा । वह रोने लग गया और चिल्ला-चिल्ला कर अपनी पत्नी से कहने लगा—मेरी भार्या, मेरी गृहलक्ष्मी, सुलक्षणादेवी, मेरा उद्धार करो, मुझे इस कारावास से, इस बन्धन से छुड़ाओ । पतिव्रता नारी, नारीधर्म का पालन करो, मुझ पतित पति को क्षमा करो । देवी, क्षमा कर दो नहीं तो तुम पर कलंक लगेगा । देवी ! मुझे छुड़वाओ, मैं मरा जा रहा हूं ।

पिताजी, यह सब मेरे ही कर्मों का दोष था । अतः आप इनको पुलिस के सुपुर्द भी कर देंगे तो भी मेरी आंखें वापस तो आ नहीं सकती हैं ।

बड़ी देर बाद लड़की ने अपने पिताजी से हाथ जोड़ कर कहा—पिताजी, यह सब तो मर ही कर्मों का दोष था। अब आप इनको पुलिस के सुपुर्द भी कर देंगे तो भी मेरी आखें तो नहीं आ सकती हैं। इसलिए आप इन्हें छोड़ दीजिए। ये अपराधी हैं फिर भी मेरे पति हैं।

इस प्रकार से बार-बार अनुरोध करने पर उसके पिता ने उस शिक्षित मूर्ख को वहां से भगा दिया। रामलाल ने भी फिर कभी अपनी पंडिताई नहीं बघारी ।

सच है, केवल पढ़ने से ही सब कुछ ठीक नहीं हो सकता है। पढ़ने के साथ व्यवहार-कुशलता सीखना भी अत्यन्त आवश्यक है, नहीं तो रामलाल जैसी गति बनती है ।

दूध का जला

दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीता है यह एक कहावत है, जो हर कहावत की तरह ऊपर से बड़ी भोली-भाली और सीधी मालूम होती है। पर जब आप इससे बात करें तो पता चलेगा कि यह इतनी सीधी नहीं, बड़ी टेढ़ी और गहरी है। खैर, पहले इसका सीधा मतलब समझ लीजिए, फिर गहराई को भी देख लेंगे क्योंकि पहले तो ऊपर का रूप ही देखा जाता है।

आप जानते हैं कि गांव वाले मेहमान की बड़ी इज्जत करते हैं। जान-पहचान न हो, तो भी उसकी सेवा में कोई कसर उठा नहीं रखते। दरअसल अतिथि-सत्कार हमारे देश की पुरानी सभ्यता है। इसलिए जब चौधरी लक्खू राम के घर एक शहरी मेहमान आया, तो उन्होंने उसका हर तरह आदर-सत्कार किया। खाना खिलाया, सोने के लिए बिस्तर दिया और रिवाज के अनुसार रात को सोते वक्त गर्म-गर्म दूध पेश किया। यह शहरी बाबू के लिए एक नई बात थी और रात को सोते वक्त दूध पीने की आदत भी नहीं थी। पर इन्कार करते भी न बन पड़ा। सकुचाते हुए कटोरा लेकर मुंह से लगाया, तो होंठ जल गए।

—बाबू साहब, उतावले न बनिए। धीरे-धीरे फूंक कर पी लीजिए—चौधरी साहब ने मुस्कराते हुए कहा।

चुनाचें बाबू ने फूंक-फूंक कर दूध पी लिया।

सुबह नाश्ते के साथ मेहमान को छाछ दी गई। बाबू को दूध से होंठ जलने की बात याद आई तो उसने छाछ को भी फूंक-फूंक कर पीना शुरू किया। और कहावत का मतलब साफ है कि दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीता है।

मगर यह तो इसका ऊपर का रूप और सीधा-सा मतलब हुआ। भीतर का रूप देखने के लिए जरा करीब जाकर बोलने-बतलाने और समझने-बूझने की जरूरत होगी। जब आप बात करेंगे तो यह भोली-भाली कहावत बन कर खड़ी हो जाएगी और त्योरी चढ़ा कर कहेगी—अजी महाशय, सिर्फ दूध और छाछ की ही बात नहीं, हम तो जिन्दगी के बहुत से अनुभव बयान करते हैं।

आप अगर ये अनुभव सुनने बैठें, तो सुबह से शाम हो जाए। पर आपके पास शायद इतना समय न हो और यों भी बुद्धिमान लोग थोड़े ही में पूरी बात समझ लेते हैं। इसलिए आप सिर्फ एक-दो उदाहरण सुनिए।

एक बार श्रीमान अयोध्या प्रसाद के सिर पर यह धुन सवार हुई कि कोई बड़ा कारोबार शुरू किया जाए। अच्छी बात है, पैसा हो तो कारोबार करना ही चाहिए। चुनांचे उन्होंने पचास-साठ हजार रुपया लगाकर इमारती लकड़ी का काम शुरू कर दिया। पर उन्हें इस धंधे का न कोई अनुभव था और न जानकारी। दो-तीन साल में कारोबार चौपट हो गया और उनकी सारी पूंजी डूब गई। अब अगर उन्हें कोई सलाह देता है कि श्रीमान अयोध्या प्रसाद जी, दिल्ली में जमीन का भाव दिन-पर-दिन बढ़ रहा है; आप इस नई कालोनी में चार-पांच हजार रुपया लगाकर दो प्लाट खरीद लीजिए। जब भाव बढ़ जाए तब बेच देना, तो वह चुप रह कर सिर खुजलाते हुए कुछ सोचते रहते हैं। जब काफी देर तक कोई उत्तर नहीं मिलता, तो सलाह देने वाला फिर कहता है—श्रीमान जी इसमें सोचने की क्या बात है। यह तो साफ लाभ का सौदा है।

—ठीक है, सौदा लाभ का होगा—अयोध्या प्रसाद, जो इस कहावत का सहारा लेकर उत्तर देते हैं—मगर आपको मालूम नहीं कि दूध का जला छाछ फूंक-फूंक कर पीता है। हम पहले काफी पूंजी खो बैठे हैं।

घोड़ा शरारती था, बस्ती से बाहर निकलते ही बिगड़ गया।

तीसरा उदाहरण हम अपने मित्र रतन लाल भाटिया का देते हैं। वह अधेड़ उम्र का आदमी है, चार-पांच बच्चों का बाप है और अपने काम-काज में बड़ा चतुर है। पर घोड़े से इतना डरता है कि कोई शेर-चीते से क्या डरेगा। घोड़े की शक्ल देखते ही उसकी रूह कांपने लगती है। कारण यह है कि जब उसकी उम्र चौदह-पन्द्रह साल की थी, तो वह इत्तफाक से पड़ोसी के घोड़े पर सवार हुआ और नहर की ओर चल पड़ा। घोड़ा शरारती था, बस्ती से बाहर निकलते ही बिगड़ गया और रतन लाल को औंधे मुंह जमीन पर पटक कर घर लौट आया। घोड़े के खाली लौटने से घरवालों को चिन्ता हुई और वे लड़के की तलाश में निकले। रतन लाल रास्ते में बेहोश पड़ा था। अगर उसी समय अस्पताल न पहुंचा दिया जाता तो बेचारा घोड़े की सवारी के शौक में जान से हाथ धो बैठता। सिर में गहरा

घाव था और हंसली की हड्डी टूट गई थी। दो-ढ़ाई महीने अस्पताल में पड़ा रहा, तब कहीं अच्छा हुआ। अब हालत यह है कि रतन लाल कभी तांगें पर भी सवार नहीं होता।

अब आप खुद वहुत-सी मिसालें सोच सकते हैं। जब किसी आदमी को कोई बदमाश मित्र बनाकर ठग लेता है तो वह भले आदमी को भी मित्र बनाते झिझकता है। वैसे इस बात का दूध और छाछ से कोई सम्बन्ध नहीं, पर यह कहावत यहां भी लागू होती है।

आपने नारियल तो देखा होगा। हर कहावत का रूप नारियल का रूप है। जब ऊपर का बालों वाला खुरदरा खोल तोड़ा जाता है, तो भीतर से सुन्दर स्वादिष्ट गरी निकलती है और मीठा-मीठा दूध निकलता है। इसी प्रकार जब कहावत के ऊपर वाला शब्दों का खोल तोड़ा जाता है, तो भीतर से उसका असली मतलब और वास्तविक रूप प्रकट होता है जो दूध और गरी के माफिक है। कहावत कोई लेखक व कवि नहीं बनाता। वह तो लोगों के अनुभव और बुद्धि से बनती है और फिर पूरे देश की सभ्यता और लोक-जीवन का अंग बन जाती है। यह बताना कठिन है कि अनेक त्यौहार और व्रत कब और कैसे शुरू हुए। इसी प्रकार किसी कहावत के बारे में भी यह बताना कठिन है कि वह कब और कैसे शुरू हुई। हां, यह दुरूस्त है कि कुछ त्यौहारों और व्रतों के बारे में कहानियां बनी हुई हैं। इसी प्रकार कुछ कहावतों के बारे में भी कहानियां प्रचलित हैं, जिनमें उनका कुछ अता-पता मालूम होता है। इस कहावत के बारे में भी एक कहानी प्रसिद्ध है, वह सच चाहे न हो, दिलचस्प जरूर है। इसलिए लगे हाथों सुन लीजिए।

एक बार अकबर बादशाह को बिल्ली मौसी की जाने कौन-सी अदा पसंद आ गई कि उन्होंने तुरन्त हुक्म जारी कर दिया कि हमारे राज्य में प्रत्येक व्यक्ति बिल्ली पाले और बिल्ली को दूध पिलाने के लिए गाय रखे।

अब किस की मजाल थी कि बादशाह के हुक्म का पालन न करें। घर-घर बिल्लियां पाली गईं और उन्हें दूध पिलाने के लिए गाय भी रखी गईं। बिल्लियां दूध पी-पीकर खूब मोटी होने लगीं।

राजा बीरबल का नाम भी आपने सुना होगा। वह अकबर का दरबारी और वजीर था। अकबर बादशाह उससे प्यार भी बहुत करते थे, क्योंकि बीरबल चतुर और समझदार था। पर बादशाह का हुक्म बीरबल को भी मानना पड़ा। उसने भी बिल्ली पाली और दूध पिलाने के लिए गाय रखी।

चूंकि बादशाह का हुक्म था, इसलिए बिल्ली तो रख ली, पर बीरबल इस बात से बड़ा परेशान था कि गाय की सेवा हम करते हैं, उसे खिलाते-पिलाते हम हैं, मगर दूध सारा बिल्ली मौसी चट कर जाती है। चुनांचे वह ऐसा उपाय सोचने लगा कि बादशाह के क्रोध से भी जान बचे और गाय का दूध खुद पी सकें।

आखिर बीरबल दिमाग रखता था। उपाय सूझ गया। उसी दिन शाम को बिल्ली

के सामने गर्मा-गर्म उबलता हुआ दूध रख दिया। ज्यों ही उसने दूध में मुंह डाला, होठ जल गए और वह तिलमिला कर पीछे हट गई। उस दिन से फिर बीरबल की बिल्ली ने दूध की तरफ मुंह भी नहीं किया। दूध तो दूध वह तो दूधिया रंग देखकर डर जाती थी।

छः-सात महीने बाद अकबर ने घोषणा की कि फलां तारीख को बिल्लियों की नुमाइश लगेगी और जो बिल्लियां अधिक मोटी और मजबूत होंगी, उन्हें इनाम दिया जाएगा। चुनांचे नुमाइश हुई। उसमें बीरबल की बिल्ली सब से कमजोर, दुबली तथा पतली थी। बादशाह ने कारण पूछा, तो बीरबल हाथ जोड़कर गम्भीरता से बोला—हुजूर क्या करें? हम तो बहुत पिलाते हैं, मगर यह दूध पीती ही नहीं।

बिल्ली के सामने दूध रखा गया, तो उसने सचमुच नहीं पिया। अकबर बीरबल की चालाकी समझ गया और मुस्करा पड़ा।

अरे मैं लम्बा हो गया!

कज्जन बाबू पर जब हलवाइयों का काफी लम्बा उधार हो गया तो एक रात वे चुपचाप एक तहमद और कमीज पहने शहर से भाग खड़े हुए और सीधे दूसरे शहर में जा पहुंचे, जहां चूंचट नाम का उसका एक रिश्तेदार रहता था।

सुबह-सुबह जब चूंचट ने कज्जन बाबू को अपने दरवाजे पर खड़ा पाया, तो वह बड़ा क्रोधित हो उठा और बोला—तुम यहां क्यों दिखाई पड़ रहे हो? पिछले वर्ष मेरे नाम पर तुमने हलवाइयों से जो मिठाई खाई, उसके पैसे चुकाते-चुकाते मेरी जान आधी हो गई। अगर सीधे यहां से दफा न हुए, तो मजबूरन मुझे हाथ दिखाने पड़ेंगे।

कज्जन बाबू गिड़गिड़ा कर बोले—मैं तुमसे माफी मांगता हूं चूंचट भैया, पर अब मैंने यह खोटा काम छोड़ दिया है। आज से मैंने कसम खा ली है कि कभी उधार नहीं करुंगा और मेहनत-मजदूरी करके रूखा-सूखा खाऊंगा।

—मैं तुम्हारी यह आदत अच्छी तरह जानता हूं। पैर पटकते हुए चूंचट ने कहा। पर कज्जन बाबू को रोता देख उसे दया आ गई, अतः बोला—इस वक्त तुम्हारी हालत पर रहम करके अपने यहां जगह दे देता हूं, पर जरा भी घर से बाहर पैर रखा, तो सीधे उन हलवाइयों के सुपुर्द कर दूंगा, जो तुम्हारी तलाश में हैं।

उस दिन से कज्जन बाबू चूंचट के यहां रहने लगे। चूंचट कद में कज्जन बाबू से कुछ लम्बा था, पर उसे अपनी लम्बाई पर कुछ संतोष न था, बात यह थी कि उसके किसी दोस्त ने एक बार उससे कहा था कि चेहरे-मोहरे से वह फिल्म के लिए बिल्कुल फिट है, पर बिना चार इंच लम्बाई बढ़ाए उसका फिल्म कम्पनी में भर्ती होना बड़ा मुश्किल है। फिल्म में भर्ती होने का शौक उसे बहुत पहले से था और इसी शौक के पीछे पागल होकर उसने बेशुमार फिल्में देख डाली थीं।

आजकल वह लम्बाई बढ़ाने के फेर में था। कज्जन बाबू उसकी इस कमजोरी को अच्छी तरह भांप गए। कुछ दिनों तक तो वे चुपचाप घर ही बैठे रहे। पर ऐसा कब तक चलता। आखिर चूंचट को झांसे में डालने की तरकीब उन्होंने सोच ही डाली।

लम्बाई बढ़ाने की हजारों दवाइयां सेवन करने के बाद चूंचट का कद जब वैसा का वैसा रहा, तो मौका देखकर कज्जन बोला—भैया, तुम नाहक परेशान हो रहे हो।

लम्बाई बढ़ाने का मैं बाबा अघोरीनाथ से एक ऐसा नुस्खा मालूम कर लाया हूं कि एक ही रात में जो चाहे चार इंच लम्बाई बढ़ा ले।

चूंचट आश्चर्य-चकित रह गया।

—इस वक्त तुम्हारी हालत पर रहम करके अपने यहां जगह दे देता हूं, पर जरा भी घर से बाहर पैर रखा, तो सीधे उन हलवाइयों के सुपुर्द कर दूंगा, जो तुम्हारी तलाश में हैं।

उनकी तरफ देखते हुए बड़े ही इतमीनान से कज्जन बाबू बोले—अगर तुम्हें यकीन न हो तो आज ही दवा बनाकर दिखाता हूं। अगर कल सुबह तक चूंचट भैया तुम्हारी लम्बाई न बढ़ी, तो मुझे जूते से पीटना। पर खर्च जरा ज्यादा बैठेगा।

—अरे खर्च की तू परवाह न कर—चूंचट एकदम बोल पड़ा—पर बात झूठी हुई तो याद रखना, मारे जूतों के खाल उधेड़ दूंगा

—सो तो मैं कहता ही हूं—कज्जन बाबू बोले—लाओ जल्दी से दस रुपये, म बाजार से अभी दवा का सौदा लाता हूं।

खुशी-खुशी चूंचट ने भीतर जाकर दस का नोट निकाला और कज्जन बाबू के हाथ पर रख दिया। नोट लेकर कज्जन बाबू बांहर आ गए। छिपते-छिपते वह गली के नुक्कड़ पर एक नए हलवाई की दूकान में जा बैठे और खूब छक कर दूध-जलेबी उड़ाने लगे। फिर बड़ी देर तक बाजार में घूमते रहे। लौटती बार उन्होंने कबाड़ी के यहां से एक शीशी खरीद ली, फिर पास ही लगे नल से उसमें पानी भर लिया। दो पैसे का लाल रंग लेकर उन्होंने पानी का रंग लाल कर लिया और सीधे घर चले आए।

चूंचट जैसे इन्हीं के इंतजार में बैठा था, अतः कज्जन बाबू के हाथ में बोतल देख कर बड़ा खुश हुआ। बड़े गर्व से कज्जन बाबू माथे का पसीना पोंछते हुए बोले—लो, यह रही दवा। एक चम्मच चीनी के साथ पी जाओ और पैर लम्बे करके लेट जाओ। सुबह देखना असर!

चीनी के साथ बोतल का पानी पीकर चूंचट खुशी-खुशी उसी वक्त सो गया। लम्बे होने की खुशी में आधी रात तक नींद ही नहीं आई। सुबह जब नींद टूटी, तो वह फौरन उठ खड़ा हुआ।

—वाह! देखा न मेरी दवा का असर? कज्जन बाबू बोले—एक ही रात में इतना फर्क आ गया। वाकई अघोरीनाथ का नुस्खा कभी भी झूठ साबित नहीं हो सकता है।

—पर मुझे तो जरा भी लम्बाई महसूस नहीं होती। अपने पैरों की तरफ देखते हुए चूंचट आश्चर्य भरे स्वर में बोला।

—भला अपनी लम्बाई भी किसे महसूस होती है। हंसते हुए कज्जन बाबू बोले—तहमद उतार कर जरा अपनी पैंट पहन कर तो देखो, अभी पता लग जाएगा।

चूंचट ने फौरन खूंटी पर टंगी अपनी पैंट उतार ली, पहनी तो दंग रह गया। सचमुच कज्जन बाबू का कहना ठीक था। पैंट एक ही रात में उसे काफी छोटी पड़ गई थी। मारे खुशी के वह उछल पड़ा, लेकिन फिर भी उसे शक हुआ, अतः उसने दूसरी खूंटी में टंगा अपना पायजामा उतार लिया। मगर पायजामा भी पैंट की तरह छोटा पड़ गया था। अब तो चूंचट की खुशी का ठिकाना न रहा। फौरन ही उसने कज्जन बाबू को गले से लगा लिया और गद्गद् स्वर में बोला—वाह! कज्जन भैया, मान गया तुम्हारी बात। लो, अब

यह पैंट और पायजामा तुम्हीं रख लो। मैं आज ही अपने लिए दूसरी सिलवा लूंगा। दफ्तर भी आज तहमद पहन कर ही जाऊंगा। अब दफ्तर जाना भी रह कितने दिनों का गया है? पहली तारीख को तनखा मिली नहीं, कि फुर्र से बम्बई, फिर पर्दे पर ही दिखाई दूंगा।

—क्यों नहीं, क्यों नहीं!—कज्जन बाबू मुस्कराते हुए बोले—फिर फिल्म में जाकर तुम मुझे भूल जाओगे।

—ऐसा भी भला हो सकता है कभी। —चूंचट खींसें निपोरता हुआ बोला—अच्छा, तुम सीधे मंघाराम हलवाई के यहां चले जाओ, मेरा नाम लेकर जो मिठाई पसन्द आए खा लेना, पैसे मैं दे दूंगा।

—अम्मां, पहले वाली पतलून मुझे छोटी हो गई, देखते नहीं चार इंच लम्बाई बढ़ गई है।

कज्जन बाबू ने चूंचट की पैंट पहनी तो उनको बिल्कुल फिट बैठी। खुशी-खुशी वह बाहर निकल गए ।

तहमद पहन कर जब अकड़ता हुआ चूंचट गली में आया, तो लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। पर बगैर किसी की परवाह किए वह सीधे मास्टर सूरजबली की दूकान में जा पहुंचा और ऊपर ही ऊपर नजर किए हुए बोला—अमां मास्टर, ज़रा लेना तो मेरी पतलून की नाप, कितना कपड़ा लगेगा ......।

—लेकिन यह तहमद किस खुशी में पहन ली ! बाबू जी, मैं जो समझा था आप पतलून पहनना छोड़ रहे हैं। सूरजबली बटन में धागा फंसाता हुआ बोला।

—यह तुमने पहले से ही कैसे जान लिया कि मैं पतलून पहनना छोड़ रहा हू। चूंचट ने गर्दन ऊंची करते हुए कहा—अमां, पहले वाली पतलून मुझे छोटी पड़ गई है, देखते नहीं चार इंच लम्बाई बढ़ गई है।

—आप भी नंबर एक मजाकिया हैं। सूरजबली हंसता हुआ बोला—कल रात मैंने ही तो आपकी पतलून और पायजामा चार-चार इंच काट कर ठीक की थी।

—हूं ? चूंचट को लगा, जैसे उसके सिर में बारूद का गोला फूट गया हो।

—अरे आप घबड़ा क्यों गए? सूरजबली बोला—कज्जन बाबू तो लाए थे दोनों चीजें, आपका हुक्म था, इसलिए तो मैंने आधी रात तक काम किया।

पर तब तक चूंचट दूकान से नीचे कूद चुका था।

मंघाराम हलवाई के यहां डट कर नाश्ता करने के बाद, जब कज्जन बाबू पान की दूकान के पास पहुंचे, तो उन्होंने देखा तहमद पहने पसीने से लथपथ चूंचट उसी तरफ लपका चला आ रहा है। फौरन समझ गए मामला नाजुक है, अतः पलट कर सीधे भागने लगे। पर तभी मोड़ पर उन्हें भुजंगी पहलवान मिल गया। कज्जन बाबू को इस तरह भागते देख उसकी समझ में कुछ नहीं आया। वैसे ही वह उससे बुरी तरह चिढ़ा हुआ था। फिर न जाने क्या सोच कर वह आगे बढ़ा। तभी 'पकड़ो-पकड़ो' की आवाज सुनाई दी।

भुजंगी पहलवान ने आव देखा न ताव और लपक कर कज्जन बाबू की गर्दन पकड़ ली। थोड़ी देर में चूंचट भी वहां आ गया।

दोनों ने खूब कस कर कज्जन बाबू की मरम्मत करनी शुरू की।

शाम को कज्जन बाबू स्टेशन की तरफ जा रहे थे। उनका बांया पैर लंगड़ा रहा था, अतः वे लचक-लचक कर चल रहे थे। दाहिना हाथ गले से झूलती हुई पट्टी से लटक रहा था और गाल फूल कर कुप्पा हो गए थे।

परभाते भुंजी धाणी

किसी गांव में एक आदमी रहता था। वह बड़ा कंजूस था। उसके दो स्त्रियां थीं। एक का नाम था खेतली व दूसरी का था नेतली। वे दोनों बहुत फिजूल खर्ची करती थीं, पर दोनों की पति के आगे कुछ चलती न थी। उनकी इस आदत से उनका पति उन पर बहुत खुश था। वह हर एक के सामने अपनी स्त्रियों का बखान करता फिरता। उसे यह नहीं मालूम था कि जब वह बाहर चला जाता है तो वह मनमानी करती हैं।

एक दिन वह आदमी अपनी पड़ोसिन से बातें कर रहा था। बातों-ही-बातों में उसकी स्त्रियों का भी जिक्र आया। वह आदमी अपनी पड़ोसिन के सामने भी बढ़-बढ़कर अपनी स्त्रियों की किफायतशारी की डींगे हांकने लगा। पर उसने उसकी बात को एकदम गलत बताया। इस पर वह आदमी हँसने लगा और बोला—तू तो मूर्ख है! उन जैसी औरतें मैंने आज तक नहीं देखीं। यह समझो सीता—सावित्री हैं।

उसने कहा—तुम्हें क्या मालूम कि तुमसे छिपाकर कितना खर्चती और उड़ाती हैं, फिर ठीक भी तो है, तुम उनको इतनी तंगी से क्यों रखते हो?

पड़ोसिन की बातें सुनकर उस आदमी को अपनी स्त्रियों के बारे में कुछ-कुछ सन्देह होने लगा। उसने अपनी स्त्रियों की परीक्षा लेने की ठानी।

दूसरे दिन वह तड़के ही उठा। शौच-स्नान से निपटकर उसने अपनी औरतों को हुक्म दिया कि आज वह परदेश जा रहा है, इसलिए जल्दी रसोई बनाएं। परदेश की बात सुनकर दोनों मन में तो बड़ी खुश हुईं पर दिखावे के लिए रो-रोकर कहने लगीं—आप चले जाएंगे फिर हमारे दिन कैसे कटेंगे? आपके बिना हमारा जीना दूभर हो जाएगा। हमारी निगरानी करने वाला भी यहां फिर कौन है?

पर उनका पति तो उनकी परीक्षा लेने की ठान चुका था, इसलिए उसने उनकी बातें एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल दीं। उसने जल्दी-जल्दी भोजन किया। चलते समय दोनों औरतों ने उसके पैर पकड़ लिए और रोने लगीं। उसने जल्दी लौट आने की कहकर उनसे किसी तरह पिंड छुड़ाया।

पति के चले जाने पर वे बड़ी खुश हुईं। उस दिन उन्होंने माता को प्रसाद चढ़ाया कि चलो, कुछ दिन तो सुख-चैन की रोटी मिलेगी। मनचाहा खाएंगे तो सही। बस, उस दिन उन्होंने हलवा बनाया और खूब डटकर खाया और लम्बी तानकर सो गईं।

धीरे-धीरे रात का सन्नाटा छाने लगा। उनका पति पड़ोसिन की छत पर उनका तमाशा देखने के लिए छिपकर बैठ गया। उसकी दोनों स्त्रियों को दिन का खाया हलवा पच चुका था। दिन भर दोनों ने डटकर नींद ली। रात को भी कुछ देर के लिए सोने की कोशिश करती रहीं। इतने में नेतली उठी। उसने खेतली को हाथ से छूकर पूछा—बहन, जाग रही हो या सोती हो ?

खेतली ने कहा—जाग रही हूं।

नेतली ने धीरे से कहा—मुझे तो भूख लगी है।

खेतली बोली—भूख तो मुझे भी लगी है। हां, उनकी (पति की) लाई हुई ईखें पड़ी हैं, उन्हें चूस लें जिससे मुंह का जायका भी अच्छा रहेगा और यदि हलवा नहीं पचा है तो पच जाएगा।

दोनों ने ईखें चूस लीं और सो गईं। उनका पति पड़ोसिन की छत से सारा नजारा देख रहा था।

वे झूठ-मूठ ही सोई थीं, इसलिए थोड़ी देर में खेतली उठी। उसने नेतली को हाथ से हिलाकर पूछा—बाई ! जागती हो या सोती हो ?

नेतली ने कहा—जागती हूं।

खेतली ने पूछा—रात कितनी ढली है ?

नेतली ने कहा—आधी रात होने में घड़ी-आध-घड़ी बाकी है।

खेतली बोली—कुछ भी हो, मुझे तो भूख लगी है। कुछ तैयार है अन्दर ?

नेतली ने कहा—अन्दर तो कुछ नहीं है, चलो करारे रोट बना लें।

और दोनों ने कंडे जलाकर बढ़िया करारे रोट बनाए। उन पर खूब घी व खांड डालकर चूरमा बनाया गया और छत पर बैठे पति के देखते-देखते सारा चूरमा चट कर गईं। बर्तन झूठे ही छोड़ दोनों फिर सो गईं।

वे दिन भर सोई थीं तो नींद तो आनी नहीं थी। नेतली उठी, उसने खेतली को हिलाकर पूछा—क्यों, जाग रही हो न ?

खेतली ने कहा—आधी नींद में हूं।

नेतली बोली—मुझे तो फिर भूख सता रही है।

खेतली ने पूछा—पर रात कितनी बाकी है ?

नेतली बोली—इसकी फिक्र मत करो। अभी तो आधी से कुछ ही ज्यादा रात बीता है।

खेतली—तो क्या करने का विचार है ?

नेतली—खिचड़ी बना लें, हलका ही भोजन है।

पति पड़ोसिन की छत पर उनका तमाशा देखने के लिए छिपकर बैठ गया।

और दोनों ने नए बर्तन में खिचड़ी पकाई। उसमें बहुत सारा घी डाला और लपालप खा गईं। उन्हें खिचड़ी खाते देख छत पर बैठे पति के जी में आया कि छत पर से ही अपने घर में कूदकर दोनों की खबर ली जाए। पर पूरा तमाशा देखने की सोचकर बैठा रहा। खिचड़ी खाकर दोनों सो रहीं।

अब तो दिन उगने को ही था कि खेतली हड़बड़ाकर उठी। उसने नेतली को भी जगाया और कहा—मुंह का जायका खराब हो रहा है, धाणी (भुने हुए गेहूं) भूननी चाहिए।

नेतली ने भी इसका अनुमोदन किया। धाणी भूनी गई। दोनों ने धाणी भूनने की कढ़ाई में से ही धाणी ले-लेकर फांके मारने शुरू कर दिए।

छत पर बैठे पति से अब ठहरा नहीं गया। वह झट अपने दरवाजे पर आया और

पति ने मुस्कराते हुए कहा—परभाते भुंजी धाणी

लगा किवाड़ खटखटाने । दोनों धाणी फांकने में मस्त थीं । खटखट की आवाज सुनकर मुंह पोंछती हुई भागीं और जाकर दरवाजा खोला । सामने पति को देखकर दोनों के होश हिरन हो गए । दोनों ने डरते-डरते पूछा—वापस आ गए ?

पति ने मुसकराते हुए कहा—दो नाग मिले ।

स्त्रियां—कितने-कितने (कितने लम्बे) ?

—शेमली के सांठों जितने ।

स्त्रियां—उनके मुंह कितने-कितने (कितने बड़े)?

पति—दाड़िमदार रोटों जितने ।

स्त्रियां—वे चलते कैसे ?

पति—खिचड़ी में घी डालें जैसे ।

सारा पर्दाफाश होते देख उनके पैरों के नीचे की धरती खिसकने लगी । अन्त में भीगे स्वर में पूछा—यह कैसे जानी ?

पति ने मुसकराते हुए कहा—परभाते भुंजी धाणी ।

दोनों पति के पैरों पड़ गईं और कहने लगीं—हम आपकी गाय हैं । और आइन्दा ऐसा न करने की शपथ ली ।

बहरा जमाई

लाला बुद्धूमल को ससुराल गए बहुत दिन हो गए थे। इसका असल कारण यह था कि वह बहरे हो गए थे और ससुराल में अपनी हंसी नहीं कराना चाहते थे। एक दिन खबर मिली कि ससुरजी बहुत बीमार हैं। खुद की भी इच्छा हुई कि चलकर देख आए और स्त्री ने भी हठ किया, तो जाने के लिए तैयार हो गए। बहरापन छिपाने के लिए उन्होंने निश्चय किया कि शाम को जाऊंगा और सिर्फ ससुरजी से मिलकर वापस आ जाऊंगा। कम-से-कम ससुर से तो कुछ बातें करनी होंगी। इसलिए उन्होंने निम्नलिखित प्रोग्राम सोचा। मैं पूछूंगा—अब आप कैसे हैं ?

ससुरजी कहेंगे—पहले से अच्छा हूं।

यह सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। ईश्वर को धन्यवाद।

फिर मैं पूछूंगा—डाक्टर का नाम ? बताने पर कहूंगा यह अच्छा है कि वह ऐसे अनुभवी डाक्टर के इलाज में हैं। फिर मैं दवा का नाम पूछूंगा। बताने पर कहूंगा कि यही उत्तम दवा है।

इस तरह सोच-विचार कर वह ससुराल को चले। ससुर अधिक चिड़चिड़े हो गए थे। ससुर और बुद्धूमल में इस प्रकार बातें हुईं—

बु०—कहिए कैसे हैं ?

स०—कैसे रहूंगा ? मरे हुए के समान हूं।

बु०—(बिना सुने) वाह ! ईश्वर को धन्यवाद। मैं यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हूं।

ससुरजी खून का घूंट पीकर रह गए।

बु०—आप कौन-सी दवा खा रहे हैं ?

स०—दवा क्या, खाक खा रहा हूं।

ये भी जल्दी से बोल उठे—यह बहुत अच्छी दवा है, आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे।

बेचारे ससुरजी हैरान रह गए।

बु०—आप किस वैद्य के इलाज में हैं ?

ससुरजी तो पहले ही क्रोधित थे। उन्होंने कहा—यमराज के इलाज में हूं।

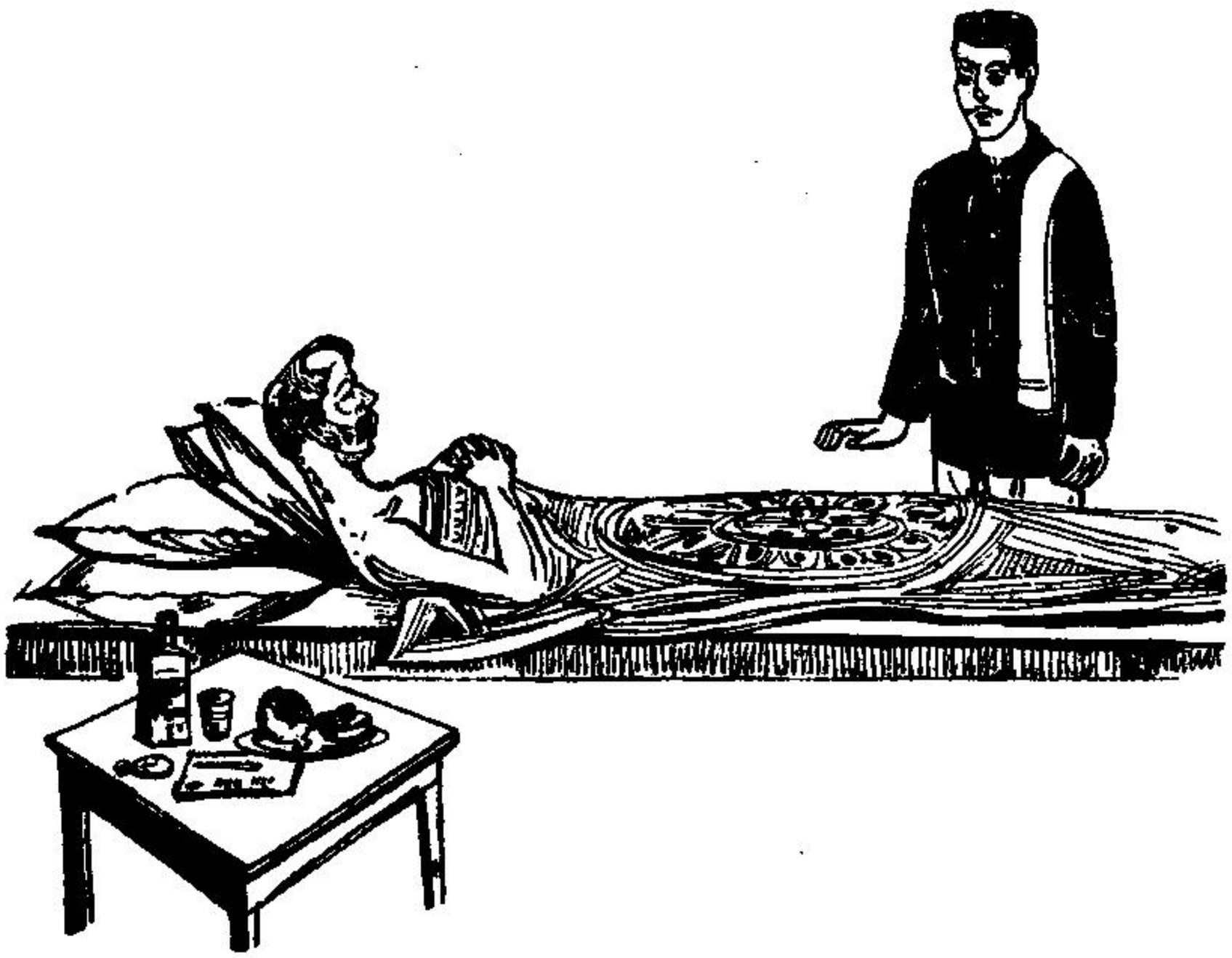

बु०—(हंस कर) बहुत अच्छा, उनसे बढ़कर कोई हो भी नहीं सकता, वह आपको बिल्कुल ठीक कर देंगे ।

बुड्डा चिल्लाया—क्या बहरे हो गए हो ?

ये शब्द उनके कानों तक पहुंच चुके थे । अत: बोले—आखिर आपने समझ ही लिया ।

झबरा की मुसीबत

जब गोपाल स्कूल में भर्ती हुआ था, तब उसका नाम कृष्णगोपाल लिखा गया था। ऐसे अच्छे नाम वाले विद्यार्थी को एक दिन सभी लोग 'झबरा' कहकर पुकारने लगे। उसका यह नाम अचानक क्यों बदल गया, जानते हो ?

तुम लोगों ने एक किस्म का विलायती कुत्ता देखा होगा, जिसके बड़े-बड़े बाल सारे बदन पर लटके रहते हैं। उसके बाल इतने बड़े-बड़े होते हैं कि आंखें, मुंह, कान कहां हैं—इसका ठीक से पता नहीं चलता। ऐसे कुत्ते को साधारण शब्दों में 'झवरा' कुत्ता कहा जाता है।

कृष्णगोपाल अपनी क्लास में पढ़ने में तेज था। सभी लोग उसे प्यार भी करते थे। लेकिन उसमें एक बुरी आदत थी। वह कभी सर के बाल नहीं बनवाना चाहता था। बाल न बनवाने के कारण उसके सर के बाल इतने बड़े-बड़े हो गए थे कि कान के नीचे गर्दन तक लटक आए थे। जब वह स्नान कर बालों को पोंछता, तब उसकी शक्ल 'झवरा' कुत्ते की तरह बन जाती थी।

पिताजी कहते-कहते थक गए, माताजी मनाती रह गईं। बड़े भैया और दीदी उसे लेमनजूस, पतंग और सरकस दिखाने का लालच देते ही रहे। स्कूल के सभी सहपाठियों ने उसको समझाया, चिढ़ाया। मास्टर साहब की तीन बेंतें टूट गईं, पर उसने किसी की बात नहीं मानी। यही वजह है कि लोग उसे कृष्णगोपाल की जगह 'झबरा' कहकर पुकारने लगे। कृष्णगोपाल को अपने नए नाम पर कोई आपत्ति नहीं हुई।

अन्त में एक दिन हेडमास्टर साहब की नजर उस पर पड़ी। पता लगाने पर जब उन्हें कृष्णगोपाल की जिद मालूम हुई, तब उन्होंने उसके पिताजी के नाम एक पत्र भेजते हुए लिखा कि अगर अगले हफ्ते वह बाल बनवाकर नहीं आएगा तो स्कूल के रजिस्टर से उसका नाम काट दिया जाएगा

दूसरे दिन जब यह पत्र गोपाल के घर पहुंचा, तब वहां अजीब हंगामा मच गया। मां, बहन, भाई, सब को बुरा लगा कि नालायक को कैसे समझाया जाए ? पिताजी पढ़ते ही बुरी तरह नाराज हो उठे। बेचारा गोपाल निरीह बकरे की तरह मुंह में अमचूर रखकर चूसने लगा। वे कुछ देर तक बेचैनी से टहलते रहे, फिर गांठ से निकालकर एक रुपया टन्न से जमीन पर फेंकते हुए बोले—गोपाल, उठा रुपया और जा बाल बनवा आ। आज अगर बाल न बनवाए तो खाना-पीना बन्द।

कृष्णगोपाल निर्विकार भाव से रुपया जेब में रखकर हज्जाम की खोज में निकल पड़ा। सौभाग्य से उसे अधिक दूर नहीं जाना पड़ा। गली के मोड़ पर उसकी मुलाकात खदेरू से हो गई। खदेरू हज्जाम नहीं है, उसका सहपाठी है।

कृष्णगोपाल को देखते ही खदेरू प्रसन्न हो उठा। पूछा—क्यों रे झबरे, कहां जा रहा है?

कृष्णगोपाल ने उसके कान के पास रुपया ठन्न से बजाते हुए कहा—बाल बनवाने।

कृष्णगोपाल के हाथ में पूरा रुपया देखकर खदेरू चकित रह गया। खुजलाते हुए उसने कहा—क्या कहा, बाल बनवाने? अरे यार, बाल बनवाने में भला कहीं एक रुपया लगता है?

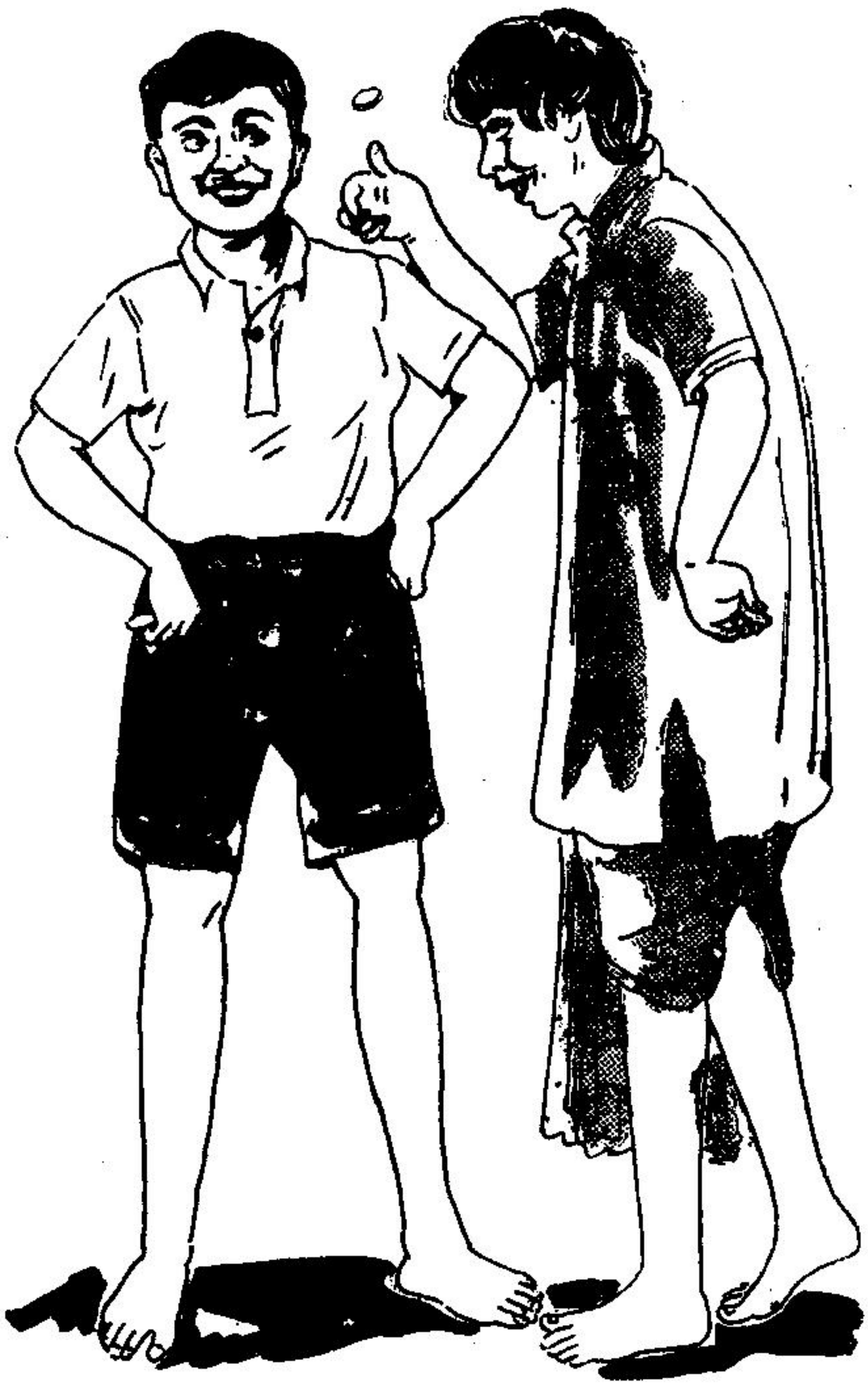

—कृष्णगोपाल ने उसके कान के पास रुपया ठन्न से बजाते हुए कहा—बाल बनवाने।

कृष्णगोपाल ने उसके सर पर हाथ फेरते हुए कहा—तेरे सिर पर तो बाल बहुत कम हैं, अगर सैलून में तेरा आठ आना लगता है तो यहां तो पूरा जंगल है, एक रुपये से कम क्या लगेगा ? डबल बाल, डबल मेहनत। एक बार छांटेगा और एक बार काटेगा।

अचानक खदेरू की बुद्धि तीव्र हो गई। उसने कहा—तू तो है पूरा बेवकूफ। भला बाल बनवाने के लिए पूरा एक रुपया खर्च करना चाहिए ? मुंडन थोड़े ही होगा। मेरी सुन, बुआ की कैंची देखी है न ? इतनी बड़ी-सी है। मैं उस कैंची से तेरे सिर के बाल कच-कच करके काट दूंगा। एक पैसा भी खर्च नहीं होगा।

खदेरू की सलाह गोपाल को पसन्द आ गई। आम के आम गुठली के भी दाम। इधर बाल भी बनवा लेगा और उधर पैसे भी बच जाएंगे। पिताजी ने रुपया सिर्फ इसलिए दिया है कि बाल बनवा लूं। चाहे मैं सैलून में बनवाऊं या खदेरू हज्जाम से। गोकि खदेरू हज्जाम नहीं है, उसका प्रिय मित्र है। इसी को कहते है—दिमाग ! खदेरू के पास दिमाग है।

खदेरू उसे घसीटता हुआ अपने यहां सबसे ऊपर वाली छत पर ले गया। इसके बाद दौड़ कर नीचे से एक बोरा ले आया। बोरा खोलते हुए खदेरू ने कहा—ले, बोरे के भीतर घुस जा।

कृष्णगोपाल ने चौंककर पूछा—बोरे के भीतर क्यों ?

खदेरू ने कहा—तू पूरा काठ का उल्लू है। सैलून में देखता नहीं जब लोग बाल बनवाते हैं, तब उनके चारों तरफ कपड़ा ओढ़ा देते हैं, ताकि जो बाल कटकर गिरेंगे, वे बदन पर न गिरें।

मन-ही-मन खदेरू की बुद्धि की प्रशंसा करते हुए कृष्णगोपाल बोरे के भीतर घुस गया। इसके बाद खदेरू ने बोरे को नीचे से अच्छी तरह खींचकर गले के पास बोरे का मुंह ले जाकर कसकर बांध दिया और स्वयं एक कुर्सी पर उकडूं होकर बैठ गया। बोरे के भीतर गोपाल का सारा बदन बन्द था केवल गर्दन के ऊपर का हिस्सा बाहर दिखाई दे रहा था। इतना सब करने के बाद खदेरू ने एक जेब से बड़ी-सी कैंची निकाली और दूसरी जेब से एक टूटी हुई कंघी। फिर कंघी से उसके सर के बालों को वह ऊपर खड़ा करने का प्रयत्न करने लगा।

कैंची का आकार-प्रकार देखकर बड़े करुण स्वर में कृष्णगोपाल ने पूछा—क्यों रे खदेरू ! खून-ऊन तो नहीं निकलेगा ?

फिजूल की बात कौन सुनता है ? तब तक खदेरू घास काटने की तरह दनादन उसके सर के बालों को काटने लगा था। बिना हाथ रोके उसने कहा—हुं, खून क्यों निकलेगा ? बाल बनाना भी क्या कोई कठिन काम है, जो खून निकाल दूंगा ? सब हज्जाम मुफ्त में पैसा ले लेते हैं। सर पर कैंची तो हमसे छोटे बच्चे भी मजे में चला सकते हैं।

—"खदेरू भाई, चिकोटी क्यों काट रहे हो?" इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिला। उधर सर पर कैंची चलती रही—कचर-कच, कचर-कच....

अब खदेरू पीछे से कच-कच करता हुआ सामने की ओर आया। जब इधर कच-कच करके वह बाल काटने लगा तब बड़े-बड़े बाल कृष्णगोपाल की नाक पर गिरने लगे। बोरे के भीतर काफी देर तक उकड़ू होकर बैठे रहने के कारण वह घबरा उठा था।

खदेरू भाई चिकोटी क्यों काट रहे हो ?

इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिला। उधर सर पर कैंची चलती रही—कचर-कच कचर-कच····।

अचानक कृष्णगोपाल चीख उठा—अरे खदेरू, बाल काट रहा है या उखाड़ रहा है ? बाप रे ! जान गई।

खदेरू ने उसके सर पर तीन-चार बार कंघी ठोकते हुए कहा—चुपचाप बैठा रह, वर्ना कैंची इधर-उधर हो जाएगी। घर जा कर आइने में देख लेना।

इतना कहकर खदेरू फिर कैंची चलाने लगा। वह रह-रहकर उसकी गर्दन ऐसी मरोड़ देता था, जैसे बढ़ई पेचकस से पेच कसते हैं। अगर कृष्णगोपाल बोरे के भीतर बन्द न होता तो अब तक भाग गया होता। इसी तकलीफ के कारण वह बाल बनवाने से हमेशा बचता आया है लेकिन आज उसी मुसीबत का सामना करना पड़ा। अचानक फिर कृष्णगोपाल चीख उठा—अरे बाप रे! तू तो मेरी जान ले लेगा। मेरे कान में लग रहा है।

खदेरू ने उसके सर को दोनों घुटनों के भीतर फंसाते हुए कहा—चुप रह! इतना चिल्ला मत। बाजू से कटिंग कर रहा हूं। इसमें ज़रा लगता है। कितनी फर्स्ट क्लास कटिंग कर रहा हूं, यह तब मालूम होगा, जब अपनी शक्ल आइने में देखेगा।

कृष्णगोपाल के हाथ-पैर अगर स्वतंत्र होते तो वह आज खदेरू की सारी हज्जामगिरी भुला देता, पर अफसोस कि वह बोरे में बुरी तरह बंधा हुआ था। कुछ देर तक इधर-उधर कैंची चलाने के बाद खदेरू ने कहा—फिनिश!

बोरे के भीतर से मुक्ति पाकर कृष्णगोपाल ने सर पर हाथ फेरते हुए बड़े आराम से लम्बी सांस ली। अब उसे ऐसा लग रहा था, मानो माथा काफी हलका हो गया।

खदेरू ने कहा—अब मेरा मेहनताना दे।

—आ तू भी क्या कहेगा!—कहता हुआ कृष्णगोपाल फेकू पकौड़ीवाले की दुकान पर आया।

फेकू पकौड़ीवाला कृष्णगोपाल को अच्छी तरह पहचानता है, फिर भी उसने एक बार उसके सिर को गौर से देखने के बाद पूछा—क्यों छोटे बाबू! विन्ध्याचल गए थे क्या?

—नहीं तो। कृष्ण गोपाल कुछ समझ नहीं पाया।

—ये बाल.....

फेकू इतना ही कह पाया था कि खदेरू तुरन्त सब समझते हुए बोला—तुम यह सब नहीं समझ पाओगे। अब जरा चटपट आठ आने में पकौड़ी, मलगजा, फुलौरी और आलूचाप मिलाकर दे दो।

फेकू ने कहा—ठीक है, मैं गंवार आदमी ठहरा।—पकौड़ी का दोना देते हुए उसने कहा—लो भइया!

फेकू की दुकान पर जितने ग्राहक खड़े थे, सभी की नजरें कृष्णगोपाल के सर पर थीं। लोग आश्चर्य से देख रहे थे। कुछ मुस्करा भी रहे थे। मामला ठीक नहीं है, समझकर खदेरू

कृष्णगोपाल को घसीटता हुआ बगल की गली में घुस गया। पास ही एक चबूतरे पर बैठकर दोनें पकौड़ी-फुलौरी पर हाथ साफ करने लगे।

आलूचाप खाते हुए खदेरू ने कहा—देखा! ऐसे बाल बनाए हैं कि लोग टकटकी बांध कर तेरी ओर देख रहे थे। इसी को कहते हैं—कारीगरी!

बाल बनवाते समय कृष्णगोपाल को काफी तकलीफ हुई थी परन्तु इस वक्त प्रशंसा सुन कर वह प्रसन्न हो उठा। सब कुछ खा-पीकर दोनों अपने-अपने घर चले गए।

कृष्णगोपाल जब अपने घर आया, तब दोपहर का एक बज रहा था। माताजी उसके आने की प्रतीक्षा कर रही थीं। उसे घर में प्रवेश करते देख नाराज होकर बोलीं—अब तक

बड़े भैया कुछ बोले नहीं। वह दौड़े हुए कमरे में गए और एक आईना लाकर दिखाते हुए बोले—जरा अपनी सूरत देख ले।

कहां था ? बाल बनवाने में इतनी देर कैसे लगी ?—अब जो उनकी नजर कृष्णगोपाल के सर पर पड़ी तो वह सहसा चीख पड़ीं—हाय भगवान ! यह क्या हुआ रे !

माताजी की आवाज सुनकर बड़े भैया बाथरूम से दौड़े हुए आए । वह भी कृष्णगोपाल का सर देखते ही बुरी तरह चीखते हुए बोले—अरे ! कौन कहां है ? जरा जल्दी आओ । झबरा के बाल बकरी कैसे चर गई है, देखो तो !

बड़ी दीदी दौड़ी हुई तमाशा देखने आई । लेकिन यह क्या ? वह तो सिर्फ—बाबूजी, झबरा—— ! कहती हुई मुंह फेरकर खड़ी हो गई ।

पिताजी ऊपर छत पर थे । वह भी जल्दी से नीचे आए । पास आकर वह भी भौचक्के रह गए । वह अधिक कुछ नहीं कह सके । बोले—कौन हज्जाम था रे ?

कृष्णगोपाल इन लोगों की हालत देखकर बुरी तरह घबरा गया था । आखिर लोग ऐसा क्यों कह रहे हैं, समझ नहीं पा रहा था ? पिताजी के प्रश्न के जवाब में वह फफककर रो पड़ा —खदेरू ।

पिताजी ने कहा—हूं ।

पाताजी बोलीं—अब इसका सर घुटवा दो ।

बड़े भैया कुछ बोले नहीं । वह दौड़े हुए कमरे के भीतर गए और एक आइना लाकर दिखाते हुए बोले—जरा अपनी सूरत देख ले ।

आइने में अपनी शक्ल देखते ही कृष्णगोपाल को खदेरू की बातें याद आ गईं—घर जाकर आइने में देख लेना ।

इसके बाद बेचारा पुनः बाल मुड़वाने सैलून में चला गया ।

[बंगला कहानी का स्वतन्त्र अनुवाद]

कलमुंही मुंगरी

एक समय की बात है कि किसी गांव में एक किसान और उसकी पत्नी रहते थे। उनके एक बेटी थी। एक दिन संध्या समय वह कोठरी में से सामान निकालने गई। छत की एक कड़ी में एक मुंगरी (लकड़ी की हथौड़ी) खोंसी थी। मुंगरी देखकर वह सोचने लगी—अरे! यह मुंगरी कितनी खतरनाक जगह रखी है। मान लो, कल मेरा ब्याह हो जाए और मेरे चांद-सा बेटा हो, जो बड़ा होकर इस कोठरी में आए और यह मुंगरी उसके सिर पर गिर पड़े और वह मर जाए तो कितना अनर्थ हो जाएगा?

यह बात सोचते ही दीया और बाल्टी नीचे रखकर वह जमीन पर बैठ गई और लगी जोर-जोर से विलाप करने।

बेटी को देर लगाते देखकर उसकी मां कोठरी में पहुंची। वहां अपनी बेटी को बैठकर रोते देखकर वह बड़ी हैरान हुई और बोली—अरी छोकरी! तुझे क्या हुआ है? तू बैठकर रो क्यों रही है?

—मां—बेटी ने रोते हुए कहा—जरा उस कलमुंही मुंगरी को तो देख! अगर मेरा ब्याह हो जाए और मेरे चांद-सा बेटा हो, जो बड़ा होकर इस कोठरी में आए और यह मुंगरी उसके सिर पर गिर पड़े और वह मर जाए तो कितना अनर्थ हो जाएगा?

—दैया री, बहुत बड़ा अनर्थ हो जाएगा!—मां ने चीख मारी और बेटा के पास बैठकर वह भी विलाप करने लगी।

जब मां-बटी बहुत देर तक लौटकर नहीं आईं, तब किसान बड़ा असमंजस में पड़ा। उनकी खबर लेने वह भी कोठरी में पहुंचा। वहां मां-बेटी को बैठकर रोते देखकर वह बड़ा हैरान हुआ और बोला—अरे, क्या बात हो गई? तुम दोनों रो क्यों रही हो?

मां ने धाड़ मारकर कहा—अरे, उस कलमुंही मुंगरी को तो देखो, अगर कल बिटिया का ब्याह हो जाए और वह एक चांद-से बेटे को जन्म दे, जो बड़ा होकर इस कोठरी में आए और यह मुंगरी उसके सिर पर गिर पड़े और वह मर जाए तो कितना बड़ा अनर्थ हो जाएगा?

—दैया रे, बड़ा अनर्थ हो जाएगा!—कहते-कहते बाप भी मां-बेटी के साथ बैठकर विलाप करने लगा।

—हैया री, बहुत बड़ा अनर्थ हो जाएगा!—मां ने चीख मारी और बेटी के पास बैठकर वह भी विलाप करने लगी।

इधर उनका होने वाला दामाद उनसे मिलने आया हुआ था। जब उसने देखा कि तीनों गए और कोई भी लौटकर नहीं आया तो उनकी खबर लेने वह भी कोठरी में पहुंचा। वहां तीनों को रोते देखकर उसे बड़ा अचम्भा हुआ और बोला—अरे, क्या हो गया ? तुम लोग रो क्यों रहे हो ?

बाप ने धाड़ मारते हुए कहा—अरे, बेटा ! जरा उस कलमुंही मुंगरी को तो देख। अगर तेरे साथ हमारी बिटिया का ब्याह हो जाए और तुम्हारे चांद-सा बेटा हो, जो बड़ा होकर इस कोठरी में आए और मुंगरी उसके सिर पर गिर पड़े और वह मर जाए तो कितना बड़ा अनर्थ हो जाएगा ?—और फिर तीनों—मां-बेटी और बाप—एक स्वर से विलाप करने लगे।

इस पर भावी दामाद ठहाका मारकर हंस पड़ा। हाथ बढ़ाकर उसने मुंगरी उतार ली और एक तरफ फेंकते हुए बोला—मैंने देश-विदेश की यात्रा की है, पर आप जैसे मूर्ख लोग मैंने कहीं नहीं देखे। अब मैं फिर यात्रा पर निकलता हूं। जब मुझे आप लोगों से भी अधिक मूर्ख आदमी मिल जाएगा तब मैं लौट पड़ूंगा और आकर आपकी बिटिया से ब्याह कर लूंगा।

—मैंने देश-विदेश की यात्रा की है, पर आप जैसे मूर्ख लोग मैंने कहीं नहीं देखे।

इतना कहकर वह यात्रा पर निकल पड़ा।

चलते-चलते वह एक बुढ़िया के मकान के पास पहुंचा। बुढ़िया अपनी गाय को सीढ़ी द्वारा छत पर चढ़ाने की कोशिश कर रही थी। बेचारी गाय की शामत आ गई थी। यह देखकर वह बुढ़िया के पास आया और पूछने लगा—यह तुम क्या कर रही हो ? कभी गाय भी सीढ़ी चढ़ती है ?

बुढ़िया ने जवाब दिया—अरे, देखते नहीं ! मेरी छत पर इतनी बढ़िया घास उगी है। गाय को छत पर छोड़ दूंगी तो आराम से चरती रहेगी और मैं भी निश्चिन्त हो जाऊंगी, क्योंकि इसके गले में रस्सी बांध दूंगी और रस्सी का सिरा चिमनी में से निकालकर अपनी कमर में बांध लूंगी और बेफिक्र होकर काम करती फिरूंगी। अगर गाय ऊपर से गिर भी पड़ी तो मुझे तुरन्त मालूम हो जाएगा।

बुढ़िया की मूर्खता देखकर वह बोला—अरी, मूर्ख बुढ़िया ! ऊपर से घास काट ला और गाय के आगे डाल दे। गाय सीढ़ियां नहीं चढ़ सकती।

पर बुढ़िया नहीं मानी। वह समझती थी कि घास काटकर नीचे लाने से गाय को सीढ़ी द्वारा छत पर चढ़ाना आसान है। सो, गाय को धकेल-धकेलकर उसने ऊपर चढ़ा ही दिया। फिर उसके गले में रस्सी बांध, रस्सी का एक सिरा चिमनी में से निकालकर उसने अपनी कमर में बांध लिया और घर के काम में लग गई। पर थोड़ी ही देर में गाय छत पर से लुढ़क पड़ी और रस्सी से लटक गई, जिससे उसका दम घुट गया। उधर, गाय के गिरने से बुढ़िया भी खिंचकर चिमनी में फंसकर मर गई

वहां से वह आगे बढ़ा। रात को वह एक सराय में ठहरा। चूंकि सराय यात्रियों से खचाखच भरी थी इसलिए उसे एक अन्य यात्री के कमरे में ठहराया गया। पर सुबह जब उसकी आंखें खुलीं तो उसने देखा कि साथी यात्री खूंटी पर टंगी पतलून पर उछल-कूद मचा रहा है। वह कमरे के एक कोने से दौड़कर आता और पतलून पर उछलता था। यह देखकर वह बड़ा हैरान हुआ। तभी यात्री थक-हारकर बैठ गया और लगा बड़बड़ाने—यह पतलून भी अज़ीब पहनावा है। जाने किस सिरफिरे ने इसकी ईजाद की थी। हर रोज पतलून पहनने में ही मेरे कई घंटे जाया जाते हैं।—फिर अपने साथी की ओर याचना-भरी दृष्टि से देखते हुए बोला—आप ही कोई आसान तरीका बता दें न ! हर रोज की जहमत से बच जाऊंगा।

यह सुनकर वह ठहाका मारकर हंस पड़ा और यात्री पर तरस खाकर उसने पतलून पहनने का सही तरीका उसे बतलाया। यह देखकर यात्री के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। बोला—अरे, इतना आसान तरीका ! इसकी तो मैंने कल्पना भी नहीं की थी।

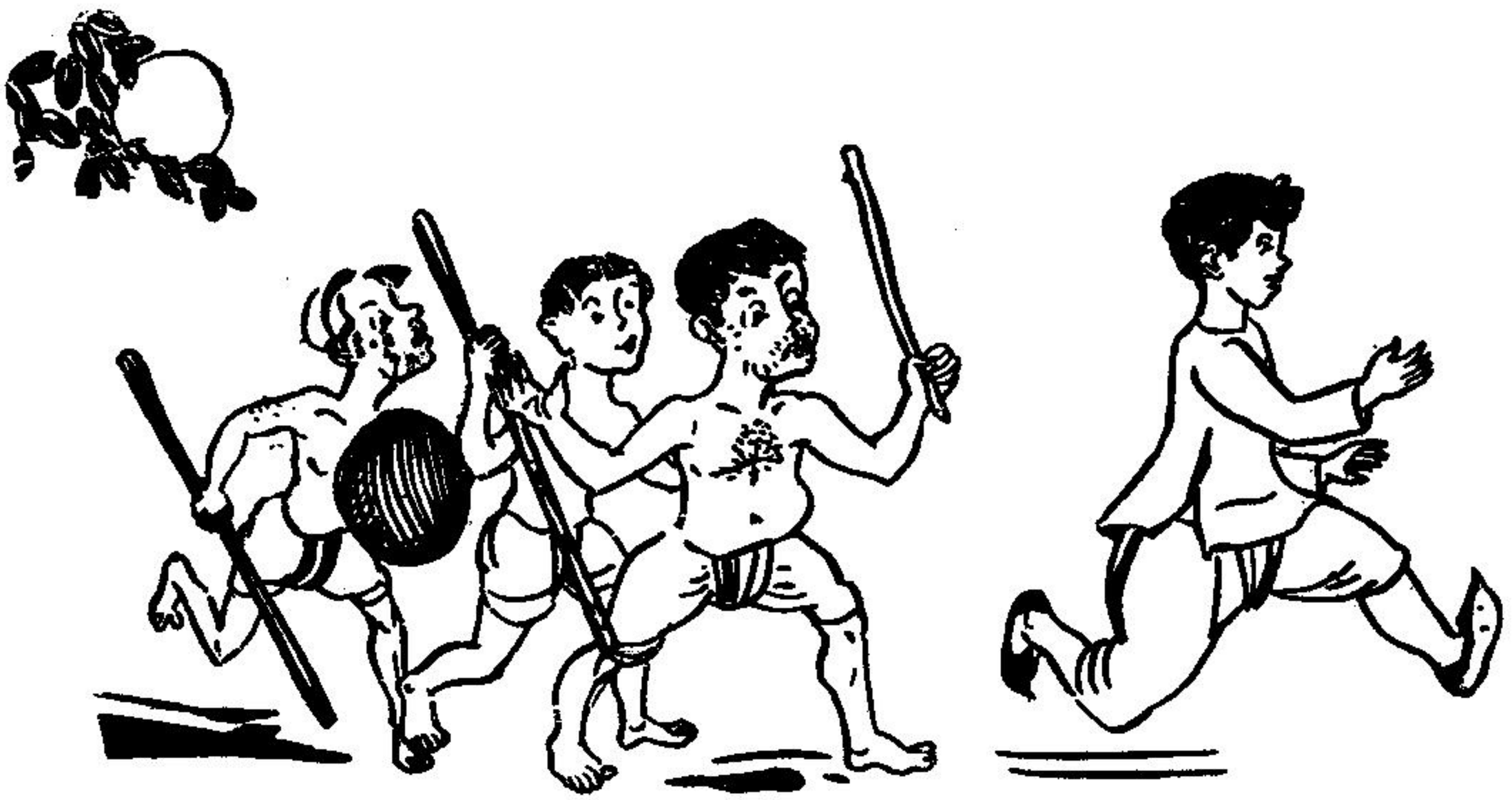

यह सुनते ही गांववाले भड़क उठे और बांस हेंगिया और झाड़ लेकर उसके पीछे दौड़े। बड़ी मुश्किल से बेचारा जान बचाकर भागा।

वहां से वह आगे बढ़ा। चलते-चलते वह एक गांव में पहुंचा। गांव के बाहर तालाब के किनारे गांववालों का जमघट लगा था और कुछ लोग हाथ में हेंगिया, बांस, झाड़ लेकर तालाब में घुसे हुए थे। आगे बढ़कर उसने पूछा—यह आप लोग क्या कर रहे हैं ?

एक ने बताया—अरे, देखते नहीं ! तालाब में चांद गिर पड़ा है और अब हमसे निकाले नहीं निकलता ।

यह सुनकर वह खिलखिलाकर हंस पड़ा और बोला—अरे, भलेमानसो ! ऊपर आसमान की ओर देखो। चांद की परछाई पानी में दिखाई दे रही है, बेकार क्यों माथा फोड़ रहे हो ?

यह सुनते ही गांववाले भड़क उठे और बांस, हेंगिया, झाड़ू लेकर उसके पीछे दौड़े। बड़ी मुश्किल से बेचारा जान बचाकर भागा

आखिर, उसे विश्वास हो गया कि इस दुनिया में किसान, उसकी पत्नी और बेटी से भी बढ़कर मूर्ख भरे पड़े हैं। यह सोचकर वह वहीं से लौट पडा और आकर उसने किसान की बेटी से ब्याह कर लिया।

पर इसके बाद यदि दोनों का जीवन सुख से नहीं बीता तो इससे न तुम्हारा मतलब है न मेरा। मैंने कहानी सुना दी, तुमने सुन ली! क्या इतना ही काफी नहीं है ?

[एक अंग्रेजी लोककथा के आधार पर]

नींबू-निचोड़

एक थे मियां। पहले उनका नाम कुछ भी रहा हो, परन्तु अब वे नींबू-निचोड़ के नाम से प्रसिद्ध थे। उनका काम था यात्रियों की दाल में नींबू निचोड़ना। यही उनकी जीविका भी थी। वह रहते थे सराय की एक कोठरी में, जिसमें उनके बहुत से साथी जैसे—मकड़ी, मच्छर और खटमल भी रहते थे।

जब कोई यात्री सराय में आकर ठहरता और उसका भोजन बनकर तैयार होता, तो मियां झट कोठरी के बाहर आकर टहलने लगते और ज्यों ही वह खाने बैठता, वह नींबू और चाकू लेकर आ जाते और मना करते-करते भी दाल में नींबू निचोड़ ही देते और साथ खाने बैठ जाते। क्योंकि उनकी तो यही जीविका ठहरी।

एक बार एक फौजी सिपाही सराय में आकर ठहरा। उसने सराय वाले से कहा—यह लो एक रुपया और भोजन इत्यादि तैयार करो। मुझे इसी समय जाना है। जल्दी करना।

सराय वाले ने कहा—यह तो केवल आप ही के लिए काफी होगा।

सिपाही ने आश्चर्य से कहा—तुम तो देखते ही हो, मैं अकेला ही हूं।

सराय वाले ने मुसकराते हुए कहा—यहां एक नींबू-निचोड़ महाशय भी रहते हैं। वह बिना नागा यहां पर ठहरने वाले यात्रियों के साथ भोजन करते हैं तथा बदले में अपना बढ़िया नींबू उनकी दाल में निचोड़ देते हैं।

सिपाही ने पूछा—बिना बुलाए ? बे-इजाजत ?

सराय वाले ने धीरे से कहा—जी हां

सिपाही ने बड़े क्रोध से कहा—किसी धुनिए जुलाह के साथ वह ऐसा कर लेता होगा। मैं पठान हूं, पठान ! मेरे साथ उसने ऐसी हरकत की, तो खुदा की कसम बिना मजा चखाए न रहूंगा।

जब खाना पक गया और सिपाही खाने बैठा, तो उसने देखा कि एक ठिगने और गोल-मटोल महाशय, नींबू और चाकू लिए चले आ रहे हैं। सिपाही तो तैयार बैठा ही था, उसने ललकार कर कहा—खबरदार ! मैं तुम्हारी तारीफ सुन चुका हूं, नजदीक न आना।

पर नींबू-निचोड़ भला क्यों मानने लगे ? मुसकराते हुए आ धमके ।

उन्होंने बड़ी तमीज से नींबू काटते हुए कहा—जनाव, नाराज क्यों होते हैं ? ज़रा नींबू का जायका तो लें । ओहो, कैसा खुशनुमा, कैसा लजीज !

सिपाही ने और ताव में आकर कहा—ना, ना, खबरदार ! दूर ही रहो, नहीं तो गजब हो जाएगा । मैं नींबू पसन्द नहीं करता ।

परन्तु नींबू-निचोड़ ने सिपाही के ना-ना करते-करते भी नींबू निचोड़ ही दिया और फिर बड़े कोमल स्वर में कहा—जनाब जरा स्वाद तो चखिए ! अरे, आप तो चुप बैठे हैं । अच्छा, तो आइए मैं ही शुरू करता हूं । वाह, क्या कहना है !

सिपाही बेचारा हैरान और परेशान । उसकी समझ में न आया कि क्या करे? परिस्थिति एकदम नई थी । उसे कुछ न सूझ पड़ा, तो उसने नींबू-निचोड़ के दोनों हाथ पकड़ लिए । आदमी मजबूत और तगड़ा था; नींबू-निचोड़ हाथ न छुड़ा सके ।

पर वह इससे बाज आने वाले कहां थे ? वह तो पुराने खिलाड़ी थे । जब कोई वश चलते न देखा, तो झट से खाने में मुंह अड़ा दिया और लगे बड़ाई हांकने—वाह, वाह क्या कहना है !

उसके दोनों हाथ छोड़ खिसियाकर उसने अपना फौजी जूता निकाला और वह लगा उसके सर पर तड़ातड़ जमाने ।

सिपाही का विस्मय धीरे-धीरे कम हो गया था। अब वह अधिक सहन न कर सका और उसके दोनों हाथ छोड़ खिसियाकर उसने अपना फौजी जूता निकाला और वह लगा उसके सर पर तड़ातड़ जमाने।

हाथ छूट जाने से नींबू-निचोड़ की बन आई और वह लम्बे-लम्बे हाथ साफ करते जाते थे — वाह, क्या कहना है! मेरे अब्बाजान भी मुझे इसी तरह मार-मार कर खिलाया करते थे क्योंकि मैं बहुत बुलाने पर भी खुद खाने न जाता था। शायद यह जूता इसी काम के लिए बनाया जाता है क्योंकि उनके हाथ में भी इसी तरह का एक रहता था।

मुहावरापुरी

विजय —भाई श्याम ! आज तो बहुत थक गऐ। घूमते-घूमते यह ध्यान ही नही रहा कि घर से कितनी दूर निकल आऐ !

श्याम --हम यह भी तो मालूम नहीं कि हम इस समय कौन से गांव में खड़े हैं। चलो सामने उस दुकान पर बैठकर थोड़ा-सा सुस्ता भी लें और गांव का नाम भी पूछ ल। (चलते हैं)

विजय --भाई दुकानदारजी ! जय रामजी की ! हम बहुत थक गए हैं, क्या यहां पर थोड़ी देर बैठकर विश्राम कर लें ?

दुकानदार —हूं ! **जान-न-पहचान बड़े मियां सलाम**। जब तुम्हारा-मेरा परिचय ही नहीं है, तो तुम मुझसे जय रामजी की क्यों कर रहे हो ? अरे ! तुम्हार **अंग-अंग ढीले** हो रहे हैं, तो मैं क्या करूं ? **चलते-फिरते नजर आओ** यहां से !

श्याम —बड़े विचित्र आदमी हो यार! किस तरह बातें करते हो ? क्या तुम्हा इस गांव में अतिथियों के साथ ऐसा ही बर्ताव किया जाता है ?

दुकानदार —अरे वाह ! **मान न मान मैं तेरा मेहमान**। जब मैं तुम्हें जानता तक नहीं, तो तुम मेरे अतिथि कैसे हुए ? तुम लोग मुझे **उल्ल बनाकर** मेरी दुका पर **अड्डा जमाना** चाहते हो, सो यह सब यहां नहीं चलने का

विजय —भाई ! यह अड्डा जमाना क्या होता है ? और हम तुम्हारी दुकान पर इसे क्यों जमाने लगे ?

श्याम —हम आपको उल्लू कैसे बना सकते हैं, दुकानदारजी ?

दुकानदार —अरे ! तुम मुझे **बातों-ही बातों में बहकाकर** हमेशा के लिए दुकान पर रहने लग जाओगे और क्या ? **बात तो ऐसी बनाते हैं** जैसे कुछ समझते ही नहीं बेचारे !

विजय —यार श्याम ! इस गांव के लोग तो बड़े वहमी नजर आते हैं। अच्छा श्रीमान्! आप हमें यहां विश्राम मत करने दीजिए, पर कम-से-कम इस गांव का नाम तो बता दीजिए ।

—अरे! तुम्हारे अंग-अंग ढीले हो रहे हैं, तो मैं क्या करूं?
चलते-फिरते नजर आओ यहां से!

दुकानदार —नाम से तुम्हें क्या काम? नाम बड़े और दर्शन छोटे। सुनो! इस गांव का नाम तो बहुत बड़ा है—मुहावरापुरी। पर यह सचमुच में है एक छोटा-सा गांव। क्या समझे? जिस जगह पर तुम खड़े हो, इसका नाम है लोकोक्ति गली और यह कहावत चौक में जाकर समाप्त होती है, पर कान खोल कर सुन लो, जब तक तुम लोग यहां की भाषा में बात करना सीखकर नहीं आओगे यहां तुम्हारी दाल नहीं गलेगी।

श्याम —(आश्चर्य से)—मुहावरापुरी! लोकोक्ति गली! कहावत चौक! यार विजय हम कहां आ फंसे?

विजय —दुकानदारजी, कान तो हमारे खुले हुए हैं, पर दाल तो हमारे पास है ही नहीं, गलेगी कहां से?

दुकानदार —कैसे मूर्खों से **पाला पड़ा है** ? अरे बाबा ! कान खोलकर सुनने का अर्थ है कि मेरी बातों को ध्यान से सुनो और समझो । दाल गलने का अर्थ है कि मुहावरों की भाषा में बोले बिना यहां तुम्हारा काम नहीं चलेगा । अब तुम लोग **हवा होते हो** यहां से या **हड्डी-पसली तुड़वाने** की इच्छा है ?

श्याम —अरे ! हमारी हड्डी-पसली तोड़कर उनका क्या बनाएंगे और आदमी से हम हवा कैसे बन जाएं ?

दुकानदार —अब मैं तुमसे एक बात भी नहीं करना चाहता । तुम लोग मुहावरों की भाषा में बोलना तो जानते नहीं, बिना काम **मेरा सिर खाए जा रहे हो** ।

श्याम —हम तो आप से इतनी दूर खड़े हैं । हमने आपका सिर कहां खाया ?

विजय —अरे, चुप भी रह श्याम ! समझता तो है नहीं । सिर खाने से इनका इशारा शायद बिना काम करने से है । क्यों दुकानदारजी ! क्या यहां सब बातें मुहावरों में ही की जाती हैं ?

दुकानदार —हां, इसे तुम **पत्थर पर लकीर** समझो और अच्छी तरह से अपने **हृदय पर लिख लो** ।

विजय —समझ गए दादा गुरु ! हमारे स्कूल में मास्टरजी ने हमें मुहावरे पढ़ाए तो थे, पर हमने ही उन्हें याद करने में लापरवाही की । अब क्या करें ? हम तो अपने मुहावरों की किताब भी घर पर ही छोड़ आए ।

दुकानदार —अरे छोकरो ! **कंठ की विद्या और जेब का पैसा** ही समय पर काम देता है । स्कूल में तो तुमने मुहावरे पढ़े नहीं और अब पछता रहे हो पर **अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियां चुग गईं खेत** ।

श्याम —अरे हम चिड़ियों को खेत कैसे चुगने देंगे ? हाथ में जो डंडा रखते हैं । और बताओ ! कहां हैं खेत और कहां हैं चिड़ियां ?

दुकानदार —अरे **बछिया के ताऊ**, जब समय ही निकल गया, तो तेरा डंडा क्या कर लेगा?

श्याम —(बड़े जोर से हँसकर) बछिया के ताऊ ! आ···हा···हा···हा । हम तो समझते थे कि हमारे ही ताऊजी हैं पर आज मालूम हुआ कि हम भी किसी के ताऊजी हैं ।

विजय —श्याम ! यह तो बड़ी दिलचस्प जगह है । चलो, थोड़ा आगे चलकर देखें । (चलते हैं) वह, देखो कुएं पर कुछ लड़कियां पानी भर रही हैं, वहां चलकर पानी पीएं । (कुएं पर जाते हैं)

श्याम —दीदी ! हम प्यासे हैं । थोड़ा पानी पिला दो न !

लड़की —पहले तो तू यह बता कि तूने मुझे दीदी क्यों कहा ?

श्याम — अपना काम पड़ने पर तो गधे को भी बाप बना लिया जाता है। फिर आप तो हमसे बड़ी हैं, दीदी बना लिया तो क्या हुआ ?

माते का बोलबाला और जाते का मुंह काला। तुम लोग यहां से जाना चाहते हो न? इसीलिए मैंने तुम्हारे मुंह काले कर दिए।

लड़की —(खुश होकर) अच्छा, तो लो पानी पियो (पानी पिलाती है)। आओ, आज मेरी कुटिया में ही थोड़ी-देर **पैर फैलाकर बैठो** ।

विजय —दीदी ! यहां के सब मकानों पर छप्पर-ही-छप्पर क्यों हैं ? क्या यहां पक्के मकान नहीं बनते ?

लड़की —भैया ! क्या तुम नहीं जानते कि **कोठा वाला रोए और छप्पर वाला सोए ।** इसीलिए हम अपने मकानों पर छप्पर डालते हैं और फिर भगवान जब देता है, तो **छप्पर फाड़कर ही देता है,** छत फोड़कर नहीं ।

श्याम —दीदी, कुछ खाने को दो न । हमारे पेट में तो **चूहे कूदने लगे हैं** ।

लड़की —हां ! हां लो, यह रूखी-सूखी रोटी खाकर उस मटके में से **ठंडा पानी पी लो।**

विजय —दीदी, रोटी तो एकदम सूखी हुई है और इस पर कोई सब्जी भी नहीं है । हम इसे कैसे खाएं ?

लड़की —अरे ! **रूखा सूखी खायके, ठंडा पानी पी, देख पराई चूपड़ी, मत ललचावै जी** ।

श्याम —पर आज तो हम तुम्हारे मेहमान हैं दीदी, **मुंह तो मीठा कराओ** ।

लड़की —देखो, **घी गुड़बाजी और सब दगाबाजी** । घी गुड़ के सिवा और तो सब चीजों में मिलावट होती है । लो, तुम यह गुड़ खाकर मुंह मीठा कर लो ।
(लड़की चुपके से उनके कान में नख चुभो देती है । दोनों जोर-जोर से रोते हैं ।)

विजय —(रोता हुआ) हाय ! ये मेरे कान क्यों छेद डाले ?

लड़की —तो इतना चिल्लाते क्यों हो ? **कान छिदाए सोई गुड़ खाए** तुमने गुड़ मांगा, तो मैंने तुम्हारे कान छेद दिए ।

विजय —अच्छा दीदी ! अब हम जाते हैं ।

लड़की —जाओगे ? अच्छा ठहरो (दोनों के मुंह काले कर देती है) ।

विजय —अरे ! वाह रे ! ये हमारे मुंह क्यों काले कर दिए ?

लड़की —क्यों ? **आते का बोलबाला और जाते का मुंह काला** । तुम लोग यहां से जाना चाहते हो न ? इसीलिए मैंने तुम्हारे मुंह काले कर दिए ।

विजय —श्यामू भैया ! भागो यहां से । **सिर पर पैर रखकर भागो,** नहीं तो और कोई **आफत आ जाएगी** ।

श्याम —हां भैया, छोड़ो यह मुहावरापुरी ! चलो यहां से जल्दी । (दोनों भागते हैं ।)

लड़की की सगाई

एक गांव में एक महाजन रहता था। उसके एक ही लड़का था। वह खूब स्वस्थ और मनमौजी था। अपने पिता की इकलौती सन्तान होने के कारण वह बड़े लाड़-प्यार में पला।

एक दिन शहर से एक लखपति सेठ उसके गांव आए और महाजन के घर जाकर कहने लगे—देखिए दा साहब ! मैंने आपके लड़के की खूब तारीफ सुनी है। मैं अपनी लड़की की सगाई करने का निश्चय करके आपके घर आया हूं। शहर में मेरी बड़ी भारी आढ़त की दुकान है। मेरा कारोबार आपके आशीर्वाद से इतना बड़ा है कि पांच-पचास हजार तो मेरी तिजोरी में यूं ही बिना मतलब पड़ा रहता है। मुझे चिन्ता है, तो सिर्फ अपनी लड़की की सगाई की। मैंने अपनी लड़की आपके घर ही देने का निश्चय किया है। कहिए, आपकी क्या राय है ?

महाजन ने कहा—देखिए साहब, आपसे पहले मेरे घर सैकड़ों खूबसूरत गुणवती लड़कियों के सम्बन्ध आए, पर मैंने एक को भी स्वीकार नहीं किया, किन्तु आज आप स्वयं पधारे हैं और लक्ष्मी के साथ महालक्ष्मी भी देना चाहते हैं, अतः मैं इस सम्बन्ध से इन्कार नहीं कर सकता।

इसी बीच उसने दरवाजे की ओट में खड़ी हुई सेठानी से आंखों-ही-आंखों में मंजूरी ले ली। उसने सेठ से कहा—मुझे सम्बन्ध मंजूर है। आप जाकर तिथि और मुहूर्त की खबर करें।

फिर महाजन ने सेठ की खूब खातिर की। पूरी मेहमानवाजी करके सेठ को विदा किया।

गांव के बाहर आकर सेठ ने सोचा कि मैं इतना बड़ा आदमी इस छोटे-से गांव में अपनी कन्या दे रहा हूं, जरा इस परिवार के बारे में पूरी जानकारी तो प्राप्त कर लूं।

इतने में गांव की ओर से एक वृद्ध किसान आता हुआ दिखाई दिया।

सेठ ने कहा—राम-राम, दाजी।

दाजी ने शीघ्रता से झुककर कहा—राम-राम सेठ साहब, राम-राम। अहोभाग्य कि आप हमारे गांव में पधारे। कहिए, किस कारण आप को कष्ट करना पड़ा ?

किन्तु आज आप स्वयं पधारे हैं और लक्ष्मी के साथ महालक्ष्मी भी देना चाहते हैं, अतः मैं इस सम्बन्ध से इन्कार नहीं कर सकता ।

सेठ ने कहा—देखो दाजी, आपके गांव के महाजन के लड़के से मैं अपनी लड़की का सम्बन्ध तय करने आया था । सम्बन्ध भी तय कर लिया पर अभी तिथि निश्चित करनी है । कहिए इस रिश्ते के बारे में आपकी क्या राय है ?

उस बूढ़े ने सोचा कि लड़की का मामला ठहरा, असली बात यदि छिपाता हूं तो लड़की का जीवन खराब होगा और यदि बताऊं तो गांव का सेठ वैरी बन जाएगा, सो उसने चतुराई से काम लिया और बोला—साहब, लड़का तो बहुत अच्छा है, परन्तु .....

सेठ ने कहा—परन्तु क्या बात है ?

दाजी ने कहा—बात कुछ नहीं, ऐसे ही वह कभी-कभी प्याज खाता है ।

सेठ ने कहा—प्याज खाने में क्या हर्ज है ? प्याज तो बहुत ही फायदे की चीज है ।

दाजी ने कहा—वह प्याज सदा थोड़े ही खाता है कभी-कभी ज़रा अण्डा-मांस खाता है तो उसके साथ प्याज भी खाता है ।

उसने चतुराई से काम लिया और बोला—साहब, लड़का तो बहुत अच्छा है, परन्तु···

सेठ ने कहा—तो क्या जमाईजी मांस भी खाते हैं ?

दाजी ने कहा—नहीं साहब, सदा थोड़े ही खाते हैं। कभी-कभी चार-छः बराबरी के बैठ जाते हैं, वे शराब वगैरह पीते हैं, तो मांस भी खा लेते हैं। आजकल तो आपकी बिरादरी में यह सब चलता है।

सेठ फिर चौंके — ऐं, शराब भी जमाईजी पीते हैं !

दाजी ने कहा—आप तो बहुत ही भोले आदमी हैं। वह क्या रोज शराब पीते हैं ? कभी वार-त्योहार को बराबरी के मिल जाते हैं या ढाबे पर नाच-गाने में संग-सोहबत में बैठ जाते हैं, तो नाच-गाने के दौर में सब कुछ करना पड़ता है। परन्तु लड़का सवा सोलह आने है; आप संकोच मत करें। अपनी कन्या का रिश्ता पक्का कर दें।

सेठ दुविधा में पड़ गए। इधर लडकेवाले इंतजार करते रहे, पर सेठ की तरफ से फिर कोई जवाब नहीं आया।

मुंशीजी की चालाकी

आनन्दपुर नाम के किसी गांव में लाला सागरमल रहते थे। वह बड़े साहूकार थे। आढ़त की दुकान थी। लेन-देन का कारोबार भी करते थे। सागरमल के कई मित्र थे। सांझ को काम से छुट्टी मिलने पर सब मित्र शर्माजी के घर एकत्रित होते। वहीं ताश खेलते और गप-शप चलती।

कभी-कभी मित्र-मंडली में सहभोज भी होता था। लालाजी मित्रों के घर प्रीति-भोज में माल तो खा जाते, पर खुद किसी को नहीं खिलाते। बड़े कृपण थे। मित्र इनसे जब खिलाने को कहते, तो इधर-उधर की बात बना कर टाल देते।

मित्रों ने कई युक्तियां सोचीं, कई उपाय किए पर लालाजी काबू में नहीं आए। उस नगर में एक बाग था। उसके सामने एक हलवाई की दुकान थी। हलवाई का नाम था मालाराम। इस दुकान पर ग्राहक बहुत आते थे। मालाराम बहीखाते में ग्राहकों का हिसाब भी रखता था। तोल-नाप का सच्चा था।

सागरमल मित्रों से आंख बचाकर कभी-कभी इस दुकान से मिठाई खाया करते थे। एक दिन मित्रों ने लालाजी को मिठाई खाते देखा। उन्होंने लालाजी को सबक सिखाने की योजना बनाई। सबने यह काम मुंशीजी पर छोड़ा। मुंशीजी इस काम में बड़े निपुण थे।

एक दिन सब मित्र बैठे थे। तब मुंशीजी ने कहा—कल रविवार है। पहले नदी पर घूमने चलेंगे, फिर बाग में मेरी ओर से प्रीति-भोज होगा।

सबको यह बात पसन्द आई।

दूसरे दिन सब मित्र टहलने गए। जब बाग में आए तो मुंशीजी ने कहा—आप लोग यहीं बैठिए, मैं मिठाई लाता हूं।

मुंशीजी मालाराम की दुकान पर पहुंचे और बोले—लाला सागरमल बाग में बैठे हैं। वे आज मित्रों को मिठाई खिला रहे हैं। पांच सेर बढ़िया मिठाई दे दो।

हलवाई ने उत्तर दिया—कृपा करके लालाजी को बुला लीजिए। वे तो सदा नकद पैसे देते हैं। उधार तो मैं उनके सामने ही तोलूंगा।

—मैं इस योग्य कहां ? यह तो आपकी कृपा है ।

मुंशीजी ने कहा—लालाजी आज बहुत थके हुए हैं । यहां न आ सकेंगे । मैं यहीं से पूछ लेता हूं ।

—लालाजी ! पांच सेर मिठाई लाऊं ? इतनी बहुत होगी । हम पांच ही तो हैं—मुंशीजी ने चिल्लाकर सागरमल से पूछा ।

—हां, हां, पांच सेर बहुत है, ज्यादा का क्या होगा ? शीघ्र ले आओ—लालाजी ने कहा ।

अब हलवाई को विश्वास हो गया । उसने तराजू उठाई । पासंग किया । पंसेरी का बट्टा रखकर मिठाई तोल दी ।

मुंशीजी मिठाई ले आए । बीच में रख दी । सब मित्र उसके चारों तरफ बैठ गए और सबने पेट भरकर मिठाई खाई । सभी मित्र मुंशीजी की प्रशंसा करने लगे ।

मुंशीजी, आप बड़े दानी हैं—लालाजी ने बैठे-बैठे कहा ।

—मैं इस योग्य कहां ? यह तो आपकी कृपा है—मुंशीजी ने जवाब दिया ।

दूसरे दिन लालाजी उसी हलवाई की दुकान पर मिठाई खाने गए, तो हलवाई ने पांच सेर मिठाई का पर्चा लालाजी को दिया । पर्चा देखकर लालाजी बोले—मैंने मिठाई कब मंगाई थी ?

—आपने ही तो कल बाग में बैठे हुए चिल्लाकर कहा था कि पांच सेर मिठाई ले आओ। पड़ोसी दुकानदार गवाह है । हलवाई ने जरा बिगड़कर कहा और पड़ोस के दुकानदार से गवाही दिलवा दी ।

अब लाला सागरमल को मिठाई के पैसे देने पड़े । उस दिन से लालाजी ने मित्रों के सिर पर मिठाई खाने का इरादा ही छोड़ दिया और उनसे कतराने लगे ।

हाय रे, रसगुल्ला !

खेदन के साथ चटपटी की गहरी दोस्ती है। चटपटी की बड़ी बहन की शादी होने वाली है। तैयारियां शुरू हो गई हैं। ऐसी हालत में घर के लोग चटपटी के मित्रों से सहयोग लिए बिना कैसे रह सकते हैं?

एक दिन चटपटी के चाचाजी ने खेदन और चटपटी को बुलाकर कहा—तुम दोनों को मिलकर भंडारवाली कोठरी के पास पहरा देना होगा। काफी होशियारी से पहरा देना, समझे! एक भी मिठाई इधर-उधर न होने पाए।

इस तरह के कामों में खेदन सबसे पहले कूद कर आता है। उसने बड़े उत्साह के साथ कहा—जरूर, हम दोनों भंडार में पहरा देंगे। आदमी तो क्या, उसके भीतर मक्खी तक नहीं जा सकेगी।

विवाह के एक दिन पहले ही आंगन में दो बड़े-बड़े चूल्हे जलाए गए। हलवाई मिठाई बनाने लगा। चारों तरफ धुआं हो गया। इतना धुआं होने पर भी पड़ोस के लड़के मिठाई की महक पाकर इधर-उधर ताक-झांक करने लगे।

चटपटी के चाचा बूढ़े हैं, इसलिए उन्हें नींद नहीं आती। सर पर पगड़ी बांधे चारों तरफ चक्कर काट रहे थे।

खेदन को रसगुल्ला बहुत पसन्द है। खासकर गरम-गरम रसगुल्ला। गड़ाप से मुंह में डालो और सड़ाप से भीतर। मिठाइयों का राजा रसगुल्ला ही तो है। देखने में सुभावना और खाने में सबसे मजेदार। लेकिन चाचा के मारे तो नाक में दम है।

भंडार में पहरा देने को कहकर भी वह बार-बार इधर ही आ रहे हैं। अरे भाई, कम-से-कम दो-चार चखकर हम यह तो बता सकते हैं कि चीनी कम है या ज्यादा। चाशनी कड़ी है या हल्की। ठीक से तैयार किया गया है या नहीं। क्या इसी का नाम है पहरा देना? चाभी-ताला देकर भी वह खुद सामने खड़े हैं। भई वाह! इससे तो अच्छा था कि वह खुद ही पहरा देते।

लेकिन खेदन सहज ही में हार माननेवाला नहीं है। 'ट्राई-ट्राई अगेन' कविता उसे याद है।

अच्छी बात है, अभी तो रसगुल्लों का आना शुरू हुआ है। जब परातों में रखकर उसे लोग भंडार घर में रखना शुरू करेंगे, तब तो मौका मिलेगा। परात में तैरते हुए रसगुल्लों को उस समय छूमंतर कर देना खेदन के लिए मामूली काम है।

खेदन ने सोचा—अभी रसगुल्ले वाली हंडिया या परात में हाथ लगाने पर गरम शीरे में हाथ जल जाएगा। बेकार की भीड़ जब छंट जाएगी और लोग सोने की तैयारी करेंगे, तब चाचाजी अफीम की पिनक लेंगे—उस वक्त तो रसगुल्ले की पहरेदारी हम लोग करेंगे—यानी खेदन और चटपटी। उस वक्त भंडार-घर के मालिक हम दोनों ही रहेंगे। यहां रसगुल्ला रहेगा और हम रहेंगे। बड़ा मजा आएगा। बोलो, रसगुल्ले की जय।

सेनापति जिस प्रकार चारों तरफ का ध्यान रखता है, ठीक उसी प्रकार खेदन भी गौर से सारी कारवाही देखता रहा। रसगुल्ला, गुलाब जामुन, पेड़ा, बरफी, सब बन गया। चूल्हा बुझा दिया गया। मिठाई बनाने वाले हलवाई पान खाते हुए चले गए। नौकर-चाकर चारों तरफ सफाई कर चुके। जहां-जहां शीरा गिरा था, बिल्ली आकर चाट गई। चाचाजी पगड़ी खोलकर एक मसनद के सहारे लेट गए। कहने का मतलब, अब वह समय आ गया जब रसगुल्ले पर हमला करना चाहिए।

खेदन और चटपटी पैर दबा-दबा कर ज्यों ही आगे बढ़ने लगे त्यों ही दोतल्ले के रेलिंग से चटपटी के पिताजी की आवाज आई—रामू, भोला, जरा तुम लोग मिठाइयों के सब बर्तन ऊपर ले आओ। मेरे कमरे में रख दो। मैं ताला बंद करके सोने जाऊंगा।

खेदन को लगा—रसगुल्ला तो है, पर किसी ने उसके सर पर ठंडा पानी उडेल दिया। अब आज तो रसगुल्ले पर हाथ की सफाई दिखाने का मौका नहीं मिलेगा। चलो, कल देखा जाएगा।

इसके बाद दोनों सोने चले गए। लेकिन रात भर अच्छी तरह सो नहीं सके। सपने में भी रसगुल्ला नाचता दिखाई देता रहा।

दूसरे दिन खेदन झटपट उठा और चटपटी के यहां पहुंच गया। खेदन को देखते ही चटपटी के मामा ने कहा—तुम आ गए बेटा? अच्छा हुआ, आज तुम लोगों को काफी मेहनत करनी पड़ेगी। कल तुम लोगों से कहा था कि मिठाई के बर्तनों की देख-रेख तुम लोगों को करनी है, अब आज तुम होशियारी के साथ काम करना। जाओ, अपना-अपना काम सम्हाल लो।

खेदन ने अपनी प्रसन्नता को दबाते हुए गर्दन झुकाकर स्वीकार कर लिया। चाहे जो हो आशा वह नहीं छोड़ेगा। पहले मिठाइयों का इंचार्ज बन जाए, तब वह हाथ की सफाई दिखाएगा। दो स्टूल लेकर दोनों बैठ गए। लेकिन इस काम के लिए जरा सन्नाटा चाहिए। शादी क्या हो रही है, जैसे तरकारी बाजार की भीड़ आ गई है। लोग इधर-से-उधर आ-जा रहे हैं। इन्हें जैसे कोई काम नहीं है। इनके पैर भी नहीं दुखते?

—क्यों रे, तुम लोगों ने जूठा तो नहीं किया है? गुरुजी को भोग देना है।

थोड़ी देर के लिए ज्यों ही सन्नाटा हुआ, त्यों ही चटपटी ने कहा—खेदन, चार रसगुल्ले उठा ला। हम दो-दो जल्दी से मुंह में रख लें।

खेदन का चेहरा खिल उठा। वह भी यही चाहता था। इसी को कहते ह—मित्र।

ज्यों ही खेदन दो रसगुल्ले निकाल कर चटपटी को देने जा रहा था, त्यों ही बुआजी आईं और बोलीं—बेटा खेदन, गुरुजी आए हैं। उसके लिए दो प्लेट मिठाई सजाकर दे। प्लेट मैं साथ ही लाई हूं।

फिर अचानक सन्देह की दृष्टि से देखती हुई बोलीं—क्यों रे, तुम लोगों ने जूठा तो नहीं किया है? गुरुजी को भोग देना है। जूठा सामान देने से पाप लगेगा। तुम दोनों के साथ ही मुझे भी शाप लगेगा।

खेदन ने सोचा—अगर उसमें शाप देने की क्षमता होती तो वह अभी तुरन्त बुआ को ऐसा शाप देता कि वह भस्म हो जातीं। इसके बाद वह दनादन रसगुल्ले खाता। लेकिन यह होगा कैसे?

बुआ के जाने के बाद पुन: जब उसने रसगुल्ले की ओर हाथ बढ़ाया त्यों ही चाची आकर बोलीं—चटपटी, पड़ोस के मुखर्जी बाबू के यहां मिठाई भेजनी है। जरा इस थाली में सजा दे।

इसी तरह कभी पुरोहित तो कभी चाचाजी आने लगे। खेदन की सारी मेहनत चौपट हो गई। क्या इसी का नाम पहरेदारी है? अपने को वंचित करके अगर पहरेदारी की जाए तो इससे बुरा कोई काम नहीं।

चटपटी ने सहसा कहा—इस वक्त हाथ लगाना ठीक नहीं है। मेरी समझ से शाम के समय हमें मौका मिलेगा। इस कमरे के पीछे दीवार का थोड़ा-सा हिस्सा टूटा हुआ है। रसगुल्ले की एक परात उधर ही रख दें। शाम को हम दोनों उधर से हाथ वढ़ाकर खूब खाएंगे।

खेदन को लगा जैसे भूखे को भोजन मिला। उसने सिर हिलाकर स्वीकृति देते हुए कहा—यह ठीक रहेगा।

लेकिन उसी समय चाचाजी का पगड़ीवाला सर फुर्ती से हट गया, इसे कोई देख नहीं सका।

ज्यों ही भीतर खेदन ने हाथ डाला, त्यों ही खटाक से आवाज हुई और वह बुरी तरह चीख उठा।

ठीक शाम के समय दोनों कमरे के पीछे गए। ज्यों ही भीतर खेदन ने हाथ डाला, त्यों ही खटाक से आवाज हुई और वह बुरी तरह चीख उठा।

हाथ वाहर निकालने पर चटपटी ने देखा—खेदन के हाथ में चूहेदानी फंसी हुई है। पता नहीं, चाचाजी कव इस मशीन को वहां रख गए थे।

खेदन ने देखा—उसकी अंगुलियां कई जगह से कट गई हैं। उसने सोचा, इससे अच्छा था कि वह पत्तल पर बैठ कर, अधिक-से-अधिक रसगुल्ले मांग कर खाता। कम-से-कम उसका हाथ तो इस बुरी तरह घायल न होता। पता नहीं, खेदन को इसके बाद रसगुल्ला खाने को मिला या नहीं?

तीन मोटे

किसी शहर में तीन लड़के रहा करते थे। वे तीनों ही खूब मोटे थे। शरीर से तो मोटे थे किन्तु उनकी अकल मोटी नहीं थी। उनमें एक का नाम राजेश, दूसरे का नाम कमलेश और तीसरे का नाम उमेश था। उमेश मोटा होने के साथ-साथ सांवला भी था। उन तीनों में बड़ी दोस्ती थी। वे बड़े ही शरारती और मसखरे थे और 'तीन मोटे' के नाम से शहर भर में प्रसिद्ध हो गए थे।

एक बार शाम के समय राजेश और कमलेश घूमने गए। जब वे दोनों लौट रहे थे तो उनको उमेश भी मिल गया। उसे देखकर वे बड़े प्रसन्न हुए। फिर तीनों ने मिलकर सलाह की कि चलकर सिनेमा देखा जाए, क्योंकि आज बच्चों के लिए आधा टिकट है। उन्होंने अपनी-अपनी जेबें टटोली। उमेश बोला—लो यार, मेरी जेब में तो एक रुपया चार आने ही हैं।

कमलेश बोला—अठन्नी मेरी जेब में भी मिल गई।

—मेरे पास भी ये सात आने पैसे निकले हैं—उमेश की हथेली पर रखते हुए राजश बोला :

जब सब पैसों का हिसाब लगाया गया तो थर्ड क्लास में देखने लायक पैसे इकट्ठे हुए। यह देखकर राजेश बोला—यार, हम तो थर्ड क्लास में बैठकर सिनेमा नहीं देखेंगे'

—भाई राजेश, बात तो तुमने ठीक कही। थर्ड क्लास में बैठकर देखना तो हम को भी पसन्द नहीं है—सिर खुजलाते हुए उमेश ने कहा।

फिर सहसा उमेश की आंखें चमक उठीं। वह बोला—देखो, सिनेमा शुरू होने वाला है। यदि हम लोग घर जाकर पैसे लाते हैं तो देर लग जाएगी और हम लोग फिर पूरा खेल नहीं देख पाएंगें, इसलिए तुम दोनों मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें इन्ही पैसों से सैकंड क्लास में बैठा-कर सिनेमा दिखाऊंगा—यह सुनकर दोनों उमेश के पीछे-पीछे चल दिए।

उन पैसों से उमेश ने थर्ड क्लास के बच्चों के तीन टिकट खरीदे और गेट के पास जाकर राजेश और कमलेश से बोला—तुम दोनों अन्दर चलो, टिकट मैं देता हूं।

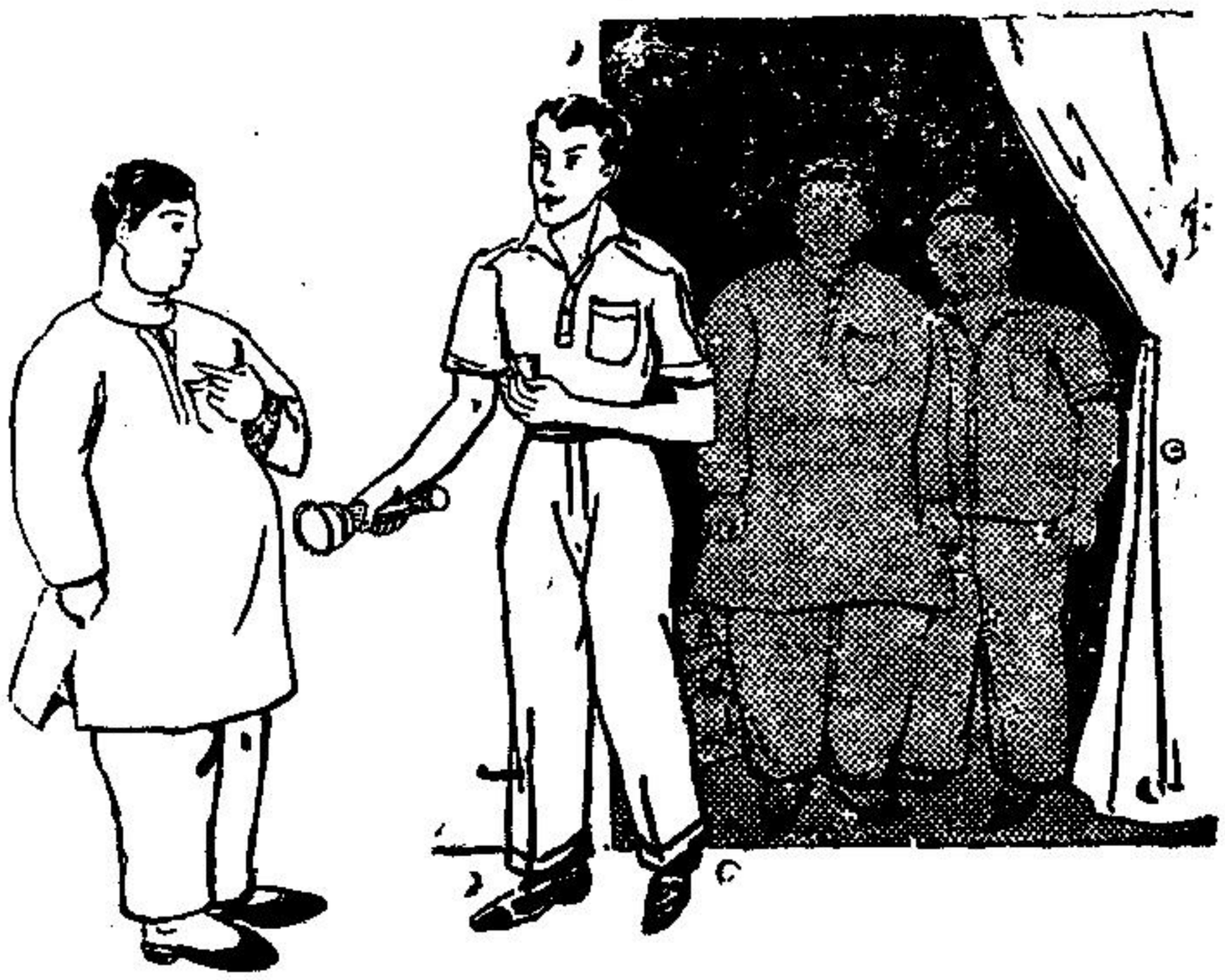

इस पर गेट-कीपर ने उसको घूरकर देखा, तो वह बोला—मुझे क्या देखता है? मैं तो हाथी का बच्चा तेरे सामने ही खड़ा हूं।

गेट-कीपर के हाथ पर उसने बच्चों के तीन टिकट रख दिए। गेट-कीपर ने पहले अपने हाथ पर रखे हुए टिकटों को देखा और फिर उन तीनों को देखा तो आश्चर्य में पड़ गया। यह देखकर उमेश ने कहा—अरे देखते क्या हो? बच्चों के ही टिकट तो दिए हैं मैंने तुम्हें!

वह बोला—कैसे साहब?

तो उमेश ने कहा—देखो, आगे वाला जो था, वह चीन का बच्चा था। उसके पीछे जापान का बच्चा था। इस पर गेट-कीपर ने उसको घूरकर देखा, तो वह बोला—मुझे क्या देखता है? मैं तो हाथी का बच्चा तेरे सामने खड़ा हूं।

यह सुनकर गेट-कीपर अपनी हँसी न रोक सका और उसे हँसता छोड़ उमेश भी सिनेमा घर में घुस गया। ठाठ से तीनों मोटे सैकंड क्लास में सिनेमा देखकर अपने-अपने घर वापस आए।

जाट का खेत

माधो जाट का चना पगडंडी के किनारे ही बोया हुआ था। पगडंडी उसके गांव से दूसरे वगल के गांव को मिली हुई थी, इसलिए हमेशा उस पर से लोग आया-जाया करते थे। जव चने में फूल आए तो माधो की चिंता बढ़ी। आखिर वह जो सोचता था वही हुआ। जब चने में दाने पड़ने लगे तो जो कोई भी पगडंडी से जाता, एक मुट्ठी उखाड़ लेता था। आखिर कब तक कोई रखवाली करता ? एक दिन वह रखवाली कर रहा था तो देखा कि सामने से चार आदमी पूरा एक बोझ चना उखाड़े चले आ रहे हैं, जैसे चना कभी देखा ही न हो। अगर कोई अकेला आदमी होता तो माधो बिना एक मिनट की देर किए टूट ही पड़ता उस पर। परन्तु यहां चार-चार थे। फिर भी उन्हें कैसे जाने दे ? वे सब चना रखने के लिए भी तैयार नहीं थे। उलटे बात बढ़ती तो माधो ही मार खा जाता। आस-पास के सब किसान घर को जा चुके थे। माधो का गुस्सा उन लोगों की सीनाजोरी से और भी बढ़ गया लेकिन लाचारी के कारण वह कुछ कर नहीं पा रहा था। माधो उन लोगों को थोड़ा-थोड़ा पहचानता था। उनमें एक पंडितजी, दूसरे वकील, तीसरा बनिया और चौथा लुहार था।

माधो ने सोचा एक साथ तो इन लोगों से पार पाना मुश्किल है। किसी प्रकार एक-एक को रास्ते पर लाना चाहिए।

यह सोच कर वह लुहार से बोला--पंडितजी तो हमारे पूज्य हैं और वकील साहव खेत का या पटवारी का कभी झगड़ा पड़ा तो अदालत में हमारी मदद करेंगे। महाजन की तो हमेशा किसानों को जरूरत रहती ही है, वे माई-बाप हैं। पर ए लुहार, तूने क्यों चना उखाड़ा? --कहकर माधो टूट ही पड़ा लुहार पर। बाकी तीनों आदमी सोच रहे थे, चलो हम लोगों को तो किसान ने छोड़ दिया, हम लोग क्यों लुहार के बीच पड़ने जाएं ?

जब लुहार की मरम्मत हो चुकी तो माधो बनिए की ओर घूमा। बोला--महाजन, हमारे गांव का वनिया मर गया है जो मैं आपसे रुपया कर्ज लूंगा ? और कर्ज लूंगा तो क्या सूद नहीं लेंगे आप ? तब भला चनों को ही बिना दाम दिए क्यों तोड़े जा रहे थे ?--इतना कहकर जाट ने उसको भी वहीं ढेर किया।

वकील साहब और पंडितजी थोड़ा तो घबराए, लेकिन सोचा कि हम लोगों को तो

—पर ऐ लुहार, तूने क्यों बना उखाड़ा?—कहकर माधो टूट हो पड़ा लुहार पर।

कुछ कहा नहीं है। बच जाएंगे। हम क्यों बनिए को बचाने जाएं? हमसे तो जाट खुश है, सो इसे नाराज करना ठीक नहीं

तब तक माधो फिर वकील साहब की ओर मुड़ कर बोला—वकील साहब, पंडितजी का बात दूसरी है। वह स्वर्ग का रास्ता बताने वाले हैं। सारे पापों को नष्ट करने वाले हैं। वह हजार गलती करें तो भगवान भी इन्हें माफ कर देंगे, पर आप तो कानून जानने वाले हैं, आपने ऐसा काम क्यों किया?

और फिर जाट ने उनकी भी वही गत बनाई। जब ये तीनों वहीं ढेर हुए पड़े थे, तब उसने लपक कर पंडितजी का हाथ पकड़ ही तो लिया। बोला—क्यों पंडितजी, जिंदगी भर शिक्षा देते फिरते हो कि झूठ नहीं बोलना चाहिए, किसी को दुख नहीं देना चाहिए, लोभ से बचो--नहीं तो नरक मिलेगा और गति नहीं होगी। और आपका यह धन्धा? अरे स्वर्ग और नरक तो जब मिलेगा तो उस जनम में मिलेगा, यहां मैं आपको प्रत्यक्ष इस काम का फल दिए देता हूं। —और लगा गधे पर लाठी बरसाने की तरह पंडितजी को धुनने।

इस तरह चारों व्यक्तियों की मरम्मत करके माधो ने कहा—जाइए, आप लोग घर जाइए और अब ऐसा काम कभी मत कीजिएगा।

धनुष-भंग

'आयुस दीजे किरपा निधाना आं
तोडूं ये शंकर चाप पुराना !'—

इधर श्रीराम गुरु विश्वामित्र से धनुष तोड़ने के लिए आज्ञा मांग रहे थे और उधर दिग्विजय ठाकुर अपनी दोनाली बन्दूक में कारतूस भर रहे थे। रामलीला मंच के सामने सैकड़ों की संख्या में लोग 'बोल सियावर रामचन्द्र की ···ई ···ई ···जै !' पुकारने के लिए उतावले हो रहे थे। पूरी रामलीला में धनुष-भंग का दिन ही विशेष आनन्द देने वाला होता है। अलग-अलग देशों के राजाओं के कार्टून धनुष तोड़ने के लिए जैसे-जैसे नाटकीय तरीके अपनाते और फिर मूर्छित होकर गिरते थे—उससे महिलाओं और बच्चों को विशेष रूप से आनन्द आता था। लेकिन महिलाएं विशेष रूप से धनुष-भंग की प्रतीक्षा कर रही थीं।

जब श्रीराम ने अपने हाथों में शिव-धनुष उठा लिया, तो न जाने कितनी महिलाओं को अपने विवाह के दिनों की याद आने लगी—'बोल सियावर.....'

पिथौरागढ़ की इस रामलीला के मैनेजर ख्यालीराम आज विशेष रूप से प्रसन्न थे। इस साल की रामलीला में खुद उनका ही बेटा टीकाराम श्रीराम का पार्ट खेल रहा था और मैनेजर ख्यालीराम को ऐसा लग रहा था, जैसे आज उनके ही बेटे का विवाह होने वाला है और बार-बार उनकी इच्छा हो रही थी कि वह दशरथ का भेष बनाकर राजा जनक के दरबार में बैठ जाएं। मैनेजर ख्यालीराम और बांकेलाल साहजी के घराने में पुश्तैनी दुश्मनी चली आ रही थी और आज मैनेजर ख्यालीराम को बांकेलाल को झुकाने का सुनहरा अवसर मिल रहा था। ख्यालीराम इस बात से फूले नहीं समा रहे थे कि उनके दुश्मन और रावण जैसे अहंकारी बांकेलाल साह का बेटा सीता बना हुआ है और उसे उसके बेटे के गले में वरमाला डालनी पड़ेगी।

बोलचाल बहुत कम थी, मगर आज मैनेजर ख्यालीराम बोल पड़े थे—बांकेलालजी, आज सुस्ती क्यों छाई हुई है आपके चेहरे पर? आज तो आपके लिए कन्यादान का दिन है। कहीं यह चिन्ता तो नहीं हो रही है कि दहेज देना पड़ेगा?

मैनेजर ख्यालीराम सोच रहे थे कि बांकेलालजी नाराज हो जाएंगे उनके इस व्यंग्य से, मगर बांकेलाल जी बोले थे—अरे भाई कन्या के पिता को तो हमेशा उदास ही रहना पड़ता है।

श्रीराम अपना परा जोर लगा रहे थे, मगर बांकेलाल द्वारा बीच जोड़ में ठोंकी हुई धनुष की कीलें उखड़ ही नहीं रही थीं।

शाम को यह देखकर मैनेजर ख्यालीराम को बड़ी प्रसन्नता हुई थी कि उनका पुश्तैनी दुश्मन उनके सामने झुक गया है। हमेशा अपनी खंजर की नोक जैसी मूंछों को उमेठते रहने वाले बांकेलाल आज बड़ी लगन के साथ रामलीला की तैयारी में हाथ बंटा रहे थे। शिव-धनुष को रंगीन पन्नियों और कागज के फूलों से सजाने में उनकी विशेष रुचि देखकर मैनेजर ख्यालीराम को यही लगा कि सब भगवान श्रीराम की लीला है। जो बांकेलाल कहता फिरता था कि ख्यालीराम के खानदान में लड़की ब्याहने से तो गंगा में बहा दूंगा अपनी लड़की, वही आज उनके बेटे के लिए शिव-धनुष सजाने में लगा हुआ है। बोल सियावर·····।

मैनेजर ख्यालीराम डर रहे थे कि कहीं ऐसा न हो कि अपने बावलेपन में वह शिव-धनुष टूटने से पहले ही 'बोल सियावर रामचन्द्र की' पुकार दें। बार-बार उनकी आंखें टीकाराम को देख रही थीं कि बेटा हो तो ऐसा हो, जो खानदान की नाक रख दे।

एक-एक क्षण उतावली में बीत रहा था। मगर जब श्रीराम ने शिव-धनुष चौकी पर से उठाकर अपने सिर से ऊपर तक ऊंचा कर लिया तो मैनेजर ख्यालीराम अपने पर काबू नहीं रख सके, बोले, 'सियावर रामचंद्र की-ई-ई-ई·····जै-जै-जै ! जै-जै-जै' !

जोर-शोर के साथ रामलीला के श्रद्धालु दर्शकों की 'जय-जयकार' का कोलाहल गूंज उठा। मगर यह देखकर कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया कि श्रीराम अभी तक धनुष को सिर से ऊपर उठाए हुए उसे खींचने में ही लगे हैं। श्रीराम अपना पूरा जोर लगा रहे थे, मगर वांकेलाल द्वारा बीच जोड़ में ठोंकी हुई धनुष की कीलें उखड़ ही नहीं रही थीं।

थोड़ी देर तो सन्नाटा छाया रहा, मगर जब दिग्विजय ठाकुर की दोनाली वन्दूक के दो बार गरज चुकने पर भी श्रीराम शिव-धनुष को खींचते ही रह गए, तो सामने बैठे शरारती लड़कों ने चौपाई गानी शुरू कर दी :—

'आयसु दीजे किरपा निधाना—आं-आं-
तोड़ूं ये शंकर चाप पुराना-आं-आं-आं'

शरारती लड़के चौपाई गाने के साथ-साथ,'तोड़ूं ये शंकर चाप' के बाद ठीक टीकाराम की तरह ही धनुष को खींचने की नकल उतारने लगे थे। · · · और दर्शकों का शोर वढ़ता ही जा रहा था—बोल सियावर रामचन्द्र की-ई-ई-ई- जै-जै-जै !

टीकाराम की घबराहट और परेशान चेहरे को देख-देखकर मैनेजर ख्यालीराम का क्रोध उवल रहा था कि जाकर धनुष को घुटने से अड़ाकर खुद तोड़ आएं। वह समझ गए थे कि धनुष सजाने में लगे हुए वांकेलाल का ही यह करतब है और बार-वार वांकेलाल की धनुषाकार खंजर जैसी नुकीली मूंछें तोड़ देने के लिए उनकी आत्मा एकदम छटपटा उठती थी ····· मगर यह अवसर ऐसा था कि झगड़ा-फसाद बढ़ जाने की आशंका थी। उनके सामने सिर्फ एक ही रास्ता था कि श्रीराम को स्टेज के अन्दर बुलाकर पर्दा गिराकर धनुष को ठीक करने के वाद फिर खेल शुरू करें। मगर जनता इस कांड में जितना रस ले रही थी, उससे डर था कि वह और ज्यादा हो-हल्ला मचाएगी। मैनेजर ख्यालीराम की इच्छा और ही थी कि धनुष की जगह बांकेलाल की कमर तोड़ देनी चाहिए।

वह क्रोध से छटपटा ही रहे थे कि सामने से खंजर से भी ज्यादा तीखी आवाज आई—"अरे महाराज ! ज्ञानी राजा जनक कोई मूरख थोड़े ही हैं, जो उन्होंने साफ-साफ कह दिया कि—वीर विहीन मही भइ सारी—रे-ए-ए-सिया रही क्वांरी—रे-ए-ए··· अरे, यारो, आज धनुष-भंग होना तो कठिन है। हां, आज की रामलीला जरूर भंग हो गई है। इसके बाद जो 'सिया रही क्वां-आं-री··· का समवेत गान और 'बोल सियावर' के नारे गूंजते ही चले गए, तो मैनेजर ख्यालीराम को घोषणा करनी ही पड़ी—बड़े दुख की बात है, कि आज धनुष-भंग की लीला यहीं पर समाप्त करनी पड़ रही है। कल फिर यहीं से लीला आरम्भ की जाएगी।

बुरे फंसे

पड़ोस में लाला गुदड़ीमल की लड़की की शादी होने वाली थी। बारात आने में सिर्फ एक दिन रह गया था। कज्जन बाबू ने मारे खुशी के भुजंगी की पीठ पर धौल जमाते हुए कहा—वाह यार, मजा आ गया! इतने दिनों से दाल-भात खाते-खाते हम दोनों का पेट सिकुड़ गया। अब तो लगता है, भगवान को हम दोनों पर दया आ गई।

—मैं तेरा मतलब नहीं समझा। भुजंगी ने अपनी घुटी चांद पर हाथ फेरते हुए पूछा।

समझेगा कैसे? तेरी तो अक्ल ही सिर के बालों के साथ चली गई।—कज्जन बाबू ने इतनी जोर से उसकी खोपड़ी पर चपत जमाई कि भुजंगी को ताव आ गया। पर तुरन्त ही इस डर से कि भुजंगी मार का बदला न ले ले, कज्जन बाबू ने बड़े प्रेम से उसकी खोपड़ी सहलाते हुए कहा—जरा देर के लिए सोच··· बेसन के सोंधे-सोंधे लड्डू, ताजी गरमागरम इमरतियां, गोल-गोल गुलाबजामुन और करारी दालमोठ ···

—बस-बस, भुजंगी की लार टपकने लगी, अतः जल्दी से मुंह पोंछता हुआ बोला—मैं तो आजकल इन चीजों को सपने में देखा करता हूं। गुदड़ीमल जितना काइयां है, मैं अच्छी तरह जानता हूं। दिन भर कोल्हू के बैल की तरह काम में जोत देगा, तब कहीं थोड़ी-सी बूंदी नसीब होगी। तू तो जानता ही है मैं भूत से उतना नहीं घबराता जितना काम से ···

—भूत से तू क्या घबराएगा, तू खुद ही भूत से क्या कम है? कज्जन बाबू बोले—काम के नाम पर मैं भी तो तिनका तोड़ कर दो नहीं करना चाहता, पर गुदड़ीमल को फंसाना ही पड़ेगा। तू देखता जा मेरे दिमाग की करामात!

—कुछ-न-कुछ तरकीब सोच ही डालो कज्जन भैया। भुजंगी अपनी तोंद पर हाथ फेरता हुआ बोला—राम कसम बड़ी जोरों की भूख लग आई है। जिन मिठाइयों के नाम तुमने अभी गिनाए, उन्हें एक बार फिर दोहरा दो ·····!

—चल हट, कज्जन बाबू ने उसकी चांद पर जोरों की चपत जड़ते हुए कहा—जा, जल्दी से मेरा सफेद कुर्ता और इस्त्री किया हुआ पायजामा निकाल ला। तू भी तैयार हो जा, दोनों अभी लालाजी के पास जाएंगे।

खोपड़ी पर हाथ फेरता हुआ भुजंगी आज्ञाकारी बालक की तरह भीतर चला गया।

कज्जन बाबू ने इतनी जोर से उसकी खोपड़ी पर चपत जमाई
कि भुजंगी को ताव आ गया ।

दोनों सज-धज कर फिर लालाजी के घर जा पहुंचे । बड़े ही आदर से कज्जन बाबू ने दोनों हाथ जोड़कर उन्हें नमस्कार किया । फिर बोले–हम दोनों के लायक कोई सेवा हो तो बताइए ।

—आखिर हम पड़ोस वाले कब काम आऐंगे ?—भुजंगी भी अपनी तरफ से बोल पड़ा ।

—आपने इतना ही कह दिया, क्या यह कम मेहरबानी है—लाला गुदड़ीमल बोले–अब तो सब इन्तजाम हो गया है—सिर्फ बारातियों के ठहरने का प्रबन्ध करना बाकी रह गया है ।

—ओह ! कज्जन बाबू ने एकाएक लाला गुदड़ीमल के करीब खिसकते हुए कहा—बारातियों को ठहराने का बन्दोबस्त बड़ी आसानी से हो सकता है । इसके लिए आप हमारा बड़ा वाला कमरा काम में ला सकते हैं ।

—वाह, इससे अच्छा और क्या हो सकता है–गद्‌गद् स्वर में लालाजी बोल उठे ।

—आप बेफिक्र रहें–कज्जन बाबू मन-ही-मन खुश होते हुए बोले–यह मेरा भाई भुजंगी आज ही वहां झाड़ू लगा देगा–इसके अलावा हम दोनों उन्हें भली-भांति नाश्ता भी करा देंगे ।

भुजंगी कज्जन बाबू के लाख इशारे करने पर भी चुप न रह सका। बोल ही पड़ा—ऐसा नाश्ता कराएंगे हम दोनों उनको कि जिन्दगी भर याद करते रहेंगे कि गए थे किसी बारात में·····

—वाह-वाह, लाला गुदड़ीमल खीसें निपोरते हुए बोले–पड़ोसी हो तो आप लोगों जैसा।

—यह तो हमारा फर्ज है–कज्जन बाबू मुस्कराते हुए बोले—मगर हलवाई का क्या इन्तजाम है ?

—अजी, इसकी आप फिक्र न करें, लालाजी बड़े ही गर्व के साथ बोले–शहर का सबसे होशियार हलवाई बुलवाया है मैंने·····

—वाह वाह, तब तो मजा आ गया–भुजंगी एकाएक बोल पड़ा।

कहीं ऐन मौके पर भुजंगी बना–बनाया खेल न बिगाड़ दे, इसलिए कज्जन बाबू फौरन ही उठ खड़े हुए। दोनों हाथ जोड़ते हुए बोले–अच्छा लालाजी अब आज्ञा दीजिए कमरे की सफाई भी करनी है·····

—जरूर-जरूर, हाथ जोड़ते हुए लालाजी दोनों को बाहर तक पहुचाने आए।

घर पहुंचते ही भुजंगी कज्जन बाबू से लिपट गया। मगर कज्जन बाबू ने उसकी घुटी चांद पर इतनी जोरों का हाथ मारा कि वह उछल पड़ा। पर इससे पहले वह कुछ करता, बड़े प्रेम से उसकी खोपड़ी सहलाते हुए कज्जन बाबू न जाने उसके कान में क्या फुसफुसाए कि वह एकाएक मारे खुशी के उछल पड़ा। फिर सारी रात भुजंगी को एक पल के लिए भी नींद न आ सकी।

दूसरे दिन दोनों ने मिलकर बड़े वाले कमर की सफाई की। फिर बड़ी बेचैनी से बारात का इन्तजार करने लगे। भंडारघर की सारी जिम्मेदारी मैकू पर थी, जो भुजंगी और कज्जन बाबू से बुरी तरह चिढ़ा हुआ था। मगर शादी-ब्याह का मामला था और बारात आने ही वाली थी, इसलिए वह कुछ न कर सका। चुपचाप प्लेटों में मिठाई लगाता गया।

आखिर बारात आ ही पहुंची। कज्जन बाबू ने बड़े प्रेम से बारातियों को कमरे में बिठलाया। फिर भुजंगी के साथ वे भंडारघर की तरफ दौड़े। मैकू ट्रे में मिठाई की प्लेटें सजा कर दोनों के हाथों में थमाता जा रहा था। अपनी पहले से सोची योजना के मुताबिक, मिठाई की एक ट्रे लेकर कज्जन बाबू बजाय कमरे में जाने के सीधे ऊपर छत पर चले गए और अपनी ट्रे लेकर भुजंगी बारातियों को बांटने लगा। दूसरी बार भुजंगी छत पर जाकर प्लेटें रख आया और कज्जन बाबू बारातियों में जा पहुंचे। यह क्रम बड़ी देर तक चलता रहा छत पर मिठाइयों की जब चालीस-पचास प्लेटें जमा हो गईं, तो भुजंगी अपने आपको रोक न सका। खाली ट्रे एक तरफ पटक, मिठाई पर बुरी तरह से टूट पड़ा। इधर जब बड़ी देर हो गई और भुजंगी छत से नहीं उतरा, तो कज्जन बाबू का माथा ठनका। दौड़कर वह छत पर

भुजंगी का सिर रसगुल्ले के कड़ाव में डूबा हुआ था और दोनों हाथों में लड्डू भिंचे हुए थे ।

पहुंच तो देखा, भुजंगी बुरी तरह से मिठाइयों पर जुटा हुआ है । इस डर से कि कहीं वह सब चट न कर जाए कज्जन बाबू ने भी लम्ब-लम्ब हाथ मारने शुरू कर दिए ।

उधर दोनों को एकाएक गायब पाकर हो-हल्ला मच गया ।

अभी कज्जन बाबू ने छः-सात लड्डू साफ किए थे कि दो-चार आदमियों के साथ मैकू ऊपर आ पहुंचा । दोनों के होश उड़ गए । भागते तो कहां भागते ? पहले तो मैकू ने दोनों की खूब कस कर मरम्मत की, फिर पकड़ कर उन्हें लालाजी के हवाले कर दिया ।

—ठहरो दुष्टो—लालाजी क्रोध में बोले—ऐसी सजा दूंगा दोनों को कि उम्र भर तक याद करते रहोगे ।

फिर उनके इशारों से दो-चार आदमियों ने उन्हें पकड़ लिया और भंडारघर की बगल-वाली कोठरी में बन्द कर दिया। कोठरी में मिठाइयों की बड़ी-बड़ी परातें रखी हुई थीं। एक-दो पल के लिए दोनों भौंचक्के रह गए। भुजंगी तो भ्रम में पड़ गया कि कहीं वह सपना तो नहीं देख रहा है अतः उसने लड्डुओं की परात में से एक लड्डू निकाल कर मुंह में रख लिया। पर वह तो सचमुच का निकला। मारे खुशी के वह नाचने लगा। कज्जन बाबू तो बौखलाए सांड की तरह कभी बर्फी की परात में मुंह मारते, कभी इमरती के थाल पर झुक जाते।

सुबह लोगों ने दरवाजा खोला तो देखा, दोनों बेहोश पड़े थे। भुजंगी का सिर रसगुल्ले के कढ़ाव में डूबा हुआ था और दोनों हाथों में लड्डू भिंचे हुए थे। कज्जन बाबू के सिर पर कला-कन्द का थाल उलटा हुआ था। बड़ी देर बाद, जब दो-चार लोग उन्हें वैद्य, ठग्गनप्रसाद की दुकान में ले गए, तब कहीं उन्हें होश आया। न जाने क्या दवा खिलाई वैद्यजी ने कि दोनों 'पेटदर्द-पेटदर्द' चिल्लाते हुए सरपट भाग निकले। वैद्यजी ने इतना तगड़ा जुलाब दिया था कि दोनों की हालत खराब हो गई। बस फिर क्या था, लोटा लेकर जैसे ही भुजंगी लौटता, वैसे ही कज्जन बाबू लोटा लेकर भागते। सारे दिन यही चक्कर चलता रहा। एक लोटा लेकर लौटता तो दूसरा भागता, दूसरा आता ही तो पहला भागता।

आखिर में दोनों थक कर इतने कमजोर हो गए कि जो जहां था, वहीं पर पसर गया। आइन्दा से उन्होंने इस प्रकार ठूंस कर न खाने की कसम खाई। उन्होंने अपने साथियों को भी समझाया कि अधिक मिठाई खाना सेहत के लिए ठीक नहीं है।

एक से एक बढ़ कर

अमरकंटक में कपिलधारा के पास एक साधु रहता था। वह बड़ा लोभी था। उसके पास पच्चीस मुहरें थीं, जिनको वह अपनी जटाओं में बांधे रहता था। उसने गरीबों को बुरे ग्रहों का डर बता कर धन इकट्ठा किया था और उससे मुहरें खरीद ली थीं। एक दिन की बात है कि साधु स्नान करके मुहरों को गिन रहा था कि इतने में एक सुनार आ पहुंचा। साधु ने राख से मुहरें साफ कीं और जटाओं में रख लीं।

सुनार बड़ा चालाक था। वह जान गया कि साधुजी मालदार हैं। इधर-उधर की बातें करके सुनार ने साधुजी के चरण छुए और बोला—महाराज! मेरा घर भी पवित्र कीजिए। इस भयानक जंगल में आपका समय कैसे कटता होगा? अपनी देह को आप क्यों सुखा रहे हैं? हम सरीखे भक्तों को उपदेश देकर परोपकार कीजिए।

साधु आंखें बन्द करके 1 से 25 तक गिनती गिनता रहा। उसने सुनार की बातें सुनी, लेकिन कुछ उत्तर नहीं दिया। सुनार साधु की मुहरें हड़पने की ताक में था। उसने मन-ही-मन विचार किया कि अगर मैंने बाबाजी की मुहरें न छीनीं, तो फिर मेरा सुनार होना ही व्यर्थ है। वह रोज कपिलधारा के पास आता और साधु को आधा सेर मिठाई भेंट चढ़ाकर बिना कुछ कहे-सुने चला जाता।

एक माह के बाद एक दिन सुनार ने साधु के पैर पकड़े और कहा—योगिराज! मेरी स्त्री बीमार है। वह आपके दर्शन करने को छटपटा रही है। वह तो मरने ही वाली है। उसकी इच्छा कुछ दान करने की है। आप से उत्तम पात्र और कौन हो सकता है? मेरा मकान थोड़ी ही दूर पर है। दया करके पधारें।

साधु बोला—भक्तराज! उपकार करना हम परमहंसों का धर्म है। लेकिन तुम जानते हो कि मेरी काया बहुत कमजोर हो गई है। चलने-फिरने की शक्ति मुझ में बहुत कम है। अच्छा हो, अगर तुम गाड़ी ले,आओ। जल्दी करो, मरती हुई आत्मा का मुझे उद्धार करना है। भगवान का नाम सुनाना है, जिससे उसकी मुक्ति हो जाए।

सुनार तुरन्त ही एक बैलगाड़ी ले आया और उसमें साधु को बिठाकर अपने घर ले गया और अपनी स्त्री को कम्बल उढ़ाकर एक खाट पर सुला दिया। स्त्री लम्बी सांसें लेकर हांफने लगी। साधु ने उसे राम का नाम सुनाया और दान-पुण्य का उपदेश दिया।

सुनार ने साधुजी के चरण छुए और बोला--महाराज ! मेरा घर भी पवित्र कीजिए ।

साधु ने भोजन किया । पान-सुपारी खाने के बाद वह चलने को तैयार हुए । इतने में सुनार के घर महात्माजी के दर्शन के लिए लोगों की भीड़ लग गई । सुनार घबड़ाया-सा इधर-उधर कुछ खोजने लगा । कभी ऊपर को देखता, कभी नीचे को ।

भीड़ में खड़े हुए आदमी ने पूछा—सुनार, क्या ढूंढ रहे हो ? क्या खो गया है ? इतने क्यों घबड़ा रहे हो ?

सुनार रोता हुआ बोला—साधुजी को दक्षिणा देनी है । मेरी पच्चीस मुहरें ऊपर के आले में रखी थीं । न मालूम कौन ले गया ? मैंने अभी गिनकर रखी थीं ।

साधु सुनार की बातें सुनकर अपने मन में विचारने लगा—खूब फंसे ! वाह सुनार ! न

लाचारी में साधु ने जटाएं खोलीं और मुहरें खनखनाकर जमीन पर गिर पड़ीं।

चौबीस बताते हो, न छब्बीस ! ठीक पच्चीस ही कह रहे हो ! कुछ सोच-विचार कर बोला—बच्चे ! मुझ पर शक हो तो मेरी तलाशी ले लो। साधु ने लम्बा कुरता उतार कर फेंक दिया और सिर उठाकर चिल्लाने लगा—मुझे क्रोध आ रहा है। मैं सबको भस्म कर दूंगा। मुझे जाने दो ।

सुनार ने हाथ जोड़कर खड़ी हुई भीड़ के सामने महात्माजी से विनती की—महाराज! बुरा न मानिए, अपनी जटाओं को खोलकर दिखा दीजिए।

लाचारी में साधु ने जटाएं खोलीं और पच्चीस मुहरें खनखनाकर जमीन पर गिर पड़ीं। सब लोग चिल्लाकर बोले—चोर ··· चोर ··· पकड़ो। साधु भाग चुका था। सुनार पच्चीस मुहरों को उठाकर अपने सन्दूक में रख रहा था और मन-ही-मन प्रसन्न हो रहा था।

चोर से मुठभेड़

सोते-सोते नीलू अचानक चौंक पड़ा। उसे लगा जैसे ऊपर पड़ी टीन की छत पर कोई चल रहा है। कसकर आंखें भींच लीं नीलू ने। जाड़े में भी पसीने से लथपथ हो गया। लेकिन जिसे लाख मनाया, वह नींद न आई। उलटे टीन पर होने वाली आवाज और साफ सुनाई पड़ने लगी। बाबू और भैया, लगता था जैसे खर्राटों की होड़ लगाए हैं। शायद नगाड़ा भी उन्हें जगा नहीं सकता। निम्मो भी आज घोड़े बेचकर सोई थी। वैसे तो वह धीरे-से-धीरे बजते रेडियो पर भी नहीं सो सकती।

थोड़ी देर के लिए आवाज थम गई। नीलू ने अंधेरे में आंखें खोलकर देखने की हिम्मत की ही थी कि पक्की छत पर धम्म-से धमाका हुआ। वह बुरी तरह डरकर चीख पड़ा—चोर! चोर!—बाबू के खर्राटे-घोड़ों की चाल कुछ धीमी नजर आई। मां बत्ती जलाकर नीलू की पीठ पर हाथ फेरने लगी। नीलू उनसे जा चिपका। मां ने सहलाते हुए पूछा—चोर कहां है? बेटा, डर गए क्या?

नीलू ने टीन की ओर इशारा किया ही था कि टीन पर खड़बड़ हुई और वह मां के आंचल में छुपने लगा।

मां भी सहम गई। बड़े तपाक से बाबू को जगाया। बाबू ने आंखें खोलकर एक मिनट मां का चेहरा देखा और करवट बदल ली। खर्राटे फिर जोर पकड़ने लगे। निम्मो भी मां से चिपकी जा रही थी। मां ने फिर बाबू को हिलाया, लेकिन वाह रे बाबू! 'इतवार है, इतवार, इतनी जल्दी काहे की' कहकर फिर तकिये से चिपक गए। भैया उठे तो, लेकिन चोर का नाम सुनते ही उनकी घिग्घी बंध गई। शिवाजी और राणा प्रताप की बहादुरी सपना होकर किताबों में दुबकने लगी। रुक-रुककर टीन पर आवाज हो रही थी। अब छत पर कोई चल भी रहा था।

मां को कुछ न सूझा, तो उन्होंने बाबू को कसकर झकझोर दिया। इस बार वह उठकर बैठ ही गए। पूछा—क्या है?

सबके मुंह से 'चोर' निकल गया। 'चोर' कहते हुए बाबू उठे और दौड़कर कमरे की खुली खिड़की बन्द कर दी। मां हाय-हाय मचाए थीं—अरे, सब सामान बाहर पड़ा है, कुछ भी नहीं बचेगा। कुछ करते क्यों नहीं?

इस बार वह उठकर बैठ ही गए। पूछा—क्या है ?

भैया, नीलू, निम्मो और मां बाबू का मुंह देख रहे थे। बाबू ने चौंककर पूछा—मेरा डंडा कहां है ?

मां भीतर की कोठरी से डंडा और बांस ले आई । हम लोग समझे, अब क्या है, अभी बाबू चोर को मार भगाएंगे। नीलू बुरी तरह कांप रहा था।

सब यही सोच रहे थे कि बाबू इतने मोटे-ताजे हैं कि देखते ही चोर की घिग्घी बंध जाएगी और वह बाबू के पैर पकड़ लेगा। लेकिन बाबू ऐसे ही तो फूल नहीं गए थे। उन्होंने दुनिया देखी थी। मां से सलाह की—कहीं चोर के पास कोई हथियार न हो।

मां ने भी हुंकारी भरी। अब सवाल यह था कि कैसे सामना किया जाए और किस तरह उसे पकड़ लिया जाए ? तब तक टीन पर फिर चलने की आवाज आई। बाबू ने मुंह पर उंगली रखकर सबको चुप कराया और खुद अंधेरे में किवाड़ की दराज से लगे झांकने। मां की राय थी कि जोर-जोर से चिल्लाकर मुहल्ले वालों को इकट्ठा कर लिया जाए। लेकिन बाबू दूर की सोच रहे थे। मां को चुप कराते हुए कहा—चोर आवाज सुनकर भाग जाएगा, फिर पकड़ेंगे कैसे ?

तब तक छत पर फिर से 'धम्म' हुआ। चोर छत पर उतर आया था। नीलू और निम्मो

भागकर मां से जा चिपके । भैया भी बाबू से जा सटे । ऐसे में दिमाग भी खूब काम करता है । हमारी चिड़िया मारने वाली बन्दूक मंगाई गई, लेकिन अफसोस कि उसके कारतूस आंगन के बैठक वाले कमरे में रखे थे । यह स्कीम भी फेल हो गई । बाबू की चींटी के पैर जैसी छोटी-छोटी मूंछों पर अब पसीने की बूंदें—घास पर पड़ी ओस-सी झलकने लगीं । अब चोर को पकड़ना खेल न था ! कमबख्त महंगू को भी आज ही छुट्टी जाना था । चोर भी सब अता-पता लेकर आते हैं, मां का विचार था ।

बाबू गई-बीती बातें न सोचकर चोर पकड़ने की तरकीब निकाल रहे थे । खीज उठे—महंगू गया, तो गया, इस वक्त क्या किया जाए ? महंगू सर पटक देता क्या ? मैं उससे कमजोर हूं क्या ?—और बाबू ने अपनी मोटी बांह हम सब को दिखाई ।

कुछ देर चुप रह कर शायद बाबू सोचते रहे । बोले—कोठरी की खिड़की से सामने के चबूतरे पर लेटे रामू को बुला लो । कई लोगों को इकट्ठा करके दरवाजे पर आ जाए, फिर सब लोग मिलकर छत पर जाकर चोर पकड़ लें ।

तरकीब अच्छी थी । मां ने तुरन्त रामू को जगाया । वह तमाम भीड़ इकट्ठी करके दरवाजे पर आ गया । उसने खिड़की से खबर दी—दरवाजा खोल दो, हम लोग अन्दर आ जाएं—कहकर रामू दरवाजे की ओर चला गया ।

मां ने बाबू से दरवाजा खोलने के लिए कहा, लेकिन इसके लिए इतना बड़ा आंगन पार करना था । कहीं इसी बीच चोर ने हमला कर दिया तो ? अब तो मां के पास भी कोई जवाब न था । उधर दरवाजे पर थाप पड़ रही थी । बाबू ने बैठते हुए दिल से कहा—अब तो दरवाजा खोलने जाना ही पड़ेगा । वर्ना न वे लोग अन्दर आ पाएंगे न चोर पकड़ा जा सकेगा । काफी देर यही सोच-विचार होता रहा । उधर लोग दरवाजा थपथपा रहे थे । बीच-बीच में छत और टीन पर चलने की आवाज आ रही थी । सबके दिल भी धक्धक् कर रहे थे । बाबू ने हिम्मत करके एक हाथ में डंडा पकड़ा दूसरे हाथ से दरवाजा खोला । मां भी उनके पीछे बाहर जाने को सटी खड़ी थीं । अकेले कहीं बाबू मार न खा जाएं, इसलिए । कमरे में रहने की हिम्मत भला अब कौन कर सकता था ? कहीं बाबू बाहर जाएं और चोर यहां आ गया तब ?

दरवाजा खोलकर ज्यों ही एक कदम बाबू ने बाहर रखा कि टीन पर फिर भड़भड़ हुई और बाबू फिर कूदकर कमरे के अन्दर दाखिल हो गए । चोर जैसे हमला करने को तैयार बैठा था । मुश्किल यह थी कि न वह नीचे उतर रहा था न चोरी ही कर रहा था ।

शायद वह जान भी गया था कि सब जाग गए हैं । दुबारा फिर हिम्मत बांधी गई । बाबू ने कहा—बारजे के नीचे-नीचे निकलकर चला जाए । आंगन में जाने से हमें देखा जा सकता है ।

फिर दरवाजा खोला गया । आगे-आगे बाबू, उनके पीछे भैया और सबसे पीछे हम सबको लिए हुए मां ।

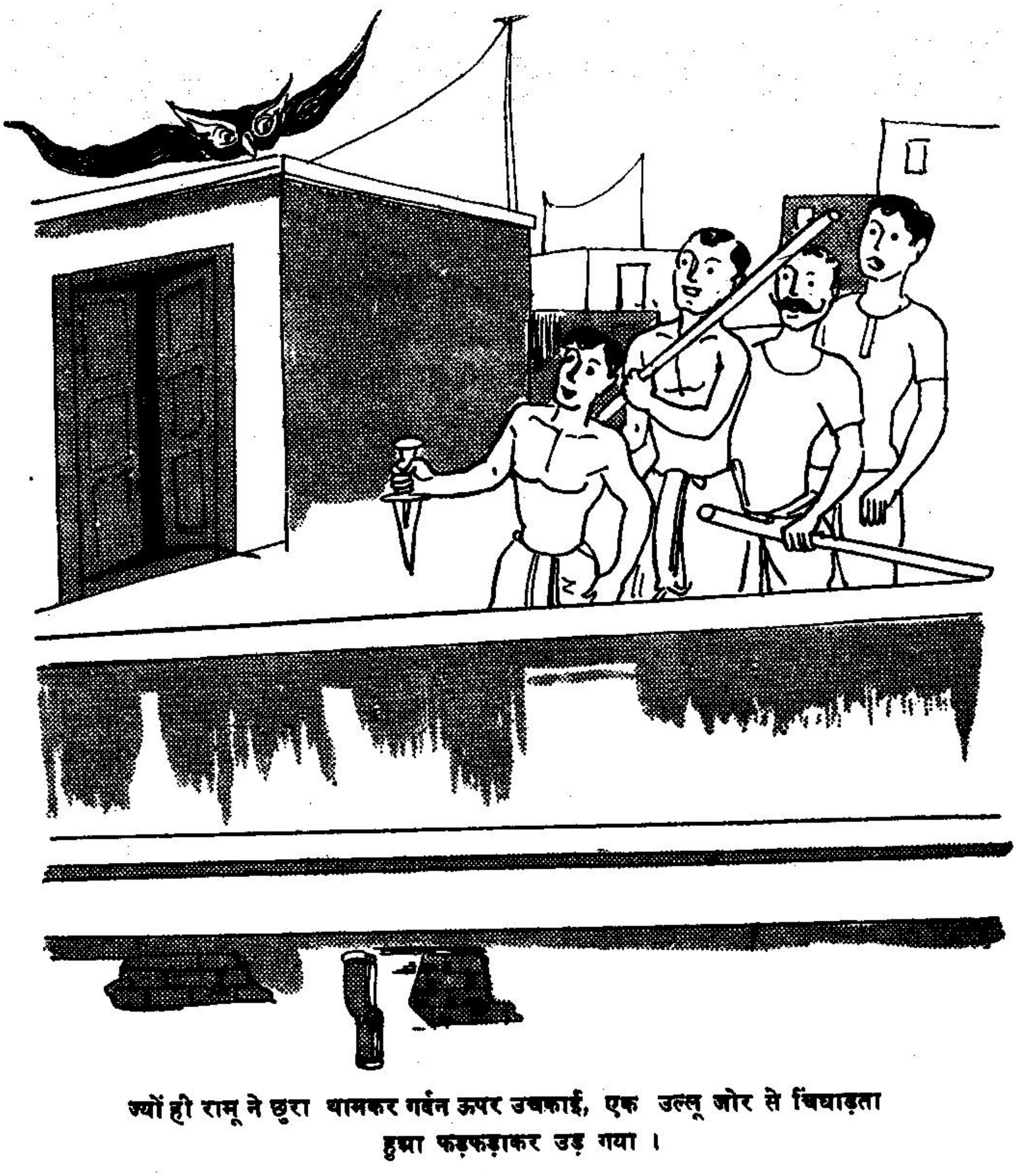

ज्यों ही रामू ने छुरा थामकर गर्दन ऊपर उचकाई, एक उल्लू जोर से चिंघाड़ता हुआ फड़फड़ाकर उड़ गया ।

बारजे के नीचे-नीचे कुछ ही देर चले थे कि बाबू अपनी साइकिल से जा टकराए। साइकिल धड़ाम से पानी के हंडे पर गिरी और सबके मुंह से चीख निकल गई। बाबू लांघते-फांदते लपककर दरवाजे की ओर भागे और आंगन में रखे जूठे बर्तनों पर भड़भड़ाकर गिर पड़े। नीलू और निम्मो चोटी का जोर लगाकर रोने लगे। बाहर खड़े लोग भी हल्ला मचाने लगे—अरे घबड़ाना मत! हम लोग आ रहे हैं। पकड़ लो, जाने न देना।

सबके पैरों को जैसे काठ मार गया। किसी तरह मां ने बढ़कर बाबू को सम्हाला।

उनके मुँह से बोल भी नहीं फूट रहा था। तब तक मां ने बढ़कर दरवाजा भी खोल दिया। सारा आंगन आदमियों से खचाखच भर गया।

घर भर की बत्तियां जला दी गईं। अब छत पर कोई आवाज नहीं हो रही थी। सबने ऊपर जाने का निश्चय किया। किसी के हाथ में भाला था, तो किसी के लाठी। एकाध आदमी बाबू की कमर सीधी कर रहे थे। सभी ने सावधानी की बात की—भाई देखकर आगे बढ़ना, कहीं चाकू न लिए हो—रामू ने छुरा हाथ में लिया और आगे बढ़ गया। सीढ़ी चढ़ कर उसने छत का दरवाजा खोला। पीछे-पीछे सभी लोग थे। ज्यों ही सब छत पर पहुंचे कि एक बिल्ली धम्म से कूदी और भाग निकली। रामू पूरी तौर से तैयार था। जैसे ही बिल्ली कूदी कि रामू ने चोर समझकर छुरा फेंका, लेकिन वह तो छत से टकराकर गिर पड़ा। सलाह हुई कि टीन पर चढ़कर देखा जाए। चोर कहीं छिपकर बैठा होगा। रामू और शम्भू भैया टीन पर चढ़ने लगे। मंगल काका टार्च दिखा रहे थे। बाकी लोग—घबड़ाना मत, पकड़ लो साले को—कहकर दिलासा दे रहे थे। ज्यों ही रामू ने छुरा थामकर गर्दन ऊपर उचकाई, एक उल्लू जोर से चिंघाड़ता हुआ फड़फड़ाकर उड़ गया। शम्भू भैया तो आधे से ही नीचे फांद पड़े। रामू भी "मैया री" कहकर दीवाल से चिपक गया। सब की हंसी का ठिकाना न था।

लेने के देने पड़े

एक था नट। उसका नाम था चैतू। था तो सींकिया, पर हड्डियों में लोहा भरा था। वह बड़ा नटखट था। बातें बनाने में पक्का उस्ताद था। कलाबाजी के अलावा वह तरह-तरह की बोलियां बोलने, वेष बदलने में और भी माहिर था। महाराज चतुरसेन के मन्त्री रामरज को भी उसने एक बार उनके समधी की शक्ल बनाकर खूब छकाया था। मन्त्रीजी उससे बहुत चिढ़ते थे।

हुआ यह कि वह मन्त्रीजी के समधी का वेष धरकर उनकी बहू को विदा कराने पहुंचा। मन्त्रीजी ने लाव-लश्कर के साथ बहू को विदा कर दिया। लड़की जब विदा होकर अपनी मां के घर चल दी और घड़ी-दो-घड़ी का समय भी बीत गया, तब संयोग से मन्त्रीजी के लड़के का साला बहन की ससुराल आया। उसने कहा—पिताजी की तबियत बहुत खराब है। आप बहन को इसी समय विदा कर दीजिए। वह उससे मिलना चाहते हैं।

मन्त्रीजी के हाथ के तोते उड़ गए। घबराहट से उनके माथे पर पसीने की बूंद झलक आईं। दो मिनट तक आंखें फाड़े अपने लड़के के साले की तरफ देखते रहे। उसने फिर कहा —दादाजी! आप जल्दी करें। मेरा रथ तैयार है। मुझे सूरज डूबते-डूबते घर पहुंच जाना है।

—तुम क्या कह रहे हो?—घबराहट में मन्त्रीजी के मुंह से निकल पड़ा—घड़ी-दो-घड़ी पहले तुम्हारे पिता खुद आकर बहू को विदा करा ले गए हैं।

—मेरे पिता! आप क्या कह रहे हैं, दादाजी? वह तो बेचारे चल–फिर भी नहीं सकते। घोड़े से गिर पड़े है, आधे अंग में लकवा मार गया है।

मन्त्रीजी खामोश हो गए। उसे वहीं बिठाकर महाराज के पास पहुंचे। मन्त्रीजी ने महाराज को सारी घटना कह सुनाई। गुप्तचर छोड़े गए। सारे राज्य में तहलका मच गया।

चैतू मन्त्रीजी के समधी का वेष धरे, घोड़े पर बैठा हुआ चला जा रहा था। जब बहू की मां का घर एक कोस रह गया, उसने डेरा डलवा दिया। सिपाहियों से कहा—तुम लोग थोड़ा आराम कर लो, मैं जाकर अपने छोटे लड़के को भेजता हूं—और बिना उनकी ओर देखे ही घोड़ा बढ़ा दिया।

लड़की ने कई बार अपने पिता से बातचीत करने की कोशिश की, लेकिन वह डोले से इतनी दूर थे कि सम्भव न हो सका। उसे रह-रह कर खीझ आ रही थी। वह सोच रही

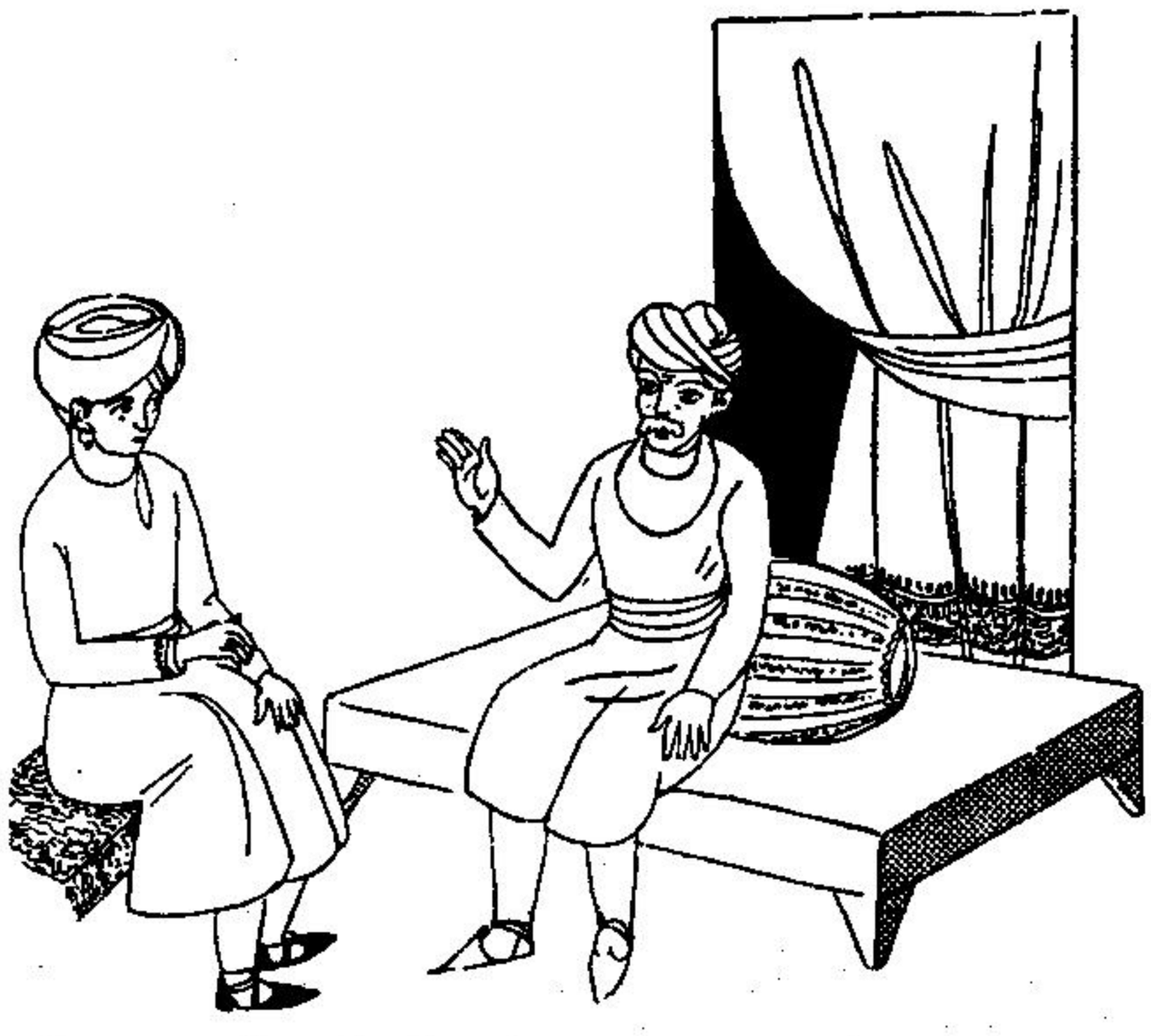

उसने कहा—पिताजी की तबीयत बहुत खराब है। आप बहन को इसी समय विदा कर दीजिए। वह उससे मिलना चाहते हैं ।

थी— ऐसा तो कभी नहीं हुआ कि पिताजी खुद विदा कराने आएं। और यदि आए भी तो घर के पास डेरा डलवाकर छोटे भाई को भेजने की बात कहकर चल क्यों दिए ?

इधर चैतू ने लड़की के बाप का वेष छोड़कर ससुर यानी मन्त्रीजी का वेष बदला और लड़की के पिता के यहां दाखिल हो गया। बड़ी आवभगत हुई। मन्त्रीजी की समधिन ने पुछवाया—बिटिया को नहीं लाए क्या ? उसका भाई राजशेखर विदा कराने गया था, वह कहां रह गया ?

चैतू ने इतने में ही सब अन्दाज लगा लिया। कहलवा दिया—बहू का खेमा नगर के बाहर लगा हुआ है, किसी को भेज दो लिवा लाए।

लोग चल दिए। सबके पीछे चैतूराम ने भी घोड़ा मोड़ दिया।

गुप्तचरों का शक चैतू पर ही गया। सिपाहियों ने उसका घर घेर लिया। सभी ताक में थे कि बच्चू आए और खबर ली जाए। चैतू भी कम नहीं था। घर न आकर सीधे मन्त्रीजी के पास पहुंचा। इसके पहले कि मन्त्रीजी कुछ पूछें, उसने सारी कहानी कह सुनाई, लेकिन उसने जान पहले ही बख्शवा ली थी। उसकी इस हरकत पर मन्त्रीजी मन-ही-मन कुढ़-भुन कर राख तो हो गए, पर जाहिर न होने दिया और निश्चय किया कि इसका मजा जरूर चखाकर रहेंगे।

—महाराज ! मैंने सुन रखा है कि यह नट प्राणायाम में निपुण है, लेकिन उसे दिखाने का इनाम बहुत तगड़ा मांगता है ।

दूसरे दिन दरबार में मन्त्रीजी ने महाराज से कहा—अन्नदाता, हमारे राज्य में एक नट है । उसका नाम है चैतू । वह बड़ा ही कलाकुशल है, लेकिन वह हुजूर को अपनी कोई कला नहीं दिखाना चाहता ।

—इतना घमंडी है ?—महाराज चतुरसेन ने कड़क कर कहा—उसे मेरे सामने इसी समय पेश किया जाए ।

राजा के मुंह से निकलना था कि सिपाहियों ने उसे लाकर हाजिर कर दिया ।

—महामन्त्री !—महाराज ने पुकारा ।

—आज्ञा, अन्नदाता !

—मैं इस गुस्ताख नट की वह कला देखना चाहता हूं जो इसने किसी को न दिखाई हो ।

—महाराज ! मैंने सुन रखा है कि यह नट प्राणायाम में निपुण है, लेकिन उसे दिखाने का इनाम बहुत तगड़ा मांगता है ।

—इससे कहो, मैं इसे मुंह मांगा इनाम दूंगा ।

चैतू महाराज के पैरों पर गिर पड़ा । गिड़गिड़ाने लगा । बोला—महाराज, प्राणायाम तो संत-महात्माओं का काम है । मैं तो उछलने-कूदने वाला साधारण नट हूं । गरीबपरवर, क्षमा करें । आपकी गरीब प्रजा हूं ।

—महामन्त्री ! यह क्या कह रहा है ?

—महाराज ! चैतू बड़ा चतुर है । इस तरह रो-गाकर अपना पिंड छुड़ाना चाहता है । आप इसकी बातों में न आइए ।

—अगर इसने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया, तो इसे फांसी की सजा दी जाएगी ।

अब क्या था ? चैतू कांप गया । उसे यह समझते देर न लगी कि मन्त्रीजी ने उससे बदला लेने के लिए नया तरीका निकाला है । जब जान पर आ बीती तब उसने दिमाग दौड़ाया ।

—हुजूर ! मन्त्रीजी का कहना सही है । मैं प्राणायाम का तरीका जानता हूं, लेकिन बिना साधन यह सम्भव नहीं है ।

—जो साधन आवश्यक हो, बोलो, जुटाया जाएगा ।

महाराज की तनी भौंहें ढीली पड़ गईं ।

—अन्नदाता ! मैं पातकी हूं, मेरे पास न तो पुरखों का आत्मबल ही है और न अपना ही, इसलिए प्राणायाम के लिए जरूरी है कि कोई पुण्यात्मा महापुरुष की पीठ चौकी बने । उसके आत्मबल के सहारे मैं बचा रहूंगा वर्ना मेरा तो · · · थोड़ी देर तक सभा में सन्नाटा छाया रहा । मन्त्रीजी मन-ही-मन सोचने लगे कि चैतू ने बड़ी तगड़ी चाल चली है । देखो ! ऊंट किस करवट बैठता है ।

महाराज ने मन्त्रीजी की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा । बेचारे का रंग काफूर हो गया । किसी तरह धड़कते हुए दिल को सम्हालकर बोले—महाराज ! इस समय दरबार में कोई व्यक्ति नहीं दिखाई देता, जो चैतू की पाल्थी के नीचे अपनी पीठ की चौकी बना सके । अगर हुजूर कुछ दिनों की मोहलत दें, तो सम्भव है ऐसा आदमी खोज निकाला जाए ।

महाराज ने मन्त्रीजी की प्रार्थना मंजूर कर ली । प्राणायाम का कार्यक्रम अगले वर्ष तक के लिए टल गया । चैतू महाराज को दुहाई देता हुआ लौट पड़ा । जाते समय उसने मन्त्रीजी की तरफ शरारत भरी नजर से मुड़कर देखा, मानो कह रहा हो कि अब मुझ से टक्कर मत लेना ।

जती जी चरड़ चप्प !

किसी गांव में एक बनिया रहता था। उसके बेटे का विवाह पास के एक शहर में हुआ था। जब उसका बेटा गौना कराने अपनी ससुराल जाने लगा तो बनिए ने अपनी कुल-परम्परा के अनुसार उसी की उम्र के नाई को उसके साथ भेजा।

मार्ग में चलते-चलते रात हो गई। रात काटने के लिए दोनों एक पेड़ के तले सो रहे। बनिए को कभी इतनी दूर चलने का साबका नही पड़ा था, सो उसे तो सोते ही नींद आ गई। मगर नाई जाग रहा था। नाई की अभी तक शादी नहीं हुई थी और न निकट भविष्य में होने की सम्भावना ही थी। सो उसने यह मौका हाथ से जाने न दिया। उसने किया क्या कि बेसुध सोए हुए बनिए के कपड़े उतार कर खुद पहन लिए और अपने कपड़े उसके समीप छोड़ कर उसकी ससुराल को रवाना हो गया।

इधर भोर हुई। चिड़ियों की चिकचिक सुन कर बनिया जागा। उसने अपने आपको नंगा और नाई को नदारद पाया। अब सिवाय सिर पीटने के उसके पास कोई चारा ही नहीं था। फिर बनिए की जात और यह सुनसान जंगल। वह धाड़ मार-मार कर रोने लगा। ऊपर से शिव-पार्वती विमान में बैठे पृथ्वी की सैर को आ रहे थे। उसका करुण विलाप पार्वती के कान में पड़ा। मां का हृदय होने से उन्हें बनिए पर दया आ गई। उन्होने शिवजी से विमान रोकने को कहा। मगर भोले शम्भु ने यह कर टाल दिया कि अभी तो पृथ्वी पर पैर ही रखा है, किस-किस का दु:ख दूर करते फिरेंगे ? लेकिन पार्वती नहीं मानी। वह शहद की मक्खी बनकर शिव की जटा में घुस गई। अब तो शिवजी का वही बनिए जैसा हाल हुआ। अन्त में बनिए का दु:ख दूर करने को राजी हो गए। पार्वती जी पुन: प्रकट हो गईं। दोनों ने साधु का भेष बना, बनिए से रोने का कारण पूछा। बनिए ने बीती सो कह सुनाई। शिवजी बोले—जा बच्चा, तेरी औरत तुझे ही मिलेगी। तू चरड़ चप्प कह कर किसी को भी (जब तक, औरत न मिले) जमीन से चिपका सकेगा और खरड़ खप्प कह कर छुड़ा सकेगा। इतना कह शिव-पार्वती चले गए। बनिए ने अनायास ही लाखों पाए। वहां से बेतहाशा भागा। नाई के कपड़े उसके शरीर पर खूब फब रहे थे।

इधर नाई की, बनिए की ससुराल में जमाई के भ्रम में खूब आवभगत हो रही थी। पानी मांगे तो शर्बत तैयार। सभी साले-सालियों का बहनोई जी, बहनोईजी, कहते गला भी न सूखे।

बनिए को कभी इतनी दूर चलने का साबका नहीं
पड़ा था, सो उसे तो लेटते ही नींद आ गई ।

इतने में ही लंबे-लंबे कदम धरता सही जमाई भी आ पहुंचा । पलंग पर बैठे-बैठे नाई ने साले-सालियों से कहा कि उसका नाई आ गया है, उसको जिमा दो । बनिए को रूखा-सूखा परोसा गया उसने छिपाकर वह भोजन कुत्तों को दे दिया ।

शाम हुई । बनिए को कहा गया कि शहर के पश्चिमी कोने पर अमुक जती जी रहते हैं, उन्हें तुरन्त बुला लाओ, यह ले जाओ ऊंट । बनिया क्या करता ? वह ऊंट लेकर चला गया । जतीजी के पास पहुंच कर, उन्हें साथ चलने की प्रार्थना की । जती जी तैयार हो गए । दोनों ऊंट पर बैठ कर रवाना हुए । मार्ग में जती जी को प्यास लगी । वे ऊंट से उतर कर कुएं पर पानी पीने गए--बनिए ने शिवजी के बताए हुए मन्त्र का प्रयोग किया--जतीजी चरड़ चप्प । और जती जी कुएं की जगत पर ही चिपक गए । उठें तो उठा नहीं जाए । घंटा- आध-घंटा तक वहीं चिपके रहे । आखिर बनिए को रहम आया और जतीजी खरड़ खप्प कह कर उन्हें भूमि बन्धन से मुक्त किया । पर जतीजी को तब भी अक्ल न आई ।

घर आते ही जती जी ने बनिए के ससुराल वालों को सारी बात बताई । सुन कर सभी जतीजी पर बड़े गुस्से हुए । जतीजी को कहा गया कि बेकार की बात नहीं किया करते । खैर, जतीजी वर-वधू को विदाई देने का मन्त्र पढ़ने लगे, और जब कि दोनों के दुपट्टे के छोर बांधे ही जाने वाले थे कि बनिए ने अपना रामबाण चलाया, सभी लोग चरड़ चप्प । और जो जहां था वहीं चिपक गया । वर-वधू के दुपट्टे के छोर बिना बंधे ही रह गए । तब जती जी चिल्लाए —अजी आपका सही जमाई तो यह चरड़ चप्प ही है, जमाई बने नाई से अन्त में पूछा गया तो वह सच बात से एकदम इन्कार कर गया । अन्त में बनिए ने सिवाय नाई के सभी को खरड़

खप्प कह कर मुक्त कर दिया। नाई का बुरा हाल था। बनिया उसी के मुंह से कहलवाना चाहता था कि वह नाई है और उसने छल किया है। अन्त में नाई ने अपनी भूल कबूल की। सभी ससुराल वाले अपने किए पर लज्जित थे। सभी ने मिल कर नाई की खूब खबर ली। पर बनिए ने यह कह कर कि यह तो इसका स्वभाव है, उसे राहत दिलाई।

ससुराल के सभी लोगों का चरड़ चप्प, खरड़ खप्प की महिमा पर हसते-हसते बुरा हाल था। लेकिन बनिए को उसकी स्त्री के मिलते ही वह मन्त्र बेकार हो गया।

कल्लू चाचा जागे

एक दिन चाची को उनकी एक सहेली का खत आया कि वह बीमार है। जल्दी चली आओ। खत पढ़ते ही चाची की आंखों में आंसू छलकने लगे। कल्लू चाचा ने देखा तो आगे बढ़े, चाची के आंसू पोंछे और हौसला दिया—बेगम, घबड़ाने की क्या बात है? तुम्हारी सहेली जल्द ठीक हो जाएगी।

चाची ने रोनी सूरत बनाए हुए कहा—इसकी तो इतनी फिकर नहीं, वह तो खैर ठीक हो ही जाएगी। मुझे तो तुम्हारा खयाल आ रहा है। मैं चली गई, तो तुम्हें सुबह-सवेर कौन जगाएगा और अगर किसी ने न जगाया, तो सारा दिन खर्राटे भरते रहोगे। न काम न काज मेरे आने तक सब घर-बार उजाड़ बैठोगे और फिर तुम्हारा खाना पीना····?

कल्लू चाचा इतना सोते थे कि बस पूछो ही मत। शाम का खाना क्या खाया माना अफीम खा ली। रसोई से सीधे बिस्तर की ओर लपकते और आंख मूंदते ही नींद आ घेरती। सुबह चाची इस जोर से दरवाजा खटखटाती मानो उसे तोड़ना हो। फिर कहीं जाकर चाचा की आंख खुलती। चाची ने इस रोज-रोज की परेशानी से बचने के खातिर एक अलार्म की घड़ी भी मंगवाई थी, लेकिन व्यर्थ! उन्हें जगाने का काम चाची को खुद ही करना पड़ता था।

चाचा बोले—चिंता न करो। मैंने जागने का तरीका सोच लिया है। और खाने-पीने का क्या है? सुबह उठते ही चाय, केक, पेस्टरी, बादाम वगैरह से पेट-पूजा कर लूंगा। इससे निबटे तो खीर, हलवा और इसी किस्म की एक आध मीठी चीज। दोपहर को केला, सेब बाद में दूध या शर्बत। शाम को ....।

चाची ने बात काटते हुए कहा—बस-बस, फिर दूसरे दिन हकीम के पास, इसीलिए तो मैं जाना नहीं चाहती। लो खाने-पीने की फेहरिस्त बनाए देती हूं, इसी पर चलना।

फिर चाची ने सामान बांधना शुरू किया और चाचा ने शोर मचाना शुरू कर दिया। साथ-साथ चाची नसीहतें कर रही थीं—देखो, सुबह-सवेर साढ़े-छः बजे उठ बैठना। जगाने के लिए किसी को कह आओ, सुबह खाली चाय, दोपहर को एक बजे खाना। शाम को दूध और हां, केक मत खाना, जरा भी नहीं खाना, आऊंगी तो हलवा बनाकर खिलाऊंगी।

कुछ देर यह धमा-चौकड़ी रही। घर की हर चीज उथल-पुथल हो रही थी। कहीं बर्तन गिर रहे थे, कहीं ट्रंकों के खुलने और बन्द होने की आवाज आ रही थी। आखिर खुदा-खुदा करके चाचा-चाची स्टेशन की तरफ चले।

गाड़ी चली तो चाची ने एक बार फिर ताकीद की—देखना, केक और मिठाई बिल्कुल न खाना, सुबह-सवेर जागना।

चाचा वापस चले तो रास्ते में सोचा—चुन्नू मियां के यहां होता जाऊं। वह सुबह साढ़े छः बजे बाजार से गुजरता है, मुझे भी जगा जाया करेगा।

चुन्नू मियां के यहां पहुंचे तो बोले—मियां, एक कष्ट दे रहा हूं। सुबह साढ़े छः बजे मुझे जगा दिया करना। बाहर से आवाज देना। जवाब न दूं तो समझना अभी सोता हूं। फिर जोर से आवाज देना। फिर भी जवाब न दूं तो एक कंकर कमरे में फेंकना।

चुन्नू ने कहा—अच्छा कल्लू चाचा! पर इस काम का इनाम क्या मिलेगा?

कल्लू चाचा असमंजस में पड़ गए। फिर एकदम बोले—चुन्नू मियां, देखो जब जागूंगा तो इसके बदले एक केक बाहर फेंक दूंगा। क्यों काम करोगे न अब?

चुन्नू मियां मान गए।

सुबह-सवेर उन्होंने कल्लू चाचा को आवाज दी। कोई जवाब न आया, तो जोर से आवाज दी, फिर भी आवाज न आई, तो चिल्लाए। फिर चुन्नू मियां ने एक पत्थर उठाया और रोशनदान में दे मारा। रोशनदान का शीशा चकनाचूर हो गया, पर अन्दर से कोई आवाज न आई। इस पर चुन्नू मियां जलभुन कर चलते बने।

कल्लू चाचा शीशा टूटने की आवाज सुन कर जागे। पहले समझे, किसी घंटी की आवाज है। लेकिन जब कमरे में शीशे के टुकड़े देखे तो हैरान रह गए कि यह क्या बात हुई। फिर याद आया, चुन्नू मियां ने जगाने के लिए कंकर फेंका होगा। वायदे के मुताबिक केक देने का खयाल आया, लेकिन उसी वक्त गुस्से में बोले—कैसा केक? मैंने कंकर मारने को कहा था कि शीशा तोड़ने को?

उस दिन चाचा सोचते रहे कि कौन-सा उपाय हो कि शीशा तोड़े बिना ही जगा दिया करें? बहुत सोचने के बाद उन्हें एक उपाय सूझ ही गया।

बाजार से सूत की पक्की रस्सी खरीदी और सीधे चुन्नू मियां के घर गए। कहा—देखो मियां, मैंने शीशा तोड़ने को नहीं कहा था। शीशा लगवाने में दो रुपये खुल गए। मैं रस्सी लाया हूं, उसका एक सिरा अपने पैर से बांध दूंगा, दूसरा खिड़की के रास्ते बाजार में लटका दूंगा। सुबह तुम उसे खींचना और मैं जाग जाऊंगा।

चुन्नू मियां मान गए।

फिर चाची ने सामान बांधना शुरू किया और चाचा ने शोर मचाना शुरू कर दिया। साथ-साथ चाची नसीहतें कर रही थीं

कल्लू चाचा ने ऐसा ही किया। रस्सी का एक सिरा अपने पांव में बांध दिया, दूसरा बाजार में लटका दिया। चूंकि हवा चल रही थी और सूत की रस्सी हलकी थी, वह उड़ने लगी। इसका बन्दोबस्त चाचा ने यूं किया कि उसके सिरे पर एक गाजर बांध दी और सो गए।

सुबह हुई तो रस्सी को एक झटका लगा। इस जोर का झटका था कि कल्लू चाचा हड़बड़ा कर उठ खड़े हुए। फिर झटका लगा, तो चाचा चिल्ला कर बोले---चुन्नू मियां जाग तो रहा हूं। लेकिन फिर झटका लगा, इतने जोर का कि कल्लू चाचा की एक टांग ऊपर उठ गई और चाचा एक टांग पर खड़े लड़खड़ाने लगे और साथ-साथ चिल्लाने लगे---ओ चुन्नू के बच्चे! अब रस्सी क्यों खींचता है? जाग तो गया हूं।

लेकिन जवाब कोई न आया। यह तो खैर हुई कि एक और झटके से रस्सी टूट गई। चाचा को जरा होश आया तो खिड़की से बाहर झांका। बाहर कोई न था। ध्यान से देखा तो रस्सी का बाहर वाला हिस्सा और गाजर भी गायब थे। चाचा ने अन्दर घड़ी पर नजर डाली, पूरे साढ़े छः बजे थे।

इतने में चुन्नू मियां सीटियां बजाता आया। चुन्नू मियां ने कल्लू चाचा को देखा तो हैरान होकर बोला---कैसे जागे चाचा?

---कोई मुझ से चालाकी कर रहा है! चाचा ने कहा---क्या तुमने किसी को रस्सी खींचते देखा है?

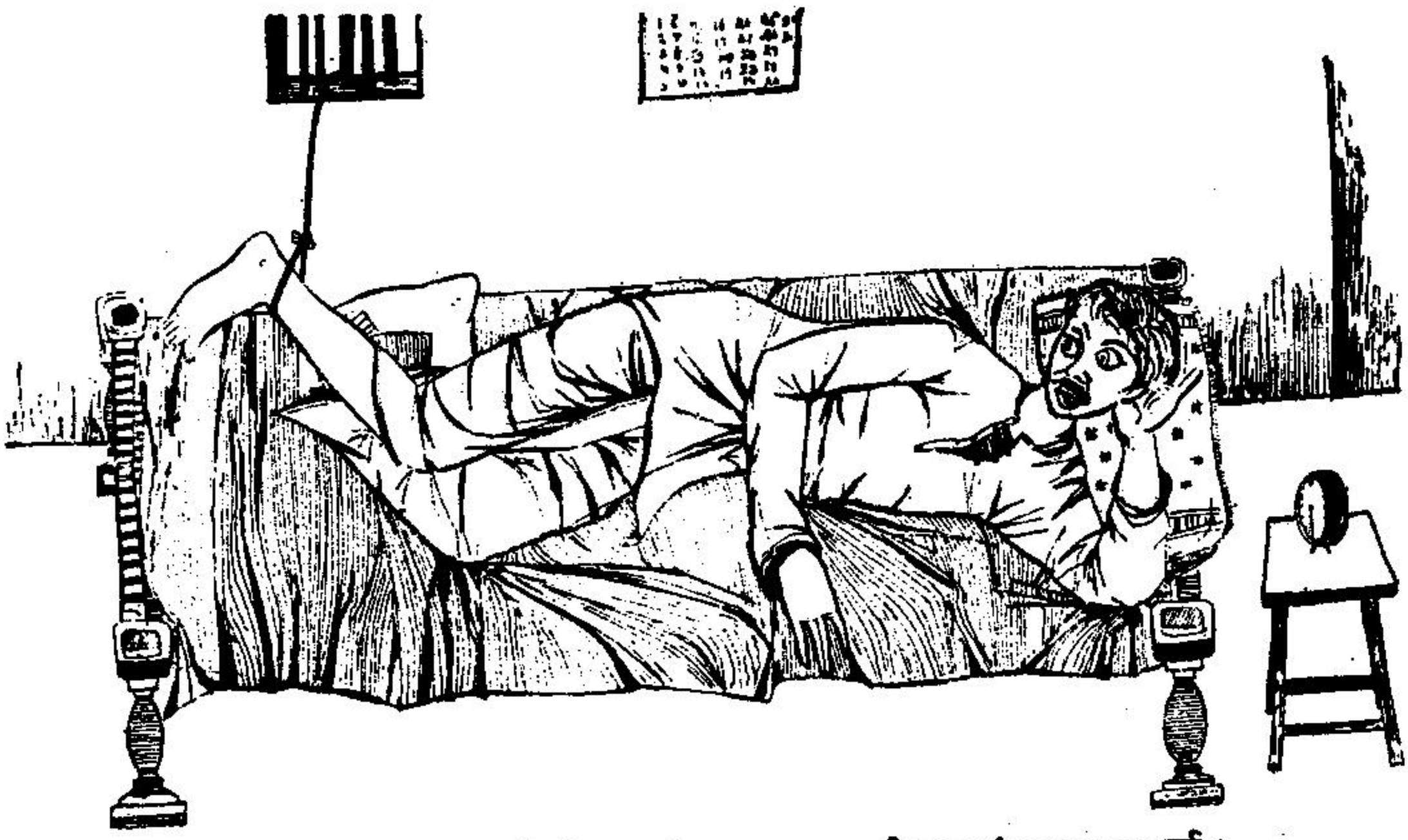

लेकिन फिर झटका लगा, इतने जोर का कि कल्लू चाचा की एक टांग ऊपर उठ गई ।

—नहीं तो । चुन्नू मियां ने कहा—और चाचा मेरा हक ?

—ले जाओ ।—चाचा ने कहा—लेकिन मैं इस शैतान को भी पकड़ना चाहता हूँ । चाचा सारा दिन सोचते रहे कि उस शैतान को कैसे पकड़ा जाए । आखिर उन्हें एक तरकीब सूझी । उस रात उन्होंने रस्सी का एक सिरा बाहर लटका दिया और दूसरा अपने पांव से नहीं बांधा बल्कि अपनी घड़ी से बांधा और घड़ी को अपने सिरहाने रख दिया ।

सुबह हुई तो रस्सी को झटका लगा, घड़ी हिली । एक और झटका लगा तो जोर से जमीन पर जा गिरी । अलार्म भी बजने लगा । कमरे में पड़ी चीजें, उथल-पुथल होने लगीं । और चाचा जाग पड़े ।

उछल कर खिड़की के करीब आए, नीचे झुक कर देखा, तो पता चला कि एक गधे ने रस्सी को मुंह में डाल रखा है । रस्सी के सिरे पर बंधी हुई गाजर तो वह खा चुका है, अब रस्सी को चबा रहा है और खींच रहा है ।

—पकड़ लिया पाजी को—चाचा चिल्लाए ।

इतने में चुन्नू मियां भी आ गए । सारा माजरा सुना तो चाचा से कहा—हमारा केक ?

—जरूर, जरूर — चाचा ने कहा ।

इस रात चाचा ने सोचा, अब गाजर की बजाय कुछ और बांधूं । अगर गाजर ही बांधता रहा तो गधा उसे कभी न छोड़ेगा । वह दिन और रात गाजर के पीछे पड़ा रहेगा । बेगम को

पता चला तो झिड़केगी। उन्होंने रात को रस्सी का एक सिरा घड़ी से बांधा और दूसरे सिरे पर मैले-कुचैले कपड़े का गेंद बांध दिया ।

सुबह फिर वही हुआ । पहले झटका लगा, फिर घड़ी नीचे गिरी, फिर बजा अलार्म, फिर चीजें उथल-पुथल हो गईं, फिर चाचा जागे ! बाहर झांक कर देखा तो गधा मैले-कुचैले कपड़ों को देख कर निराश थूथनी लटकाए जा रहा था ।

कल्लू चाचा से न रहा गया कि गधा बिचारा इस तरह निराश वापस लौट जाए । और फिर वह उन्हें जगाता भी था । वह भागते-भागते रसोई में गए । एक गाजर ली, नीचे आए और गधे के मुंह में डाल दी । गधे ने खुशी से दुम हिला दी । इतने में चुन्नू मियां भी आ धमके और बोले—हमारा केक ?

—जरूर ।—कल्लू चाचा ने कहा ।

बस हफ्ता भर यही होता रहा । गधा रस्सी को झटका देता, घड़ी अलार्म बजाती, नीचे गिरती, चीजें टूटती-फूटती और चाचा जागते । एक गाजर रस्सी के सिरे पर बांधी जाती जो गधा खाता । एक केक चुन्नू मियां को दिया जाता, जो यह देखने आते कि चाचा जागते तो हैं ।

इसी तरह घर में पड़े केक भी खत्म और गाजर भी खत्म हो गईं । उन्होंने खुद नहीं खाईं । खाते भी कैसे ?—शायद कल्लू चाचा ने यह भी सोचा हो, बेगम पूछेंगी तो कह देंगे—तुमने कहा था कि न खाना, मैंने खाए तो नहीं । उनका उपयोग भर किया ।

कल्लू चाचा ने सिनेमा देखा

कल्लू चाचा अपने गांव में पंच रहे, जात-बिरादरी में उन्हें अपने बाप-दादों से भी ज्यादा मान्यता प्राप्त हुई, मगर शहर में पहुंच कर तो मानो वह खोए हुए-से हो गए । बेचारे चाचा ने कभी शहर का रुख किया भी तो नहीं था और करते भी क्यों? जबकि उन्हें गांव के झगड़े निपटाने व घर में बहू-बेटों को लम्बी-लम्बी नसीहतें करने से ही फुरसत न मिलती थी । वह तो भला हो किशन का , जो उन्हें अपने साथ शहर ले गया ।

रास्ते में कल्लू चाचा बड़ी उत्सुकता से हर चीज को देखते जा रहे थ—उनके लिए तो प्रत्येक चीज नई थी । एक बार तो वह डर के मारे किशन से चिपक भी गए—अरे किशन ! मकान चलता हुआ आ रहा है ।

किशन ने ध्यान से देखा तो फौरन समझ गया! बोला—चाचा । यह तो दुमंजिली ट्राम गाड़ी है, यात्रा के वास्ते ।

जब ट्राम गाड़ी पास से गुजर गई तब भी कल्लू चाचा फटी-फटी नजरों से उसे देखते रहे । उन्हें यकीन नहीं आ रहा था कि इस तरह मकान भी चल सकते हैं ।

खैर, किसी तरह से वे होस्टल पहुंचे । किशन ने अपने साथियों से चाचा का परिचय कराया । सब उनसे मिलकर बड़े खुश हुए । चाचा को घेर कर बैठ गए । बातों-ही-बातों में रमेश ने पूछ लिया—चाचा ! आपने कभी सिनेमा देखा है ?

—सिनेमा क्या होता है ?—चाचा को बात समझ में नहीं आई । उन दिमों सिनेमा नये-नये चले थे ।

—सिनेमा ! सिनेमा नहीं समझते आप ? —मोहन चहका । सिनेमा—सिनेमा, मेरा मतलब बाइस्कोप ।

—बाइस्कोप ! अरे बेटा कहां ?—चाचा ने कुछ समझ कर कहा—पहले-पहल गांवों में नौटंकियां आया करती थीं । अब वे भी नहीं आतीं, लेकिन यह सिनेमा क्या होता है ? किशन गांव में आता है तो सिनेमा की बड़ी तारीफ करता है । हमें भी दिखा दो !

खैर, चाचा को लेकर किशन और उसके साथी सिनेमा देखने चल पड़ ।

अब कुछ न पूछो चाचा की बात । सिनेमा हाल में पहुंचे तो उन्हें स्वर्ग समान लगा ।

थोड़ी देर बाद हाल में अंधेरा हो गया। चाचा एकदम बिदक पड़े—अरे! यह क्या हो गया? अब सिनेमा कैसे देखेंगे?

किशन ने बताया—चाचा, अंधेरे में ही फिल्म दिखाई जाती है।

कल्लू चाचा को यकीन नहीं आया जब तक कि उन्होंने आंखों से पर्दे पर फिल्म नहीं देख ली। समाचार चित्र दिखाए जा रहे थे। चाचा को यह खेल बड़ा ही अजीब लगा। बात-बात में—अरे बाप रे, अरे बाप रे! राम रे गजब हो गया—कहकर दांतों तले अंगुली दबा लेते थे। पीछे बैठे दर्शक ने शिकायत की—अरे बाबा, चुपके बैठे रहो। कुछ कुर्सी में धंसो, तुम्हारे पग्गड़ के मारे हमें दीख नहीं रहा।

चाचा ने आज्ञा का पालन किया। नीचे झुक गए। कुछ देर खामोश होकर बैठे रहे।

पिक्चर शुरू होते ही दृश्य पहला था जिसमें ट्रेन को आते हुए दिखाया गया था। उसे देख कर चाचा फौरन उठ खड़े हुए। जब ट्रेन नजदीक आती हुई दिखाई जाने लगी, तो चाचा बेतहाशा उठ कर भागे। मगर अंधेरे में ठोकर खाकर वहीं गिर गए। पास बैठे शख्स ने उन्हें उठाया तो वह हांफते हुए बोले—अरे, रेल आ रही थी, कहां गई? हैरत के मारे बड़ी देर तक वहीं खड़े रहे। पीछे बैठे दर्शक एकदम चिल्ला उठे—कौन खड़ा है सामने? बैठ जाओ। सारा मजा किर-किरा कर दिया।

किशन ने चाचा को खींच कर सीट पर ला बैठाया। थोड़ी देर शान्ति रही। फिर एक दृश्य में जो बरसात आई तो चाचा बोले—अरे किशन, पहले क्यों नहीं बताया कि यहां बरसात भी आती है। अब भीग जाएंगे। छाता भी नहीं लाए।

किशन ने समझाया—चाचा, यह बरसात तो नकली है।

लेकिन चाचा न माने। एक दृश्य में नायक तथा उसके प्रतिरोधी को लड़ते देखकर फौरन कुर्सी में चीखते हुए उठे, अरे बचाओ! यह बदमाश इस जवान को मार देगा। बचाओ रे! पलक झपकते ही वह स्टेज पर जा पहुंचे। और पर्दे पर हाथ मारने लगे। उनको और भी ज्यादा हैरत हुई कि वहां तो केवल कपड़े का पर्दा था। यह गड़बड़ देखकर बहुत सारे लोग खड़े हो गए। चारों साथी भी चाचा के पीछे दौड़े—उनको पकड़ने के लिए। बड़ा हंगामा हो गया। लाइट जलाई गई। बहुत भग-दड़ मच गई। लोग चाचा पर टूट पड़े। मगर रमेश आदि ने हाथ जोड़ कर लोगों को समझाया।

इतने में मैनेजर भी आ पहुंचा। गरज कर बोला—कौन बेवकूफ हमारे सिनेमा का डिसिप्लिन बिगाड़ता है? न जाने कैसे-कैसे लोग यहां आ जाते हैं। हम इनकी पुलिस में शिकायत करेंगे। जब उसने रमेश व किशन वगैरह को चाचा के साथ देखा तो और भी खफा होकर बोला—कौन है यह जंगली तुम्हारे साथ?

बचाओ ! बचाओ ! यह बदमाश इस जवान को मार देगा । बचाओ रे !
पलक झपकते ही वह स्टेज पर जा पहुंचे और पर्दे पर हाथ मारने लगे ।

रमेश व किशन ने मैनेजर को बताया कि कल्लू चाचा हैं, इन्होंने इससे पहले कभी सिनेमा नहीं देखा ।

—पहले इनको सिनेमा देखने की ट्रेनिंग देना, फिर यहां लाना—मैनेजर ने कहा, चाचा भीगी बिल्ली बने खड़े थे । कुछ सज्जन पुरुषों ने बीच-बचाव किया, तब मैनेजर ठंडा पडा । चाचा की तरफ से लड़कों ने माफी मांगी और यही उचित समझा कि पिक्चर देखे बगैर यहां से चले जाना ही बेहतर है, आगे न जाने क्या कुछ हो जाए ?

दूसरे ही दिन चाचा वापस गांव पहुंच गए और हरेक से यही कहने लगे—मेरी मानो तो कभी शहर न जाना । वहां की दुनिया ही नकली है; उलटी है—भलाई के बदले पिटाई मिलती है ।

गांव वालों को ताज्जुब हो रहा था कि चाचा इतने बदल क्यों गए ? पहले तो शहर जाने के लिए बड़े उत्सुक थे, लेकिन अब वहां से लौटते ही शहर की निन्दा क्यों करने लगे ?

MGIPF 250DPD/80

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार